ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



15 जून 2002

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 22 अंक 8

प्रेमप्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
(पावन अवतरण दिवस सोमवार, १५ जुलाई २००२)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सत्गुरू स्वामी टेऊंरामजी महाराज का

116 वाँ जन्मोत्सव

एवं स्वामी बसंतरामजी महाराज का भव्य जन्म शताब्दी समारोह

11 जुलाई, गुरूवार से 15 जुलाई 2002, सोमवार तक

*धर्मप्रिय एवं आत्मीय प्रेमियों को सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य अनन्त श्री विभूषित वीतराग श्री मान् १००८ सत्गुरू टेऊंराम जी महाराज का ११६वां जन्मोत्सव एवं वेदान्त केसरी ब्रह्मनिष्ठ श्रीमान् १०८ स्वामी बसंतराम जी महाराज का भव्य जन्म शताब्दी समारोह प्रेम प्रकाश आश्रम देहली गेट, अजमेर में स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री दिनांक ११ जुलाई गुरूवार से १५ जुलाई २००२ सोमवार तक बड़े हर्षोलास से मना रहे हैं। इस शुभावसर पर प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्त व अन्य विद्वान, संत महात्मा गुणी कलाकार पधारेंगे। उत्सव के उपलक्ष्य में **बहुकुण्डात्मक विश्व कल्याणार्थ विष्णु महायज्ञ** का आयोजन किया जायेगा, जिसमें **१०१ जोड़े** सम्मिलित होंगे, **१३ जुलाई शनिवार को सामूहिक यज्ञोपवीत**, का कार्यक्रम एवं अन्य सामाजिक व सांस्कृतिक बहुत से सेवा कार्यक्रमों का आयोजन रखा गया है। आप सभी महानुभाव अपने इष्ट मित्रों व परिवार सहित आकर सन्तों के दर्शन कर सत्संग का लाभ प्राप्त करें एवं मानव जीवन को सफल बनावें।*

कार्यक्रम

१. प्रतिदिन प्रातः ६ से ७ बजे तक सामूहिक "ॐ नामः शिवाय" का सामूहिक संकीर्तन।
२. प्रतिदिन प्रातः ७ से ११ बजे तक सत्संग एवं शाम ४ से रात्रि ६ बजे तक सन्तों का सत्संग व कीर्तन होगा।
३. दिनांक १० जुलाई बुधवार को प्रातः ६ बजे गरीबों को अन्न व वस्त्र सेवा का कार्यक्रम रखा गया है।
४. दिनांक ११ जुलाई गुरूवार को प्रातः ६ बजे गणपति पूजन एवं स्थापना करके श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ शुभारम्भ करके हवन शुरु किया जायेगा जो दोपहर १ बजे तक चलेगा।
५. दिनांक १२ जुलाई शुक्रवार प्रातः ७ से १० बजे तक हवन पूर्णाहुति, शाम को ४ बजे पूज्य लाल साहिब की ज्योति प्रज्जवलित होगी। ५ बजे आश्रम से भव्य शोभा यात्रा निकलेगी जो दरगाह बाजार, नला बाजार, मदार गेट, गांधी बाजार, नया बाजार, आगरा गेट, गांधी बाजार, नया बाजार, आगरा गेट, गंज होते हुए आश्रम पर समाप्त होगी। तत्पश्चात् पल्लव पाकर ज्ञान यज्ञ का शुभारंभ होगा।
६. दिनांक १३ जुलाई शनिवार प्रातः ८ से ११ बजे १०१ बच्चों के सामूहिक यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार होगा सब प्रेमी समय पर पहुंचने का कष्ट करें। जो प्रेमी सम्मिलित होना चाहें वे पहले से नाम लिखा दें। बाहर के प्रेमी फार्म मंगवाकर अजमेर भेजें।
७. दिनांक १५ जुलाई सोमवार प्रातः ७ से ६ बजे तक हवन तत्पश्चात् ध्वजावंदन व सत्संग, ११ बजे प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब का भोग व १२ बजे आम भंडारा। शाम ४ बजे सत्संग ६ बजे गुरू महाराज की पूजा, ७ बजे १०० दीपों का प्रज्जवलन, रात ६ बजे पल्लव के साथ उत्सव की समाप्ति।

आयोजन स्थल :

स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री, प्रेम प्रकाश आश्रम (पोस्ट बाक्स नं. 29.)
देहली गेट, अजमेर (राज.) फोन : (0145) 423993, 425416

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

धारावाहिक–33

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

साहब तेरे दर पर मेरी, हरदम तोबहजारी है।
साध संगत में सुनिया जब मैं, प्रभु न्यायकारी है।
तब से मेरे हृदय भीतर, भय उपजी अति भारी है।।1।।
काम क्रोध मद मोह ममत में, मैंने उम्र गुजारी है।
ना जानूं क्या होगा मुझ पर, यह चिंता हरवारी है।।2।।
दावन पालक पाप हरन तुम, महिमा वेद उच्चारी है,
ऐसा सुनकर शीघ्र मैंने, तेरी ओट निहारी है।।3।।
पहले के अद्य क्षमा कीजे, तुम हरि परम उदारी है,
कहे टेऊँ अब सुमति दीजे, ये ही विनय हमारी है।।4।।

व्याख्या–इस भजन में गुरु महाराज प्रार्थना कर रहे हैं, क्योंकि प्रार्थना ही आधार है, प्रार्थना ही भक्त का बल है। जैसे बालक का बल रोना और रूठना होता है, ऐसे ही परमात्मा को रिझाने के लिये भक्त प्रार्थना करता है और प्रार्थना द्वारा अपने मन की बात कहता है। प्रार्थना एक ऐसा पैगाम है, जो प्रभु तक जरूर पहुंचता है। प्रार्थना हृदय का सबसे सुंदर भाव है और भक्ति का अटूट हिस्सा। जो प्रार्थना में उतरते हैं, जो इस झील में डुबकी लगाते हैं, वो परमात्मा रूपी मोती को पाने का रास्ता खोज लेते हैं। प्रार्थना जितनी गहरी हो, प्रभु के द्वार उतनी ही जल्दी खुलते हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि प्रार्थना किसके लिए हो।

जो सांसारिक चीजों की मांग की प्रार्थना होती है, किसी कामनापूर्ति की प्रार्थना होती है, वो प्रार्थना नहीं होती। क्योंकि प्रार्थना में मांग नहीं होती, वो प्रार्थना ही अर्थहीन है जो प्रार्थना कुछ मांगे वो तो मांग हुई, प्रार्थना कहाँ हुई ? प्रार्थना तो मन का अंतरहित भाव है। जो केवल परमात्मा या सत्गुरु के लिये ही उठना चाहिए। अपने प्यारे के पास बैठते ही अपने प्यारे को निहारते ही, हाथ जुड़ने लगे, आँखे बंद होने लगें, अश्रु झिलमिलाने लगे, सर झुकने लगे, वाणी अवरुद्ध हो जाए, स्वांसे सुरीली हो जाएं, किसी मधुर साज की तरह बजने लगे, रोम–रोम आनंदित होकर खड़ा हो जाए, अंतर्भाव गहराने लगे, हृदय में मिठास घुल जाए, तब समझना चाहिए कि आज प्रार्थना उठी।

जैसे किसी प्रेयसी को बरसों के बाद दूर से अपने प्रियतम की झलक दिख जाए, तो जो आनंद उसे होगा, जो मस्ती उसे होगी, जो शांति उसे होगी। प्रार्थना से उठने के बाद कुछ ऐसे ही घुंघरू बजें, तब समझना चाहिए कि आज प्रार्थना हुई। प्रार्थना तो भक्त और भगवान के बीच की गुफ्तगू है, प्रार्थना तो अपने प्रियतम को पाने की जुस्तजू है। प्रार्थना तो भगवान से मिलने की भक्त की आरजू है और यही गुफ्तगू गुरुमहाराज भगवान से कर रहे हैं। कि हे नाथ। हे साहब। जब से मैंने सुना है, संतों से, साधुओं से कि तू न्यायकारी है, मेरे अंदर भय हो गया है। जाने अनजाने में किये गये पापों की माफी दे। काम में, क्रोध में, मद में, लोभ में, ममत में, मेरी सारी उम्र गुजर गयी है। जब तेरे न्याय को देखता हूँ तो मुझे चिन्ता होने लगती है। पर जब तेरी दया को देखता हूँ जिसकी महिमा वेद करते हैं, तो मेरे हृदय को धीरज आता है। तू दीनबन्धू है, तू पतितपावन है, तू सारे पाप हर लेता है, ऐसा सुनकर मैंने तेरी शरण ली है, तेरा दामन पकड़ा है, तेरी ओट ली है।

भय बिन होय न प्रीति।

भक्त को सदैव एक भय लगा रहता है। जिसकी प्यारे से प्रीति हो जाती है। उसका हृदय फूलों की पंखुड़ियों जैसा नाजुक और मक्खन जैसा मुलायम हो जाता है। जानबूझ कर तो क्या ? भूले से भी वो किसी का दिल दुखाना नहीं चाहता। और अगर ये भूल भूले से हो जाये तो उसका हृदय पश्चाताप की आग में जलने लगता है। उसकी आत्मा उसे धिक्कारने लगती है, वो अपने प्रियतम से आँखें मिलाने में झिझकने लगता है, और यही झिझक उससे गलतियाँ नहीं होने देती, पाप नहीं होने देती। उसकी सावधानी बढ़ने लगती है, होश जगने लगता है।

एक बार नन्दबाबा जी के यहाँ चोर घुस आए जब चोर चोरी करके भाग रहा था तो पकड़ा गया ब्राह्मण का भेष धारण किये था। ताकि कोई पहचान न सके। जब नन्दबाबा को पता चला, तो देखा सबने पकड़ रखा है, और सभी उस पर नाराज होकर खरी

खोटी सुना रहे है। लोगों के चंगुल से उसे छुड़ाया। और एकान्त में ले गये उसे प्यार से समझाया और कई गहने और जेवर देते हुये कहा। मित्र में जानता हूँ इतना ग्लानिपूर्ण कृत्य तुमने किसी मजबूरी के कारण किया होगा। पर दुख इस बात का है कि तुमने छल करने के लिये ब्राह्मण का भेष धारण किया। ब्राह्मण का भेष धारण कर कुछ मांगते तो ऐसे ही आपकी झोली भर दी जाती। ठीक है। कोई बात नहीं। अपने एक दरबान सिपाही को बुलाया। और आज्ञा दी। इसे गांव के बाहर तक छोड़कर आओ। पर याद रहे राह में कहीं भी इस बारे में किसी से चर्चा न करना न इनसे आँखें मिलाना। हम नहीं चाहते आपकी आंखें मिलाने से इन्हें शर्म आए और ग्लानि से आंखें झुकानी पड़ें इसे हमारी आज्ञा समझो। इतना कोमल हृदय होता है, जिनका परमात्मा से प्यार होता है। प्रेम ही तो है जो जीना सिखा देता है। प्रेम ही तो है जो गुरु के वचनों को पीना सिखा देता है। ये प्रेम ही तो है। जो प्रियतम को सीने सीना सिखा देता है। प्रेम ही तो है, जो परमात्मा मिला देता है। शायद यह कहना भी कम होगा कि ही नहीं देता अपितु परमात्मा में समा देता है। शायद यह भी पूर्ण नहीं कहा। परमात्मा ही बना है।

प्रेम वीराने को गुलिस्ता बना देता है।
प्रेम शैतान को इन्सान बना देता है।
औरों की नहीं हम अपनी बात करते हैं।
प्रेम इन्सान को भगवान बना देता है।।

इस यात्रा की पूर्णता तभी संभव है। जब ह दिल से हर समय अपने पापों का पश्चाताप और प्यास के लिये निरंतर हर समय हर घड़ी हर प्रार्थना करते रहें। धीरज का सहारा ले कर आं का सहारा लेकर प्रार्थना का सम्बल लेकर उसी आधार लेकर प्रार्थना ही करते रहे प्रार्थना ही सार प्रार्थना ही आधार है। अवश्य पूर्णता मिलती है

पावन धरा गुरुधाम अमरापुर स्थान जयपुर में
आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज क
116 वाँ जन्मोत्सव

११ जुलाई गुरुवार से १५ जुलाई सोमवार २००२ तक

कार्यक्रम

11 जुलाई 2002 गुरुवार प्रातः 7 से 9:30 बजे प्रार्थना सत्संग, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, श्रीमदभगवत गीता के पाठ आरम्भ, आरती।

12 से 14 जुलाई 2002 प्रातः 7 से 9:30 बजे प्रार्थना–सत्संग, प्रवचन कैसेट, गुरु प्रार्थनाष्टक पाठ, आरती सांय 5 से 7 बजे तक भक्ति संध्या, सत्संग, सतनाम साक्षी महामंत्र का जाप, आरती–प्रसाद वितरण।

15 जुलाई 2002 सोमवार प्रातः 7 से 9:30 बजे प्रार्थना, प्रवचन, पाठों के भोगसाहब, चालीसा व निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण, विशाल आमभण्डारा, सांय 5 से 7:30 बजे भक्ति संध्या, सत्संग,सत्नाम साक्षी महामंत्र जाप, सद्गुरु टेऊँराम चालीसा पाठ (चौथ महोत्सव), आरती

विशेष

1. प्रतिदिन प्रातः सांय समाधि स्थल पुष्पों की झांकी।
2. 'पूज्य महाराज श्री' विशाल तैलीय चित्र की झांकी।
3. मुख्य द्वार पर आकर्षक रंगोली।
4. नन्हें मुन्ने बच्चों द्वारा चालीसा का पाठ।
5. निबन्ध व चालीसा प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण।
6. 15 जुलाई को 116 दीप प्रज्जवलन, 116 किलो विशाल महाप्रसादी का भोग।

इसी प्रकार देश विदेश के समस्त आश्रमों, मण्डलियों में आचार्य श्री का जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया जावेग

कथा शिखर ध्वज चूड़ाला

धारावाहिक-22

श्रेय पथ/मग की ओर

(रचयिता-आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज)

जब व्यक्ति के मन में कल्याण की चाहना उत्पन्न होती है, तभी वह सही मायने में संतों की शरण में जाता है और अपने कल्याण की बात पूछता है। राजा शिखरध्वज के मन में भी कल्याण की भावना उत्पन्न हुई है और इसी कल्याण की भावना के वशीभूत हो–

राजा रानी मोक्ष हित आए संत द्वार'

वे संतों के पास आ गये और पूछने लगे–

करूणा कर बतलाईए शरण पड़ा हू तोहे।

आया हूँ किस निमित्त जग क्या करना है मोहे।।

मुझे क्या करना चाहिए ? और

''मैं हूँ कौन कहाँ से आया, किसने मुझे बनाया है। राजा पूछने लगे उस मुनि से, हे महाराज। मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? मुझे किसने बनाया है? गुरु महाराज जी का वचन भी है–

कहो गुरु मैं कहाँ से आया, कौन देश फिर जाना है। वो ही बात, वो ही जिज्ञासा राजा भी उस मुनि के सम्मुख कर रहे हैं कि हे मुनिश्रेष्ठ। मैं कहाँ से आया हूँ? मेरी पहचान क्या है ? मुझे बनाने वाला कौन है?

''कौन जन्मता कौन सुमरता, कौन चौरासी पावत है''

किसका जन्म हो रहा है ? कौन मरता है और फिर कौन चौरासी लाख योनियों में जाता है ? कौन कर्म भोगता है ?

काल किसी को कहते हैं जो तीन लोक को खावत है।

'जीव ईश मन ब्रह्म क्या है ?

यहाँ तक का प्रसंग कल होके आया है आज के प्रसंग में सत्‌गुरु महाराज जी कहते हैं–हे जिज्ञासुओं, मुमुक्षुओं। याज्ञवलक्य मुनि कहते हैं–हे रामजी! राजा शिखरध्वज पूछने लगा–**'जीव ईश मन ब्रह्म क्या है''**

बड़ी अजीब अजीब बातें पूछी हैं। ये जीव क्या है। ईश्वर क्या है ? मन क्या है ? बहुत लोगों को संशय पड़ जाता है कि ये ब्रह्म क्या है ? किं ब्रह्म ? किं ब्रह्मेति ? अर्जुन भी पूछ बैठा–कि महाराज आप कहते हो ये जीव, ये ब्रह्म, ये आत्मा, आखिर ये हैं क्या ? कौन सी बला है ? जबकि अर्जुन पूर्ण विद्वान है। चार वेद, छः शास्त्र उसको कंठस्थ हैं। शास्त्रों, उपनिषदों में कथा आती है।

एक मुनि दूसरे मुनि के पास जाकर, जो सब कुछ जानते हैं, शौनक मुनि, वे जाकर पूछते हैं–कि ब्रह्म क्या है ? सब कुछ पढ़े–लिखे हैं, पर फिर भी ब्रह्म तत्व से अनभिज्ञ। तो ब्रह्म की जानकारी ऐसे नहीं है, जो शब्दों से मिले।

और मुनियों का पूछने का जो मतलब था वो भी शाब्दिक रूप से पूछने का नहीं था क्योंकि शब्दों से तो वे भी ब्रह्म के बारे में जानते हैं। शब्दों से तो उन्हें भी जानकारी है।

पढ़–पढ़ पार न पाया किसने

उद्दालक मुनि बैठे हैं अपनी कुटिया के अंदर। उनका पुत्र है श्वेतकेतु, वो अपनी पढ़ाई पूरी करके आ रहा है। गुरु ने कहा–उससे। मेरे पास जो कुछ था, मैंने तुझे पढ़ा दिया और आज्ञा दे दी कि अब जाओ अपने घर। गुरु के वचन सुनकर श्वेतकेतु के मन में विचार उठा कि गुरु के पास जो था वो मैंने अर्जित कर लिया। मन में अहंकार हो गया और इसी अहंकार को लिए अपने घर की तरफ चल पड़ा।

उद्दालक मुनि बैठे हैं अपनी कुटिया के अंदर और देख रहे हैं कि सामने उनका पुत्र आ रहा है। श्वेतकेतु पर उसके चलने में वो नम्रता नहीं है। जो विद्या अर्जित करने के पश्चात होनी चाहिए।

जिसके अंदर में अभिमान होता है वो चलता दूसरी तरह से हैं, और जो नम्र होता है उसका

चलना फिर दूसरी तरह का हो जाता है।

जिसको पेसे का अभिमान, ज्ञान का अभिमान, रूप का अभिमान, किसी भी बात का अभिमान है, वो अकड़ के चलता है। क्यों ? क्योंकि वो सोचता है कि मेरे जैसा तो कोई है नहीं।

अतएव, श्वेतकेतु के पिता ने भी देख लिया कि इसके चलने में अहंकार है। आते ही पूछा–सब पढ़ आये। श्वेतकेतु बोला–हाँ! पढ़ आया। पिता बोले–ऐसी कोई बात पढ़ी जिसको पढ़ने के पश्चात, जिसके जानने के पश्चात और किसी चीज को जानने की जरूरत न पड़े। ऐसा कुछ पढ़ा। वहीं उसके पुत्र का अभिमान ठंडा हो गया। कहता है–अपने पिता से! पिताजी! ऐसी बात तो मैंने जानी नहीं।

पिता ने कहा–जाओ। जाकर फिर पढ़ो। श्वेतकेतु बोला–पिताजी। गुरु के पास जो भी ज्ञान था वों तो मैंने प्राप्त कर लिया। पिता बोले तुम पढ़के तो बहुत आये हो, परन्तु गुरु के संग में रहकर अभी कुछ सीखा नहीं तुमने। शब्दों से तो तुमने बहुत कुछ जान लिया, अब जाकर मौन की भाषा सीखो, मौन में उतरो कुछ।

श्वेतकेतु गुरु के पास पहुंच गया और बोलने लगा हे गुरुदेव मुझे बताओ वो कौन सी बात है जिसके बाद–

यम लब्धवा चापरं लाभ न मन्यतेः अधिकं ततः।

मुझे ऐसी बात बताओ जिसके जानने के बाद कुछ जानना शेष न रह जाए। गुरुदेव बोले–यहाँ रहकर सेवा करो। सेवा करते–करते गुरु की कृपा से अनुभव होने लग गया। ये तत्व है ही अनुभव का विषय, शब्दों का काम यहाँ नहीं चलता। हाँ शब्दों से कुछ इशारा मिल सकता है परन्तु बात समझ में तभी आती है जब अनुभव होता है।

राजा शिखरध्वज भी कहता है गुरु के पास जाकर कि–हे गुरुमहाराज! मुझे कृपा करके बताईये किं ये जीव क्या है? मन क्या है और ईश्वर क्या है?

जीव ईश मन, ब्रह्म व्याख्या

ये सब अलग–अलग बातें मेरे को समझ में नहीं आतीं हैं। जीव अलग, ईश्वर अलग, ब्रह्म अल कैसे हैं ? मुझे इनके बारे में बताईये।

ईश, जीव, ब्रह्म एक जैसा ही लगता है, प सबकी परिभाषा अलग–अलग है। महापुरुष बताते ये ब्रह्म शुद्ध स्वरूप है जिसमें अविद्या का लेशम भी नहीं है, निर्विकार, एकरस रहने वाला, अखं अजर, अमर, अविनाशी, अच्छेद, अभेद, जिसको क जला नहीं सकता, गीला नहीं कर सकता कोई क नहीं सकता। निर्गुण निराकार है अर्थात् देखने नहीं आता और है भी । आकार भी नहीं है, गुण साथ बंधा हुआ भी नहीं है। अगर गुणों में बंध ज तो फिर आकार में भी आना पड़ता है। तो निर्गु निराकार, स्वरूप वो ब्रह्म हैं।

और ! शुद्ध सत्व गुणों से बनी हुई है मा और शुद्ध सत्त्व प्रधान माया ने ब्रह्म का जो क्षेत्र घे हुआ है अर्थात् जितने क्षेत्र में माया रहती है, उ कहते हैं ईश्वर।

जैसे सत्व प्रधान माया है, उसी प्रकार त प्रधान अविद्या है, तम प्रधान अविद्या का जिस क्षेत्र अधिकार है वो है जीव।

अतः शुद्ध है ब्रह्म मायाप्रधान है ईश्वर और त प्रधान है जीव और नित ही जो संकल्प विकल्प उ हें वे हैं मन। बहुत थोड़े में समझने के लिये। क से आकार की कल्पना करूं। हे गुरुदेव

"मैं मूरख कुछ जानत नाहीं, ना कुछ मोहे विचारा है

जब व्यक्ति के मन में एक बात पक्की जाती है कि मैं जानता नहीं तो वह कल्याणपथ ओर अर्थात स्वयं को जानने की ओर चल पड़त परन्तु ये बड़ी अजीब बात है कि हम जानते तो नहीं परन्तु फिर भी हमारी ऐसी मान्यता है कि जानते हैं। याद करना।

हम जानते नहीं, फिर भी ऐसी जानकार हमको ऐसा मानते हैं अपने आपको कि हम ज हैं। सब कुछ जानते हैं।

परन्तु जिसने जानना शुरू किया, जैसे–

वो जानने लगता है, उतना उसका अज्ञान बढ़ता जाता है। बड़ी अज़ीब बात है, वास्तव में होना क्या चाहिये ? जानने के पश्चात अज्ञान घटना चाहिए या अज्ञान बढ़ना चाहिए।

परन्तु ये वास्तविकता है कि जैसे–जैसे व्यक्ति जानना शुरू करता है, वैसे–वैसे उसको प्रतीत होता है कि जो मैं जानता हूँ वो तो बड़ी थोड़ी बात जानता हूँ। समुद्र में बूंद जितनी बात जानता हूँ सिर्फ। संसार में पता नहीं कितना ज्ञान भरा पड़ा है और जब जानते नहीं तो–

'थोथा चना बाजे घना'

अर्थात् अधूरा ज्ञान प्राप्त होने पर ही व्यक्ति को ऐसा भान रहता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ परन्तु जब व्यक्ति जानना शुरू करता है, उसकी ये गलतफहमी का धीरे–धीरे अहसास होना शुरू हो जाता है। और जिसके मन में सही तरीके से ये बात बैठ जाए कि मैं जानता नहीं हूं तो वो जानने की कोशिश कर सकता है और जानते जानते पाता है कि बहुत गहरे राज छिपे हुए हैं जानने के लिए।

सबने ही महसूस किया होगा कि महापुरुष किसी भी पुस्तक को पढ़ते हैं तो उतने ही उसके गहरे अर्थ निकलते हैं।

स्वामी रामसुखदास जी महाराज कहते हैं कि मैं जितनी बार गीता को पढ़ता हूँ, उतनी बार नये–नये अर्थ निकलते हैं। ऐसा लगता है पता नहीं इसमें कितना अर्थ छुपा हुआ है, कितना कुछ लिख दिया गया है गीता के बारे में फिर भी अभी तक लिखते रहते हैं।

अर्थात् जो स्वयं को जान लेता है, फिर उसके मुख से हर बात के इतने गूढ़ रहस्य प्रकट होते हैं, जिनको वो ही समझ सकता है जिसने स्वयं को जाना है।

और हमें, हमें तो स्वयं की जानकारी ही नहीं कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और ऐसे ही हम उपदेश करना शुरू कर देते हैं कि मैं ब्रह्म हूँ, मैं आत्मा हूँ, अजर हूँ, अमर हूँ, अविनाशी हूँ पर वास्तव में हम ये जानते ही नहीं कि मैं कौन हूँ ? औरों को तो बहुत उपदेश कर लेते हैं पर–

औरन को उपदेश बतावत, आप चले जैसे गाड़ी का तौला

जगाऐं सच्ची अभीप्सा

दूसरों को बताना बड़ा सरल है कि आत्मा ऐसी है, ब्रह्म ऐसा, संसार ऐसा, मन ऐसा, जीव ऐसा, ब्रह्म ऐसा, ईश्वर ऐसा, परन्तु अगर जाना नहीं उस तत्व के बारे में तो जो भी जानते हें, वो सारा शब्दों का जाल है, उसमें कोई बड़ी बात नहीं। तो शाब्दिक ज्ञान एक अलग ही चीज है और ज्ञान प्राप्त करना, अपने आपको जानना एक अलग ही बात है, तो शब्दों में न अटकें, जानने का प्रयास करें।

राजा भी कहता है–हे महाराज। मैं कुछ जानता नहीं, मुझे बताओ।

"मैं मूरख कुछ जानत नाहीं"

जब व्यक्ति अपने आप को ऐसा बलहीन समझता है, तभी परमात्मा, गुरु, भगवान सहायता करते हैं। वे जब देखते है कि वास्तव में उस तत्व से अनभिज्ञ हैं और इसे अपने आपको जानने की तीव्र इच्छा है, अपने आपको पाने की चाह है तो संत–महात्मा जीवों पर कृपा करके वो ज्ञान की बात, वो सत्य की बात कृपा करके सुनाते हैं। बाकी वैसे तो पूछने वाले बहुत आते हैं कि क्या है कैसे होता है परन्तु करने वाले बहुत कम होते है और जो करने वाला होता है उसी को गुरदेव उस ज्ञान को प्राप्त करने का रास्ता बताते हैं।

राजा भी तीव्र प्यास लिए हुए पूछता है।

'मैं मूरख कुछ जानत नाहीं, ना कुछ मोहि विचारा है।'

हे गुरुदेव, मैं मूर्ख हूँ अज्ञानी हूँ और मुझे कोई विचार भी नहीं है, न ही अपनी कोई जानकारी है। मैंने कभी विचार ही नहीं किया है कि कैसा ये संसार है। कैसा मैं हूँ ? भोग–विषयों में भूले हुए कभी ऐसा सोचा नहीं कि मेरा इस जगत में क्या अस्तित्व है, मेरा आना किस कारण से है, मुझे कुछ जानकारी नहीं है अपने बारे में।

राजा की प्यास तीव्र से तीव्रतर होती जारही है और इसी प्यास के वशीभूत हो गुरुदेव के समक्ष अपने प्रश्नों को रखते जा रहे है, अब आगे गुरुदेव इनका क्या जवाब देते हैं जैसे–जैसे राजा हमें बतायेंगे वैसे–वैसे हम भी उनका श्रवण कर अपने जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे तो हम भी कल्याण पथ की ओर अग्रसर हो गुरुकृपा के अधिकारी बन सकते हैं।

परिवर्तनशील जगत

आगे राजा पूछता है–

'जीव, ईश, मन, ब्रह्म क्या है, जग को कौन आकारा है' मेरे को पता नहीं चलता। आज कैसा ? कल कैसा? बदलते रहने को ही संसार कहते हैं। **संर्सति इति संसार'**। समझे जैसा शरीर पहले था, वैसा आज नहीं है। अर्थात् जैसे चार–पाँच साल पहले उसमें शक्ति थी, रूप था, न तो आज उसमें उतनी शक्ति है, न उतना रूप। शक्ल तक बदल जाती है दो चार–पाँच सालों में। किसी व्यक्ति को अगर चार–पाँच साल बाद देखें तो कहते हैं न–अरे तुम्हारी तो शक्ल ही बदल गयी है। तो शक्ल बदली कब ? विचार करना।

छोटा बच्चा देखकर आते हैं किसी का, फिर चार–पाँच साल बाद अगर उससे मिलें तो देखते हैं कि वह लंबा हो गया तो कब लंबा हुआ ?

हर साल के पहले दिन लंबा हुआ, हर महीने के पहिले दिन लंबा हुआ, हर हफ्ते के पहले दिन हुआ। या हर दिन बड़ा हुआ, हर घंटे में बड़ा हुआ, हर मिनट में बड़ा हुआ या फिर हर सेकेंड में बड़ा हुआ ?

नहीं, सेकंड से भी जो कम समय है माइक्रो सेकंड उसमें भी व्यक्ति बड़ा होता है। कहने का तात्पर्य ये है कि प्रतिक्षण व्यक्ति बड़ा होता है और प्रतिक्षण ही व्यक्ति घटता है।

जैसे–जैसे व्यक्ति जवान होता है उसका शरीर बदलता है, शक्ति बढ़ती है और 35 बरस के बाद उसकी आयु ढलती जाती है और उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है। तो सेकंड के हजारवें हिस्से में भी व्यक्ति घट रहा है या बढ़ रहा है यानि व्यक्ति बदल रहा है।

जैसे शरीर बदल रहा है वैसे ही संसार भी बदल रहा है तो संसार के कौन से आकार की कल्पना करें। अभी देखते हें तो कुछ और है दूसरे ही पल कुछ और है। मालूम ही नहीं।

एक कथा आती है। राजा सत्यव्रत एक दिन नदी में खड़े होकर अर्ग दे रहे थे। जैसे ही अंजुली में जल भरा, हाथ में एक छोटी सी मछली आ गयी। उसने कहा–राजन्! मैं आपकी शरण में हूँ, मुझे अपने महल में स्थान दीजिए। राजा ने कहा–तू शूद्र प्राणी। क्या करेगी महल में ? मछली ने पूछा–महाराज आपके महल में जगह नहीं है क्या ? राजा ने कहा–महल में तो बहुत जगह है। तू इतनी छोटी सी मछली मेरा महल तो बहुत बड़ा है। इस प्रकार राजा मछली को अपने लोटे में रखकर महल में ले आया। महल में आकर राजा ने उसे एक बर्तन में डाला। डालने के बाद राजा थोड़ा ही वहाँ से हटे थे कि मछली कहती है–हे राजन। मेरी बात सुनो। राजा ने पलटकर देखा तो मछली बर्तन जितनी हो गयी है। मछली बोली–मैं तो इस बर्तन में नहीं रह सकती, किसी और बर्तन में डालो।

राजा उसको एक बर्तन से दूसरे बर्तन में डालता जाए पर मछली जिस बर्तन में जाए उतनी ही बड़ी होती जाए। आखिरकार राजा ने उस मछली को नदी में डाल दिया तो वो मछली नदी के आकार की हो गयी। यानि जैसे मछली का रूप पल–पल बदल रहा था, तो उसके कौन–से आकार की कल्पना करें? छोटे आकार की कल्पना करें या बड़े आकार की कल्पना करें और जैसे वो मछली बदल रही थी। वैसे ही ये संसार भी बदल रहा है। पता ही नहीं चलता कि उसका आकार क्या है तो राजा भी कहता है हे गुरुदेव यह संसार कभी दुखरूप, कभी सुख रूप भासता है। कभी लगता है ये सत्य है कभी लगता है ये मिथ्या है।

वन अवतरण दिवस 15 जुलाई पर विशेष

प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक
आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

सद्गुरु वे हैं, जो शिष्य को शिष्यत्व व जीवत्व हटाकर ब्रह्मतत्व में ब्रह्मरस की परम तृप्ति और रमानन्द की प्राप्ति कराने को सदैव प्रयासरत रहें।

ऐसे ही सच्चे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी हाराज का इस पृथ्वी पर अवतरण सम्वत् 1944 को षाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की चौथ को शनिवार के दन धर्ममयी माता कृष्णा देवी व पिता श्री चेलाराम घर हुआ। पिता काश्तकारी के साथ–साथ धान दुकान भी चलाते थे।

बचपन से ही आपको ईश्वर भक्ति संबंधी तावरण प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरुप आपने मात्र दह वर्ष की आयु में स्वामी आसूराम जी महाराज गुरुदीक्षा प्राप्त की।

आपने गुरुजी के सान्निध्य में रहकर भूख–प्यास, ख–सुख–सर्दी–गर्मी आदि कष्टों को सहन करने शक्ति प्राप्त की।

16 वर्ष की आयु में पिताजी के देहावसान के चात् आपने पिताजी की दुकान पर बैठना प्रारम्भ या, यहां भी संत–महात्मागण आकर उनसे धर्म व वत प्राप्ति विषयों पर वार्तालाप करते।

इकतारा लेकर जब स्वामी जी भजन गाते थे, नागरिकगण अपना–अपना कार्य छोड़कर स्वामी के भजन–रस में डूब जाते थे। सिन्धुनदी के तट आप ध्यान–योग में इतने तल्लीन हो जाते थे कि व तो क्या पर पशु–पक्षी भी पास आकर बैठ या करते थे।

स्वामी जी अपने उपदेशों में कहते थे, कि वता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। कुदरत ने इस पर करोड़ों जीव–जन्तु पैदा किये हैं, उनमें न मनुष्य ही अलग–अलग धर्मो में बंटे हुए हैं। क्या पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों में धर्म का विभाजन हुआ है ? जब उनमें धर्म का विभाजन नहीं हुआ है, तो मनुष्य को क्यों अलग–अलग धर्मों में बांट रखा है। प्रकृति के सभी नियम जैसे गर्मी, शीत, वर्षा, सभी धर्मों में एक से लागू हैं, तो फिर मनुष्य–जाति क्यों धर्म के नाम पर अलग–अलग बंटी हुई है।

स्वामी जी के ऐसे सच्चे धर्म के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि उनके अनुयाईयों में हिन्दु–मुस्लिम आपस में प्रेम पूर्वक रहने लगे।

क्रोध के संबंध में स्वामी जी कहते थे कि क्रोध आत्मा का स्वभाव नहीं है, क्रोध तो मनुष्य शक्ति का विकृत रूप है। एक बार क्रोध करने से मनुष्य के अन्दर की सुविकसित डेढ़ लाख कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं और जितने शुभ–कर्म जीवन में मनुष्य करता है वह नष्ट हो जाते हैं।

मनुष्य–जीवन के संबंध में स्वामी जी का कथन है कि मनुष्य–जीवन दो किनारों के बीच झूल रहे उस पुल जैसा है, जिसमें पशुता भी छिपी है, तो परमात्मा से मिलने की प्यास भी छिपी है। अतः अपने मूल स्वरूप को पहचानो, अपनी वृति को अर्न्तमुख करके इसे पहचानो। अपने उपदेशों में स्वामी जी कहते थे कि हम परमात्मा से अस्थायी वस्तुएं जैसे धन–धान, सुख–संतान नहीं मांगे, मांगना ही है तो संत–दर्शन, संतों का सानिध्य मांगे, जिससे हमारा मोक्ष हो।

सत्य–मार्ग पर लोगों को राह दिखाने हेतु स्वामी जी ने सन्त–मण्डल की स्थापना की जिसका नाम **"प्रेम प्रकाश मण्डल"** रखा। अपनी सन्त–मण्डली के साथ देशाटन करते स्वामी जी "सिन्ध–प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डा–आदम शहर के दक्षिण में

एक घने जंगल में आकर रूके। इस घने जंगल में जगह–जगह रेत के टीले थे, यहीं पर अपनी मण्डली के साथ कर सेवा करके 20–25 झोपड़ियां व सत्संग–स्थल का निर्माण कर **"श्री अमरापुर स्थान"** की स्थापना की। इस पावन स्थल पर नित्य प्रति सत्संग में स्थानीय नागरिकों की संख्या बढ़ती गयी। इस पावन स्थल की लोकप्रियता की जानकारी जब राज्य सरकार को प्राप्त हुई तो राज्य सरकार ने अतिक्रमण मानकर अनेकों बार इसे उजाड़ने का प्रयास किया किन्तु सभी प्रयास असफल हो गये। अन्त में राज्य सरकार के नुमाइन्दे स्वामी जी की भक्ति के सम्मुख नतमस्तक हो गये और धीरे धीरे **'श्री अमरापुर स्थान'** का भव्य निर्माण हुआ जिसकी ख्याति बढ़ती ही चली गयी। स्वामी जी ने अपने मूल–मंत्र **"सत्नाम साक्षी"** प्रेमियों को प्रणाम–मन्त्र के रूप में आत्म–सात करने की दीक्षा दी। **"सत्नाम साक्षी"** महामंत्र आज भी पूरे विश्व में अपनी खुशबू बिखेर रहा है। **"प्रेम प्रकाशी"** एक दूसरे का अभिवादन **"सत्नाम साक्षी"** के संबोधन से ही करते हैं।

सत्संग की महिमा के संबंध में स्वामी जी का कथन है कि सत्संग रूपी वट–वृक्ष को संसार में कोई भी तोड़ने में समर्थ नहीं है। सत्संग रूपी वृक्ष का आधार पारब्रह्म परमात्मा है, जो दिव्य है, सर्वत्र जिसका प्रकाश फैल रहा है। सत्पुरुष महात्मा इसकी बड़ी शाखाएं हैं, इसलिए तन–मन का अहंकार छोड़कर उन सत्पुरुषों की सेवा करते रहो। सत्संगी–प्रेमी, इस सत्संग–वृक्ष की छोटी शाखाऐं हैं। वचन रूपी पते पारस के समान है, जिनको धारण करने से अन्तःकरण की समस्त मैल निवृत हो जाती है। इस वृक्ष में देवी–सम्पदा के गुण फूलों के समान हैं, जिनको धारण करने से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। इस वृक्ष में ज्ञान रूपी फल लगा हुआ है, जिसके सेवन से जीव अमर बन जाता है। कृपा रूपी इस वृक्ष की सुहानी छाया है, इस छाया में बैठने से तन–मन को शांति मिलती है। सत्संग रूपी वृक्ष का बीज गुरु–मंत्र है, जो लौकिक धन से नहीं अपितु उस निर्वाण पद को प्राप्त होता है, जो तन–मन की दक्षिणा देता है।

स्वामी जी ईश्वर से सदैव यही प्रार्थना करते थे कि सभी को सदबुद्धी दो, ताकि मानव सत्यधर्म पर चलते हुए, सच्चे कर्तव्यों का पालन करते हुए अपने निश्चित जीवन का सफर शांति से पूर्ण कर सके।

स्वामी जी ने अपने उपदेशों के माध्यम से अनेक रचनाएं रची हैं, जिनमें प्रमुखतया **"प्रेम–प्रकाश ग्रन्थ"** है, जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली छन्दावली आदि हैं, स्वामी जी रचित भक्ति–भजन अमरापुर वाणी में संकलित हैं, जो आज भी पूरे विश्व में अनंत जीवों का मार्ग–दर्शन कर रहा है।

सम्वत् 1999 के पुरुषोत्तम मास की चार तारीख, दिन शनिवार को 55 वर्ष की अल्प आयु में सद्गुरु महाराज जी ने प्रेम प्रकाश आश्रम हैदराबाद (सिन्ध) में आसन–मुद्रा में अपना नश्वर शरीर छोड़ा। उनकी आत्मा–ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गयी। पर उनका आलोक आज भी प्रेम–प्रकाशियों का पथ–प्रदर्शन कर रहा है।

पूरे विश्व में लाखों प्रेम–प्रकाशीगण अनेक शहरों–कस्बों में स्थित प्रेम–प्रकाश आश्रमों में नित्य–प्रति सत्संगों के माध्यम से सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं। देश–विभाजन के पश्चात् सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपनी तपोस्थली जयपुर में **"श्री अमरापुर स्थान"** की स्थापना की जो आज **"प्रेम प्रकाश मण्डल"** का मुख्यालय है, इसी पावन स्थल पर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का भव्य श्री मन्दिर एवं समाधि–स्थल है जहाँ आज हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन आकर अपनी आस्था का अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

–बी. डी. टेकवानी, जयपुर

स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी प्रवचन कैसेट

जाग जिज्ञासी जीत

(परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज)

दोहा—रैन गई पुनि दिन भया, दिन भया फिर रात।
कह टेऊं मन चेत ले, जा आयु ऐसे जात।।
राम भरोसा राख तूं, और भरोसा त्याग।
कह टेऊं हरि शरण ले, खोलो अपना भाग।।

भजन—जागे नेत्र राम के दर्शन, पेख—पेख के होवे प्रसन्न।
रीचहिं हरि रंग रीत हरि जप, हरि जप हरि जप हरि जप
जाग जिज्ञासी जीत हरि जप...................।

प्रेम से बोलो हरे राम। सारे पूजने योग्य महात्मा मण्डल, प्रेमियों, सत्संगियों, गुरमुखों अपने शरीर इन्द्रियों को जगाओ कानों को श्रवण को, सत्संग में जगाओ। महात्माओं के वचनों में जगाओ। नेत्रों को राम के दर्शन में जगाओ। भगवान का दर्शन करो। रसना को जगाओ। रसना के लिए संत माधवदास ने आपको सुनाया कि अपनी रसना को मुख दोही बनाओ। तो परलोक बन जावे, मोक्ष बन जावे। कैसे जगाओ ? हरि..........

जागे रसना हरि गुण उचरे, विषय वासना विख रस विसरे
अमी रस पीत हरि जप, हरि जप हरि जप
जाग जिज्ञासी जीत हरि जप हरि जप........

प्रेम से बोलो हरे राम। रसना को जगाओ। कैसे जगाओ ? जो षट्रस में सोयी हुई है, कड़वे बोलने में सोयी हुई है, झूठ बोलने में सोयी हुई है। इसको जगाओ। आज मेले का आखिरी दिन है। इतने दिनों तक आपने बड़ा आनन्द पाया है। कुछ वचन भी याद किये होंगे। संतों के। अभी भी याद करना। रसना को जगाओ। मीठा बोलो, पहले मीठा। कड़वा मत बोलो। कड़वा बोलना बिच्छू के भी काटने से अधिक जहर वाला है। दुखवाला है। जिसको बिच्छू काटे। दवाई पिलाओ, मन्तर पढ़ाओ, तो भी 24 घंटे में पीढ़ा जायेगी। लेकिन कड़वा बोलना ऐसा है कि जब तक जीता रहेगा तब तक इसके घर का पानी नहीं पीयेंगे। कड़वा मत बोलो। मीठा बोलना एक दान है। जिसको अगर कोई किसको 5 रू देवे सत्तेगुण से, खुशी से, देने से चित्त प्रसन्न होगा जो लेगा उसका भी चित्त प्रसन्न होगा। मीठे बोलने से दूसरे का चित्त प्रसन्न करना यह दान है।

तुलसी मीठे वचन पर, सुख उपजे चहुँ ओर।
वशीकरण यह मन्तर है, तजदे वचन कठोर।।
ऐसी वाणी बोलिये, भाई मन का आपा खोय।
औरों को शीतल करे, आपहूँ शीतल होय।।

ये याद करना जितने प्रेमी बैठे हो मीठा बोलना।

कौवा किसका धन हरे, कोयल किसको देत।
जो मीठा वचन कहे, सबका चित्त हर लेत।।

कड़वे बोलने वालों के पास बैठेंगे ? तो कहेंगे। हटाओ हल्ला मचाया है। पर कोयल बोलेगी तो आप सुनते रहोगे कि बोलती रहे। क्या कौवा धन लेता है? कोयल देती है क्या ? मीठा वचन मीठा मधुर बोलना। कड़वा नहीं बोलना।

प्रिय वचन के कहन से, टेऊँ रीझत राम

ये चार प्रकार की वाणी है—परा, पसन्ती, मध्यमा, वेखरी। परा का आधार मूल कमल चक्र में वासा है। पसन्ती वाणी हृदय में आकर रहेगी। पसन्ती होगी। हृदय में स्थान है वाणी का। कोई भी बात करेंगे तो उसका हृदय में विचार करके सुनायेंगे। हृदय में वाणी का स्थान है। हृदय में चली तो फिर कण्ठ में आकर के रूकेगी। जैसे—यहाँ अहमदाबाद जावें तो बड़ी—बड़ी स्टेशन है। यहाँ छूटेंगे तो पहले फुलेरा, फिर अजमेर आयेगी तो यह वाणी मेल होकर चलती है। हृदय में आकर पसन्ती होगी। वहाँ विचार करो। अगर वहाँ भी न करो तो फिर कण्ठ में आकर के खड़ी होगी। कण्ठ में आकर खड़ी होगी तो वहाँ विचार करो। सारे को पता लगेगा। आओ बात सुनायें फिर कहेंगे अभी छोड़ दो। कण्ठ में रूक गयी है क्योंकि कण्ठ में स्थान है। वाणी का। फिर कण्ठ से बाहर निकली तो वेखरी रसना से होकर बाहर निकलेगी। फिर नहीं आयेगी। इसलिये—

ये तो बोल अनमोल है, जो कोई जाने बोल।
कण्ठ तराजू तोल के, तब मुख बाहर खोल।।

विचार करके बोल, मीठा बोल, दूसरा सच बोल।

ये अमृत पिलाओ सच अमृत है। ये रसना को पिलाओ। जितने भाई–माई बैठे हो अपने सुख के लिये, अपने स्वार्थ के लिये कभी झूठ मत बोलना। झूठे आदमी को साक्षात्कार नहीं होगा। झूठ बोलना पाप है।

सच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जिसके हृदय सच बसे, तिसके हृदय आप।।

सच बोलना, झूठ नहीं बोलना। दूसरे के सुख के लिए, परोपकार के लिए भली झूठ बोलना। लेकिन अपने लिए झूठ नहीं बोलना। कभी नहीं। अपने सुख स्वार्थ के लिये कभी झूठ नहीं बोलना। दूसरे आदमी को क्या कहें ? इसी लोक–परलोक में कोई सुख नहीं है। ये रसना को अमृत पिलाओ। मछली–मांस मत खाओ। संत माधवदास जी ने संकल्प लेकर मांस आप से छुड़वाया है। लेकिन आपने छोड़ा नहीं है। ये बाहर से तो छोड़ा है लेकिन यहाँ बाहर का काम नहीं है। दिल से नहीं छोड़ा। मैं देख रहा था। मैं सुन रहा था। दिल से किसी बड़भागी ने छोड़ा होगा। नहीं तो कौन छोड़ता है। मछली मांस कौन छोड़े ये मछली मांस मत खाओ। जैसा अन्न तैसा मन। रजोगुणी आहार से मन रजोगुणी होगा, तमेगुणी आहार से मन तमेगुणी होगा। सत्तेगुणी आहार से मन सत्तेगुणी होगा। सत्तेगुणी भोजन करो। थोड़ा करो।

कहते हैं महाराज दिल से नहीं छोड़ा है। हमको जोरी से छुड़वाया है। अभी दिल से नहीं छोड़ा है। पाप–कर्म, निषिद्ध कर्म तो जोरी से छुड़ाना चाहिए, छुड़ाना चाहिए, छुड़ाना चाहिए। परन्तु दिल से छोड़ोगे ना तभी काम होगा। बाहर से नहीं। ये मांस–मछली, चाय भी अभी गर्मी आयी है ना। छाछ पिओ, शर्बत पिओ, फिर बुखार होवे, खांसी होवे या बिल्कुल थकावट होवे तो भली एक या दो दिन चाय पिओ। लेकिन नियम छोड़ दो कि तीन–तीन, चार–चार वक्त चाय पिओ। ये ठीक नहीं है। प्रेम से बोलो हरे राम। मछली मांस दूसरा पता नहीं क्या कहा था ? छोड़ो। तम्बाकू बीड़ी जो भी है उसमें भी फायदा नहीं है। सुना, कृपा तो करी है लेकिन दिल से खुशी से नहीं छोड़ा है। ये फिर खायेंगे। कोई–कोई बड़भागी नहीं खायेंगे। क्यों ? बड़भागी क्यों कहा ? प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो दिल [से] काम करो बाहर से नहीं करो। बाहर से कुछ न[हीं] बनेगा। व्यवहार का, परमार्थ का दिल, हृदय खुशी [से] बनेगा। खुशी से करेगा तो ठीक रहेगा। ये रसना [को] जगाओ। ये मछली मांस नहीं खाना, चाय नहीं पीन[ा], झूठ नहीं बोलना, अक्यार्थ नहीं बोलना। कारजमा[त्र] बोलो नहीं तो चुप करो। ज्यादा नहीं बोलना चाहिए। भोजन भी, वैरागी जिज्ञासु जिसको मोक्ष की, भगवा[न] के दर्शन की इच्छा है वह एक वक्त रोटी खावे। क्[या] कहा ? एक वक्त रोटी खावे। जो थोड़ा होवे तो व[ह] रात को थोड़ी रोटी खावे। बिल्कुल आधा। आधा पे[ट] भरे।

चुप कर चप न चोर, बूट अंख्यू ढक कन।
पाणी पी पेट न भर, रहो अधूरो अन्न।।

चुप करो। चुप माना मौन। यह भी मौन अच्छ[ी] है। कुछ महीना या साल आपने मौन देखा होगा यह भी अच्छी है। लेकिन सच्ची मौन वो है ज[ो] कारजमात्र बोलकर चुप करो। बक–बक नहीं भाई–माई इधर–उधर की गिल्ला निंदा। अगर शह[र] से भी भाई यहाँ आयें तो दो–चार शहर से माई आय[ें] है। यहाँ सिन्ध की माईयों से राजी खुशी पूछना [...] उसी में हल्ला मचा देती है। एक बात याद करन[ा] माई भाई।

सत्संग में बिना कारण बोलना पाप है। अज्ञान[ी] जीवों को क्या पता। लाचारी कोई जरूरी काम है त[ो] फिर बोलना चाहिए न तो सत्संग में बोलना पाप [है] क्योंकि यह ब्रह्मयज्ञ है इसमें खण्डन होगा। अथव[ा] बाहर का जो यज्ञ होता है उसमें अगर खण्डन करत[े] है तो उसको क्या कहेंगे। हम नहीं कहेंगे। कभ[ी] नहीं। बिना कारण मत बोलना, चुप रहना। सच्च[ी] मौन यह है कारजमात्र बोलकर के चुप रहें। बक–ब[क] नहीं करें। अकारण मत बोलो। अक्यार्थ, परमार्थ, लोभारथ, यथार्थ। ये सत्गुरु महाराज प्रेम प्रकाश ग्रं[थ] में लिखा है। ये भजन–

अक्यार्थ, लोभारथ, विखेप विसारीन्दसि।
परमार्थ, यथारथ, वचन उच्चारीन्दसि।
साधन जे संग में सच्चो सुख पाईन्दसि...।।

चार प्रकार का बोलना है–अक्यार्थ, लोभारथ

परमार्थ, यथारथ। अक्यार्थ लोभारथ नहीं बोलना। कारजमात्र बोलकर के चुप रहना। सत्संग में नहीं बोलना जहाँ भी जाओ मत बोलना। बिल्कुल कोई जरूरत हो तो बोलना लेकिन धीरे–धीरे कोई दूसरा न सुने। हल्ला नहीं करना सत्संग में। ये यज्ञ है। रसना को अमृत पिलाओ। जो विख रस है–कड़वा बोलना, झूठ बोलना, मछली–मांस खाना आदि यह विसारो। यह अमृत रस पिलाओ। सच बोलना। कार्जमात्र बोलना प्रभु का नाम जपना। जो कहो महाराज आदत पड़ी है। ये भी आदत पड़ी है। सुना, आदत कैसे निकालें बहुत आदत होवे तो ऐसे बोलो–

शिवोऽम, शिवोऽम शिवोऽम शिवोऽम शिवोऽम...।

ऐसे जपो राम का नाम जपो। हरे राम, राधेश्याम जपो। बक–बक मत करो। ये करो। दूसरा नहीं बोलना। चुप करना। रसना को अमृत पिलाओ। रसना को जगाओ। प्रभु का गुण गाओ। परलोक को बनाओ। जन्ममरण का फेरा मिटाओ। फिर माता के गर्भ में नहीं आओ। हे मेरे मन। रसना को जगाकर के फिर नासिका को जगाओ।

जागे ईड़ा जागे, जागे पिंगला
जागे सुरतां, गांवे मंगला
गावें हरिगुण गीत हरि जप, हरि जप हरि जप...
जाग जिज्ञासी जीत हरि जप.....।।

प्रेम से बोलो हरे राम। जिज्ञासुओं, गुरुमुखों नासिका को जगाओ। नाक को कैसे जगाओ। सत्शब्द सत्‌गुरु महाराज के शब्द का सुमरन करो। स्वांस नाक से उठाओ। मुख से प्राण उठाओ। मुख से प्राण उठाने से बहुत नुकसान है क्योंकि जो आयु, उम्र है वह स्वांसों पर बंधी हुई है। जो मुख से प्राण उठाने पर 50 साल होगी तो 40 साल हो जायेगी। और नाक से प्राण उठानेपर 50 साल होगी तो 60 साल हो जायेगी। क्यूं मुख का जो प्राण है वो छाती, गर्दन से होकर फिर बाहर निकलेगा। नासिका का प्राण नाभी तक जाता है। इसलिए नासिका से प्राण लेना मुख से नहीं लेना। दूसरा भी इसमें फायदा है जो नासिका से प्राण उठायेगा वो बहुत करके बीमार नहीं होगा। मुख का प्राण उठाने से बहुत बीमार होता है। प्रेम से बोलो हरे राम। दूसरा बहुत इसमें फायदा है। थोड़े–थोड़े में समझ जाओ जो मुख से प्राण उठाता है वो निर्गुण, उपासना योग का अधिकारी नहीं है। उससे अभ्यास नहीं होगा। ये प्राणायाम है। नासिका से। प्रेम से बोलो हरे राम। मोक्ष के लिए दो मार्ग हैं, ज्ञानमार्ग, दूसरा योग मार्ग। सत्‌गुरु महाराज का है इसी प्रेम प्रकाश ग्रंथ जो कल रात प्रेमियों को सुनाया था। जितने जिज्ञासु गुरमुख हो। अक्षर हिन्दी हैं। बिल्कुल सुन्दर हैं। ऐसा पन्ना ऐसा अक्षर किसी दुर्लभ ग्रंथ के अन्दर होगा। आप अच्छी तरह देखना यह जहाँ बनता है ना कलकत्ते में। वहाँ प्यारा वाधू केसवानी उसका कोई मित्र था। उसको लिखा उसने भेज दिया। हम हिन्दी नहीं जानता है। एक ने कहा–हिन्दी नहीं जानता हूँ। अगर गुरुमुखी में छपता, तो अच्छा था। हम भी लेता हाँ जी गुरु महाराज की कृपा होगी उसकी शक्ति है। सच्ची करके पूछो। उसकी शक्ति यह सारा काम कर रही है। गुरु महाराज सूक्ष्म रूप से यहाँ लाठी लेकर प्रेमियों की संभाल कर रहे हैं। हमारी भी संभाल कर रहे है। संतों की। बड़ी शक्ति है। क्या कहें आपको। एक गुरूमुख ही जानता है। दूसरा हम ही जानता है। बड़ी शक्ति है। जहाँ कुछ घबरा जाता हूँ, रूकावट हो जाती है। वहाँ ऐसी शक्ति होती है जो उस काम को करा देती है। हमारे को प्यारा वाधूराम यहाँ कोई बात हो गयी थी जो घबरा गये थे। ऐसी शक्ति हुई कि वो थोड़ी समझ आ गयी। जो प्यारा वाधू केसवानी ने कहा–महाराज जी, कोई शक्ति है, जो इस मौके पर आके यह काम करती है। एक थोड़ी बात आपको सुनायें, गुरु महाराज की प्रेम से बोलो हरे राम।

शांतिप्रकाश कल्याणी में एक महीना था। वहाँ कुछ संत थे। कल्याणी में वहाँ कुछ काम था वाणी का। पर सहचारी के यहाँ भोजन खाया। जब एक महीना पूरा होने वाला था तभी शांतिप्रकाश को मैंने कहा कि एक भण्डारा करवायें। प्रेम प्रकाश मण्डल की तरफ से एक भण्डारा करवायें। एक अच्छा भण्डारा करेंगे। पर हम करेंगे। हमने विचार किया लेकिन हम भण्डारा करेंगे। वहाँ लीलाराम से पूछा वहाँ कुछ है। कहा–500 रू. कर्जा उठाया है शांतिप्रकाश ने। मैंने कहा–500 रू. कर्जा उठाया है। यह ठीक नहीं है।

बोला किसी से लिया है। महाराज जी ने कहा–शांतिप्रकाश भण्डारा हम करायेंगे। बोले नहीं हम करायेंगे। जो भी कहो हम करायेंगे। दिल का तो उदारी है जो भी कहो–लड्डू पेड़ा कचौरी। जो भी कहो हम करायेंगे। बोले, नहीं हम करायेंगे। तीन–दिन मामला इस पर झगड़ा हुआ हमने कहा–यह भण्डारा हम करायेंगे। 500 रू. इसने कर्जा लिया है, अभी क्या करें। अन्त में बडा घबरा गये। इससे अच्छा नहीं कहते तो अच्छा था। अब कह भी बैठे हैं। संतों को न्यौता भी दिया है। अभी क्या करें। बड़ा घबरा गये। प्रभु की लीला ऐसी हुई लीलाराम को कहा–हम पैसा देते हैं। आप भण्डारा करना शांतिप्रकाश को मत कहना। कहने लगे, अगर उसको पता चलेगा तो मेरे को आश्रम से निकाल देगा। हम नहीं लेंगे अभी क्या करें? किसको कहें। सत्‌गुरु महाराज को पुकार करी। सुबह को सवेरे सच्ची करके पूछो। हे गुरु महाराज कोई रास्ता निकालो। अभी क्या करें। ये ठीक नहीं इसी समय आप कोई सहायता करो। कोई रास्ता निकालो अभी क्या करें जो नहीं कराता तो भी काम नहीं बनता और जो कराता हूँ वो भी काम नहीं बनता है। इतना कर्जा कैसे चुकायेंगे। क्योंकि गुरु महाराज के प्रेम प्रकाश मण्डल का कोई मांगता है तो वह समझो प्रेम प्रकाशी नहीं है! क्या कहा ? यह निश्चय करना जो न मांगे ऐसे भी कही मांग रहे हैं कि मैं सत्‌गुरु महाराज का शिष्य हूँ। मेरे को कुछ दो। आप उसी समय निश्चय करना कि सत्‌गुरु टेऊंराम महाराज का शिष्य प्रेम प्रकाशी नहीं है। जिसको सोना पहना होवे, रेशमी कपड़ा पहना होवे और कहे गुरु महाराज का शिष्य हूँ तो समझना कि यह पापी है। प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो मैं घबरा गया। हे गुरु महाराज अभी कृपा करो। प्रभु की लीला सारा दिन विचार किया। मैं सो रहा था कुछ सपना गुरु महाराज का देखने में आया प्रेम से बोलो हरे राम। परन्तु किसको बोलें तो नेत्र खुल जायें ऐसी प्रभु की लीला फिर विचार था। परसों है भण्डारा। बाकी है कल का दिन। कल से सीधा ले आयें अभी क्या करें? रात को जब 8 बजे का समय हुआ तो हमारे पास वो बैठा था। द्वारिकादास बैठा था। हम बैठा था एक प्रेमी आया गुरु महाराज जी हमने सुना है परसों आप एक भण्डारा करायेंगे हां विचार तो है यह लो लिफाफा मेरी तरफ से बोले आप कौन हो बोला –यहाँ घूमता हूँ बोले अभी कहाँ से आये बोला–बम्बई से आया हूँ। वहाँ बम्बई में रहता हूँ पर बहुत करके घूमता हूँ। फिर अच्छा आप आयेंगे परसों नहीं मेरे को काम है। मैं नहीं आऊंगा ये भण्डारा कर देना। सुना, अच्छा। भला हम परसों बम्बई आयेंगे फिर वहाँ पर मुझसे मिलेंगे। कि बम्बई में भी मिलें न मिलें। भण्डारा तो मेरी तरफ से करवा देना। देखा–आगे भी ऐसे हुआ है।

कवियों ने, महात्माओं ने इसे सिंगारा है। पहले भी ऐसे हुआ है। हमने कहा आप कौन हैं तो नाम उसने बताया। प्रेम से बोलो हरे राम। कि धर्मदास हम सेठ हैं बम्बई का अच्छा यहाँ ठहरो नहीं मेरे को काम है। आप यह ले लेना लिफाफा देकर के चला गया। हमने खोल कर देखा तो उसमें 250 रू. पड़े थे लिफाफे में। हमने द्वारिकादास को कहा–शांतिप्रकाश को बुलाओ कहा–ये ले लो। तो कहा–नहीं हम नहीं लेंगे। बोले ये गुरु महाराज ने दिया है बोले–ये नहीं लेंगे। आपने सलाह की है द्वारिकादास ने बहुत कसम उठाये कि दूसरा सेठ देकर के गया बोले नहीं लेंगे। दिया, तो भण्डारा करवाया तो सच्ची करके पूछो स्वामी जी को कल्याणी निवासियों को पता होगा लड्डू, पूरी भाजी पकोड़ों की बहुत बनाया। अन्त में क्या हुआ हम भी 1 महीना था 50–60 हजार आदमियों की पंक्तियाँ गरीब वहां भी गुरु महाराज का भण्डारा खुला हुआ है। उस दिन सारे कल्याणं के गरीब बहुत आये। साधु, महात्मा 10–10:30 बजे भण्डारा शुरू हुआ। जो तीन बजे बंद हुआ। फिर लड्डू पूरी बच गये रात को भी सत्संग में बांट दिया। इतनी भण्डारे में ताकत हुई। "बोल सत्गुरु टेऊंराम महाराज की जय" ये कौन आया। ये गुरु महाराज आया। हमारे को तो निश्चय है कि गुरु महाराज आया। ये रूपधारण करके, आगे भी ऐसे हुआ है। यह गुरु महाराज की शक्ति है। उसकी कृपा होगी प्रेम प्रकाश मण्डल का पुरुषार्थ होगा तो गुरूमुखी भी हो जायेगा। श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ। ये आपको सुनाया। अभी हिन्दी में है। इसी में

एक बात आप सुनो। जिसको गुरमुखी अच्छी आती होगी वो हिन्दी बाल बोध लेकर के 10–12 दिन में सीखेंगे तो वह पढ़ जायेगा। बाकी लिखना थोड़ा कठिन है बाकी 7–8 दिन में पढ़ जायेगा। क्योंकि अक्षर भी मोटा है सुन्दर वाणी है तो जितने प्रेमी जिज्ञासु बैठे हो आगे किसी को भेजेंगे नहीं जिसको लेना है वो यहाँ से ले जावें किसी को भेजेंगे नहीं। इसी पर प्रेम प्रकाश मण्डल के जो साधु हैं, मण्डली है वो तो स्थापन करेहीं। सुना है और जो गृहस्थी श्रद्धालु हैं वो गुरु महाराज के मन्दिर के आगे जगह होवे वहाँ रख देवें और जिसके पास जगह नहीं हो वह पढ़कर के बंद कर अलमारी में रख देवे। फिर टाइम से खोलकर पढ़कर के बंद कर रख देवे। उसमें कोई बंधन नहीं है। प्रेम से बोलो हरे राम। आज भोग भी पड़ेगा। हमारा टाइम भी पूरा हुआ है। प्रेम से बोलो हरे राम। रसना को जगाओ। क्या कर रहे थे ? मोक्ष के लिए दो मार्ग हैं–ज्ञान मार्ग, दूसरा योग मार्ग जो सत्गुरु महाराज प्रेम प्रकाश ग्रंथ में लिखा है यहाँ से बात छेड़ी थी। क्या लिखा ?

ये दो मार्ग हैं–ज्ञानमार्ग दूसरा योगमार्ग। ये दोनों अमर लोक में पहुंचाने वाले है। जो भी विश्वास, श्रद्धा से चलता है वो आत्माघर में जाकर पहुंचता है।

"एक बार जिस घर में जाकर, फिर लौट के नहीं आता है।" फिर जन्म मरण के चक्कंर में नहीं आऐगा सारे पर्दा आवरण का पर्दा तोड़ करके निज रूप में समा जायेगा। जैसे पानी की बूंद पानी छोड़ती है। प्रेम से बोलो हरे राम। उसी ज्ञान मार्ग का 11 साधन 7 भूमिका है। विवेक वैराग, खटसम्पदा, विमुक्षता, सेवा श्रवण, मनन, निध्यासन, तत्वमसि आदि का शोधन। प्रेम से बोले हरे राम। 11 साधन है ज्ञान मार्ग का। सात भूमिका–शुभ इच्छा, सुविचारना,

दूसरा योग मार्ग–योग मार्ग है चार प्रकार का–राजयोग, लययोग, मन्तर योग, हठ योग, इसमें मन्तर योग और हठ योग मोक्ष हेतु नहीं है बाकी लययोग, राजयोग मोक्ष का कारण हेतु है। उसी राजयोग के आठ अंग है। ये भी योग ग्रन्थ थोड़ा शुरू हुआ है शास्त्र। गुरु महाराज की कृपा से यह पूरा हो जायेगा। जिज्ञासुओं के लिए जितने प्रेमी बैठे हो अभी टाइम पूरा हुआ बाकी दो–चार मिनट हैं तो योग–मार्ग का आठ अंग हैं–यम नियम, प्राण, आसन, ध्यान, योग, अवधारणा, समाधि। उसमें सारे जीवों के नियम रखना चाहिए यम और नियम। यम किसका नाम है। यम के पांच लक्षण हैं। कौन–अहिंसा, सत्य, असत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। अहिंसा करना जितने जिज्ञासु बैठे हो हिंसा नहीं करना। बिना कारण किसी जीव के दिल को नहीं दुखाना। दूसरे के चित्त को नहीं दुखाना।

सुबह को उठकर के चाकू लेकर के अंगुली पर चलाओ दर्द होगा कि नहीं, विश्वास आपको है। भला, जो बकरा होता है, बकरा पक्षी प्रेम से बोलो हरे राम। बकरे के सिर के ऊपर कात चलाता होगा पीढ़ा नहीं होगी, दुःख नहीं होगा। यह पाप है खाने वालों के ऊपर। आप कहते हैं पाप कसाई वालों के ऊपर है, नहीं नीतिशस्त्र कहता है। यह छः आदमियों पर पाप होता है कौन सत्कर्ता, उपदृष्टा, उपकारी, अनुमत, स्वादिक, घातक। जितना कसाई पर पाप उतना खाने वाले पर पाप, उतना पकाने वाले पर पाप, उतना सलाह देने वाले पर पाप, भली खाओ। उस पर भी उतना पाप लगता है। कहते हैं पैसे मैं देता हूँ ले आओ मांस। उसी पर भी उतना पाप होगा जो उसे पैसे देता है सुना। हम क्या कहें। कभी यह विचार आता है, कि पशुपक्षी भी अपने धर्म पर स्थित है क्यों? आप विचार करके बुद्धि को तेज करना। हरि–

गऊं न छुए मांस, सिंह न घास गिरासे।
हंस मीना से मुक्ता, अन्नल न गिरे आकासे।।
जप मन राम राम, जप मन राम राम ....।

प्रेम से बोलो हरे राम। ये स्वामी ग्वालानंद महाराज कहता है–"**गऊं न छूए मांस**" अभी घर जाकर के जभी जाओ तब मांस पकाकर के गऊं को खिलाना, खायेगी। घोड़ा, ऊंट, बकरी, खायेंगे। कभी नहीं, वह भी अपने धर्म में स्थित है अरे हम मनुष्य होकर के मांस खावें। भगवान ने हमारे लिए अनेक फल–फूल भाजी पैदा की है। क्या मांस खावें ? मांस में कोई फायदा है क्या। तीन शक्ति है क्या कहा–तीन ताकत ये मांस में नहीं है, शरीर की दिमाग की आतमा की। वो मांस में नहीं है। यह दूसरे पदार्थों में है। प्रेम से बोलो हरे राम। मांस में नहीं। मांस से

शरीर मोटा होगा जो मांस खायेगा उसका शरीर थोड़ा मोटा होगा। शरीर मोटा होगा तो अन्त में 10 या 5 सेर मिट्टी राख का होगा। प्रेम से बोलो हरे राम। "सिंह न घास गिरासे" जो शेर है माधवदास ने कहा, जो खुशी से छोड़ेंगे तो अच्छा है दिल से छोड़ दो किसी ने जोरी से छोड़ा है तो भी अच्छा है पर खुशी से छोड़ दो। कोई कहता है महाराज जी खुशी से छूटता नहीं है कोई साधन सुनाओ जिससे छूट जावे खुशी से छूट जावे। भाई–माई याद करना या लिखना। इस पाप से छूट जावे तो क्या करना। विचार करना। जहाँ पर सुबह को कसाई काटता है वहाँ पर खड़े हो जाओ। फिर मांस लोगे ही नहीं वैराग हो जायेगा। **"सिंह न घास गिरासें"** शेर कहो, सिंह कहो, केसरी कहो, सिंह कहो हिन्दी में बहुत होता है। हिन्दी नहीं समझता है क्योंकि हिन्दुस्तान में आये हैं ना पाकिस्तान में इच्छा नहीं है कि वहाँ चलेंगे। प्रेम से बोलो हरे राम। शेर है बगीचे में उसे तीन दिन भूखा रख के फिर घास दो, खायेगा ? "हंस मीना से मुक्ता" हंस को मछली दो, खायेगा? कीड़ा खायेगा ? नहीं आपको पता है हरि–

जैसे हंसा खीर नीर को मिला, हुआ जा पाते हैं।
अपने चूंच पानी त्यागे, दूध तहां पी जाते है।।
अरे हंसा सो ही जो हंसगत् चालें।
चीलर पांव न मेले–रे–रे राम।
साधु सो ही जाके घट उजयारा।
अक्ल, कला मांहि खेले जी।
मिलना होवहि तो मिलोरे भाई साधो।
ये ही मिलन दा वेला राम।
मानुष जन्म हीरो हाथ न आवे।
फिरहै चौरासी लख फेरा राम।
मिलना होवहि तो मिलोरे भाई साधो.....।।

प्रेम से बोलो हरे राम। "हंसा सो ही जो हंसगत् चाले।" जो हंसो की प्रकृति चलता है जो हंस मछली खावे उसे हंस कहेंगे ? जो कीड़ा खावे उसे बगुला कहेंगे ? आप सारे हंस हो हंस कहां रहता है? मानसरोवर में।

ये सत्संग मानसरोवर है, हंस इसमें मोतीलाय।
संत सीपी मोती वचन, गुरुमुख चुगते ताय।।

हे मेरे मन। आप हंस बन जाओ। सच क ग्रहण करो। गन्दगी का नहीं ग्रहण करो। मीठ बोलो। कड़वा मत बोलो। कौआ मत बन जाओ "साधु सो ही जाके घट् उजयारे।" महात्मा नाम लक्षण और स्वभावों का। याद करना। अकल कल में खेलता है अभेदी, निरपक्षीय होकर के खेलता है ये सत्गुरु महाराज दूसरे महात्मा भी बहुत है। सत्गु महाराज अभेदी, निरपक्षीय था। अभी भी गुरु महारा के कृपा से हरिद्वार में प्रेम से बोलो हरे राम। ए महात्मा ने मुझे कहा–एक भण्डारा हुआ। नाम त उसका भूल गया हूँ। मेरे को कहने लगा। महारा हआप जो प्रेम प्रकाश मण्डल है हम क्या कहें–इस हरिद्वार में कभी कठे नहीं खाते हैं पंगत में नहीं खा हैं। वैरागी दूसरी पंगत नहीं बिठायेंगे। प्रेम प्रका मण्डल में देखा है। सन्यासी, वैरागी, नाथ उदासी ज भी पंथ सारे कट्ठे खाते हैं हरिद्वार में। उसी दि 300 महात्मा आये थे। गुरु महाराज अभेदी था। मेरे मन। अभेदी हो जाओ। भेदवाद छोड़ो। सारे मे आत्मायें हैं।

जिन्ना सबक अलख दा पढ़ियां, हौर तिसे क्या पढ़ना है
नाल अपने जंग जिनादी, किसे साथ क्या लड़ना है।।
बांय भ्रिप के जड़दे जेड़े, फिर उनाखी सड़ना है।
धर्मदास जिस सांई सुझाता है, फिर मजहब क्यूं पड़ना है

प्रेम से बोलो हरे राम। महात्मा नाम है अभे का। प्रेम से बोलो हरे राम। "मिलना है तो मिलो मे साधो यही मिलण की वेला है" हे मेरे मन। अभ मिलाने वाले ऋषि, मुनि महात्मा मण्डल बहुत आ हैं। आपको भगवान से मिलायेंगे। प्रेम से बोलो ह राम। ये भजन यहाँ रख देता हूँ। ये कथा यहाँ र देता हूँ। बाकी इस भजन में यह रहा है कि अप ईड़ा पिंगला को जगाओ। सुना, योग मार्ग में, ए नियम आपको सुनाया। यम आपको सुनाया। जा ईड़ा जागे पिंगला, जागे सुरता, जागे मंगला। सुरत से जागकर पांच इन्द्रियों से मिलकर के मंगला आरती उतारें। यह भजन सब सुबह को पल्ल होगा। तभी पूरा होगा। जितने प्रेमी बैठे हो अ पल्लव पाओ। सारी कामनायें अभी गुरु महाराज बै है।

–ज्योति खत्री, जयपुर स

त्वामी शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

सत की इच्छा, असत का त्याग

(सद्‌गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के प्रवचनों से)

एक राजा था जिसकी तीन रानियां थीं–पुराने जमाने में राजा लोग एक से ज्यादा पत्नियां रखते थे। एक बार राजा को किसी कार्यवश किसी दूसरे देश में जाना पड़ा। जब राजा के आने का तय हुआ तो रानियों से दूत भेजकर पूछा कि इस देश से उन्हें क्या चाहिये। बड़ी और मंझली रानी ने अपनी अपनी इच्छा लिख भेजी पर छोटी रानी ने अपने पति राजा को देखने की लालसा प्रकट की। राजा इतना खुश हुआ कि बस उड़कर रानी के पास पहुंच जाना चाहता था।

राजा ने आते समय बहुत सारी भेंटें जो रानियों ने लिखी थीं, खरीदीं। आते ही सब उन दोनों रानियों को दे दीं मगर राजा खुद छोटी रानी के पास गये साथ में बहुत सारी भेंटे भी ले गये। इस पर दोनों रानियों ने अपनी नाराज़गी दिखाई। तब राजा ने उन्हें बताया कि जो कुछ आप ने मांगा था मैं ले आया पर इस, तुम दोनों से छोटी रानी ने और कुछ न मांगकर सिर्फ मुझी से मिलना चाहा इसलिये पहला अधिकार मुझ पर छोटी रानी का ही है।

नसीहतः प्रभु परमात्मा की भक्ति करने से रिद्धियां सिद्धियां तो प्राप्त होती ही हैं मगर इच्छाएं, तमन्नाएं समाप्त होके प्रभु परमात्मा की पावन गोद नसीब होती है। संसारी नाशवान चीजें न मांगके सत वस्तु की ही इच्छा करनी चाहिये।

"पाप जो पिता लोभ"

एक ब्राह्मण काशी से विद्या पढ़ कर वेद शास्त्रों का ज्ञाता हो गया। एक दिन उसकी पत्नी ने एक शंका का समाधान पूछा कि पाप का पिता कौन है? ब्राह्मण पति को इसका जवाब न सूझा और जवाब ढूंढने के लिये निकल पड़ा दुनिया के दौरे पर और जुदा–जुदा विद्वानों से पूछने लगा। एक वैश्या ने उसका ये सवाल सुना और अपनी दासी को भेजकर ये कहलवाया कि जितने दिन इस शहर में हो खाने की सामग्री और भेंटा मेरे से लेने की कृपा करें। ब्राह्मण ने स्वीकार किया। बोलो सतनाम साक्षी, जयश्री कृष्ण।

एक दिन वैश्या ने ब्राह्मण को घर बुलवाया और सामग्री और भेंटा देके अर्ज़ किया कि भले ही वे खाना खुद बनायें मगर उसके ही यहां खाना बनाके खायें। उसी दौरान वैश्या ने ब्राह्मण से वही सवाल दुहराया। वैश्या ने ही जवाब बताया कि पाप का पिता है लोभ और इस बात को खुला करके कहा कि ब्राह्मण को मेरे घर नहीं आना चाहिये था परन्तु लोभ के वशीभूत होकर ही आप मेरे घर आये–न सिर्फ इतना बल्कि खाना भी खाया और भेंटा भी ली–ये ही लोभ है जिसने ब्राह्मण को अपने संस्कार भुला देने पर मजबूर कर दिया। बोलो सतनाम साखी, जय श्रीकृष्ण

"राम नाम जी महिमा"

ग़ाल्हि आहे अकबर बादशाह जे जमाने जी। अरब देश जे राजा जो हिकड़ो ई पुट राह रबानी थी वियो। राणी विरलाप करे पे रुनी अैं हंजूं हारियूं जेको राजा खाँ बि सठो कोन थे वियो। आखिर राजा लाश खे तेल अैं सुगंध में रखी विध्वानन, वज़ीरन अैं पंण्डतिन खे चयो छोकरे खे जीआरण लाइ।

बाकी सबनी त पंहिंजी मजबूरी ज़ाहिर कई पर हिक वज़ीर फेजल नाले साल जी राजा खाँ मोकल वठी हिन्दुस्तान लाइ रवाना थियो (हिन्दुस्तान जे फकीरन अैं सन्तनि जे मटि दुनिया भर में कोई न आहे) अैं अची अकबर बादशाह जो मेहमान थियो। अकबर बादशाह वज़ीर जो खूब आदर सत्कार कयो। अकबर बादशाह पंहिंजे वज़ीर बीरबल खे चयो पतो

करण लाइ त कहिड़े कम सां आयो आहे फेज़ल। फेज़ल पंहिंजो कम बुधायो।

बीरबल फेज़ल खे टिन दरवेशन जा नाला बुधाया जिन में मुड़दे खे जीआरण जी ताकत हुई।

1. सूरदास–अयोध्या
2. तुलसीदास–वृंदावन
3. कबीर–काशी

सूरदास और तुलसीदास महाराज त अयोध्या अैं वृंदावन न छद॒ण जी मजबूरी बुधायी बाकी कबीर साहिब अरब देश वियो अैं राजा जे दरबार में वञी राम नाम जी धुनी लग॒ायी अैं मुड़दे जे कन में राम नाम जो मन्त्र फूके चयो त "खुदा जे हुकम सां उथु" पर मुड़दो न उथियो। कबीर साहिब वरी चयो त "मुंहिंजे हुकम सां उथु" त मुड़दो उथी खड़ो थियो। सभा जा सभु माणहु अजब में पइजी वया त ही कहिड़ो इसरार।

तंहिंते कबीर साहिब समुझाणी दि॒नी त भगवान पाण खाँ वधीक पंहिंजे भगि॒तन जो शानु रखंदो आहे–भगि॒तन खे मथे रखंदो आहे। भग॒वान राम पाण आसणु विछाए हेठि वेहंदा हुआ अैं भग॒वान जा भग॒त बांदर मथे वणन ते वेहंदा हुआ। राम खां वधीक राम जे नाले में शक्ति आहे।

"टिन किस्मन जा इन्सान"

राजा विक्रमादित्य जे दरब॒ार में हिकु राक्षस टे खोपिरयूं खणी आयो अैं चवणो लगो त तव्हांजे दरब॒ार जे पण्डितनि जो नालो बुधो आहे त का विद्वान आहिन, इन करे बुधाइन कहिडी खोपड़ी सु आहे न त मां पण्डितनि खे मारीदुंसि। राजा राक्ष खाँ हफ्ते जो टाईम वरतो अैं हफ्ते खां पोई पण्डि रामशास्त्रीअ बुधायो त कहिड़ी खोपड़ी सुठी आहे राक्षस उन जी बि समुझाणी घुरी त जेका खोपड़ी सुठी समुझी रहियो आहे, कहिड़े ख्याल खाँ ? उन समुझाणी पण्डित हीअ दि॒नी :

1. जंहिं खोपड़ीअ जे हिक कन माँ, लोह शीख वञी ब॒े कन माँ निकरी अचे उहा ख खोपड़ी।

2. जंहिं खोपड़ीअ जे हिक कन माँ, लोह शीख वञी वात माँ निकिरी अचे उहा विचोली खो

3. जंहिं खोपडीअ जे हिक कन माँ, लोह शीख वञी हिरदे में समाइजी वञे उहा तमाम खोपड़ी।

एतरो बुधी राक्षस शर्मसार थियो अैं दरबार हल्यो वियो।

नसीहतः 1. सत्संग बुधी, वेदशास्त्र पढ़ी जेक कन खां कढी छदे॒ उहो अधम इन्सान।

2. जेको बुधी कद॒हिं कद॒हिं वात सां व्याख्या ब॒े खे बुधाए, उहो न सुठो न खराब, विचोलो

3. जेको बुधी करे हिरदे सां हंडाए अैं अमल उहो तमाम सुठो।

–किरण सदारंगानी, न्यूयाव

शोक–समाचार

प्रेम प्रकाश सन्देश के अहमदाबाद प्रतिनिधि श्री सुरेश कुमार पुत्र श्री मूलचंद पंजवानी (353 नयन नगर, सहजपुर बो अहमदाबाद) लगभग 35 वर्ष की अल्पायु में 28 मई 2002 मंगलवार को अपनी दैहिक यात्रा पूरी कर श्री सद्गुरु महाराज श्रीचरणों में सर्वदा के लिये लीन हो गये। श्री सुरेश कुमार पंजवानी ने जीवन पर्यन्त सद्गुरु महाराज के प्रति अनन्य निष्ठ रखते हुए अन्त वेले में भी सत्नाम साक्षी का सुमरण करते हुए ही अमरापुर धाम की और प्रस्थान किया। श्री सुरेश कुम पंजवानी "स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति ग्वालियर" के संस्थापक सदस्यों में से थे। प्रेम प्रकाश संदेश के सम्पादक श्रीच पंजवानी के चचेरे भाई श्री सुरेश पंजवानी की आत्मा की शान्ति के लिये स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति ग्वालियर व प्रेम प्रका संदेश परिवार सद्गुरु महाराज से प्रार्थना करता है।

सद्गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन निबन्ध प्रतियोगिता व चालीसा स्मरण प्रतियोगिता

इन दोनों प्रतियोगिताओं की अन्तिम तिथि 25 जून से बढ़ाकर 30 जून तक कर दी गयी है। चालीसा स्मरण प्रतियोगित में अधिकतम आयु सीमा भी 20 वर्ष करदी गयी है। ऐसी जानकारी सन्त मोनूराम जी द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश को दी गयी है

...ंक्षिप्त जीवनचरितामृत

जन्मशती वर्ष 2001–2002

श्री स्वामी जयप्रकाश जी महाराज

परम श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद योगीराज ...ाचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा ...थापित प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय वस्तुतः अपने आप में ...क दिव्य व अलौकिक संस्था है, जो आज सारे विश्व ... अपनी एक अलग छाप छोड़ता है। इसका एक ...ारण भी है। कर्म, भक्ति, ज्ञान के समन्वय से ...ुसज्जित एवं दीक्षित इस सम्प्रदाय ने सम्पूर्ण विश्व ...ो ऐसे उत्तम पुरुष दिये, जिन्होंने अपने सरल व ...िःस्वार्थ उद्बोधनों द्वारा असंख्य भूले भटके जीवों ...ो परम शाश्वत का मार्ग प्रशस्त किया है।

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के इन संत, महापुरुषों ...ी प्रवाहित संत धारा में एक परम तेजस्वी महापुरुष ...ए जिन्हें पूरा संतमण्डल एवं दिल्लीवासी **'स्वामी ...यप्रकाश'** के नाम से स्मरण करते हैं। पूज्य स्वामी ...ी का जीवन बड़ा दिव्य व पुरुषार्थी था। पूज्य ...ामी जयप्रकाश जी महाराज का जन्म गढ़ी ...सीनशिकारपुर (सिंध) में सम्वत् 1957 अषाढ़ शुक्ल ...योदशी दिनांक 30 जून 1901 सोमवार के दिन ...आ था। पूज्य स्वामी जी के पिता का नाम बहवारी ...म व माता का नाम श्रीमती अदणबाई था। पिताजी ... साया बचपन में ही चले जाने से पूज्य स्वामी जी ...वल प्राथमिक शिक्षा ही ग्रहण कर सके। स्वामी जी ... म्यूनिसिपल में दरोगा के पद पर सरकारी नौकरी ... मिली।

...वामी जी की सत्गुरु महाराज से भेंट एवं उनमें दृढ़ विश्वास

स्वामी जी बचपन से ही परमात्मोन्मुखी थे। ...प सदैव प्रभु की भक्ति में निमग्न रहते थे। जैसे ...से समय बीतता गया, वैसे वैसे आपकी भक्ति भी ...म पराकाष्ठता पर पहुंचती गयी। स्वामी जी एक ... पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के ...संग में बैठे थे कि सत्गुरु महाराज ने स्वामी जी को अपने पास बुलाया और कहा कि सेवा करोगे इतना सुनते ही स्वामी जी ने अपने आप को भाग्यशाली मानते हुए गुरु आज्ञा शिरोधार्य की। पूज्य स्वामी ज़ी को सेवादारी की सेवा मिली। निरन्तर सेवा में लगे रहने से एवं कुछ अविस्मरणीय घटनाओं के घटित होने से उनका सत्गुरु महाराज में अटूट विश्वास कायम होता गया और कुछ समय के उपरान्त उन्होंने सरकारी पद को त्याग दिया और पूर्णतया अपने आप को सतगुरु महाराज के श्री चरणों में समर्पित कर दिया। कहते हैं कि 'एक प्यास काफी है, समुद्र तक जाने को' अब यह भक्ति रूपी प्यास इतनी बढ़ गयी कि उन्हें एक दिन स्वप्न में सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने दर्शन दिये। उस परम तेजस्वी स्वरूप का साक्षात्कार कर वे गद्गद् हो उठे। तो इनकी भक्ति एवं वैराग में और भी अधिक तीव्रता आने लगी। संसार की नश्वरता और अधिक दृढ़ होने लगी। अब वे संसार की व्यर्थ की बातों से मन को हटाकर सदैव श्री गुरु महाराज के उस परम तेजस्वी स्वरूप का चिंतन करने लगे। पूज्य स्वामी जी के घर का नाम श्री मोटूराम था, बाद में सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने उन्हें बेरव देकर, एवं नाम परिवर्तन कर 'स्वामी जयप्रकाश' रखा। एक दिन स्वामी जी सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज की मूर्ति के सामने ध्यानमग्न थे तभी सत्गुरु महाराज ने दर्शन दिये एवं आज्ञा दी कि आप सिंध छोड़ कर हिन्दुस्तान जाओ। तब स्वामी जी ने श्री गुरुवर महाराज जी की आज्ञा को शिरोधार्य कर कहा जैसी आपकी आज्ञा।अब स्वामी जय प्रकाश जी महाराज सिंध छोड़कर सबसे पहले गुजरात के अहमदाबाद नगर में आए, वहां सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज के मेले का सफल आयोजन किया। मेले के समापन के पश्चात पूज्य स्वामी जी हरिद्वार

पधारे। यहाँ हरिद्वार में श्री प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन समारोह था, यह सन् 1948 की बात है।

पूज्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (द्वितीय गद्दीनशीन) की आज्ञा से स्वामी जयप्रकाश जी महाराज भाई जेठानन्द के साथ दिल्ली आ पहुंचे। शुरूआती दिनों में स्वामीजी, भाई जेठानन्द जी के घर में निवास करने लगे। वहीं पर घर के बाहर हवेली में सर्वप्रथम प्रेम प्रकाश सत्संग मण्डली का श्री गणेश किया गया। अब सत्संग का प्रचार प्रसार इतना बढ़ गया कि प्रेमियों की उत्तरोत्तर संख्या बढ़ने लगी। इसको देखते हुए वहां स्थान की कमी पड़ने लगी। अब स्वामी जी स्थान की तलाश करते--करते शक्ति नगर आ पहुंचे। वहां पर बांस के सहारे एक पूजा स्थल बनाया। परन्तु सुबह आकर देखा कि वहां बांस वगैरा नहीं थे। तब स्वामी जी ने विचार किया कि शायद गुरु महाराज की इच्छा इस स्थान की नहीं है। अतः उन्होंने बिना किसी से वादविवाद किये उस स्थल को त्याग दिया।

लेकिन स्वामी जी इससे जरा भी निराश नहीं हुए। अपितु जिनकी भक्ति दृढ़ होती है वे सारा कार्य स्वयं पर न छोड़ते हुए भगवान पर छोड़ते हैं एवं उनकी सारी व्यवस्थाऐं स्वयं भगवान ही करते हैं। गीता में भी भगवान की ऐसी घोषणा है यथा--योगक्षेम वहाम्यहम् (गीता 9/22)

अब स्वामी जी ने स्थायी स्थान की तलाश में घूमते--घूमते दिल्ली के 'मलकागंज' क्षेत्र में प्रवेश किया।

मलकागंज में प्रेम प्रकाश धाम की स्थापना

भारत की राजधानी दिल्ली और इस दिल्ली के पुरानी सब्जी मण्डी, मलकागंज क्षेत्र में श्री प्रेम प्रकाश धाम की स्थापना 54 वर्ष पूर्व स्वामी जयप्रकाश जी महाराज के अथक प्रयासों एवं श्री सद्गुरु महाराज की असीम कृपा से की गयी। अब स्वामी जयप्रकाश जी महाराज इस क्षेत्र को अपनी तपःस्थली मानते हुए यहां एक झुग्गी झोंपड़ी बनाकर उसे प्रेम प्रकाश धाम का प्रारूप प्रदान कर, यहीं पर भजन, सत्संग प्रारम्भ कर दिया परंतु परमात्मा को कुछ और ही मंजूर क्योंकि जिस स्थान पर उन्होंने धाम बनाया था स्थान किसी विद्यालय का था, जिसे बाद में छोड़ना पड़ा। फिर वहां से थोड़ी दूर पर एक स्थान पर उन्होंने एक नया धाम बनाकर भ कीर्तन प्रारम्भ किर दिया। कहते हैं कि पारमा कार्य में अनेक बाधाऐं आती हैं। परन्तु महापुरुष बाधाओं को भगवत लीला समझकर संयम व धैर्य धारण करते हुए, अपने लक्ष्य में शीघ्र सफल हो हैं। वह दूसरी जगह भी किसी गुरुद्वारे की थी, वे लोग भी परेशान करने लगे। स्वामी जी ने स पूर्वक उस स्थान को भी खाली कर दिया, प हिम्मत को नहीं छोड़ा। अतः उन्होंने फिर से एक स्थान, जहां आजकल नवनिर्मित आश्रम है, धाम निर्माण किया। प्रेमियों की सहायता से दो प कमरों का भी निर्माण करवाया। परंतु अब दू समस्या खड़ी हुई थी। वह थी प्रशासनिक हठधर्मि सरकार की ओर से इन कमरों को गिराने का नो आने लगा। प्रशासनिक अधिकारियों ने ट्रेक्टर द्वारा इन पक्के कमरों को तोड़ने की कोशिश परन्तु अब संसार की बाधाओं का खेल खत्म होने आ गया था। अब महापुरुषों के तप का बल कार्या होने लगा। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि जब अधिकारी उन कमरों को गिराने के लिये ट्रेक्टर लाते तब ट्रेक्टर की नोक वहां पानी के पाइप में फंस जाती और कार्य ठप्प हो जाता था। जिसके कारण अ सामान्य नागरिकों को परेशानियों का सामना क पड़ता था। प्रशासन के इस हठपूर्वक रवैये से आसपास की जनता भी नाराज थी। अंततः सित 1950 में प्रशासन को मजबूर होकर मंदिर को मं देनी पड़ी। प्रशासन के इस निर्णय को सुनकर प्रेमीजन, सामान्य नागरिक खुशी में आकर सद महाराज की जय--जयकार व यशोगान करने ल

मन्दिर की स्थापना के उपरान्त, श्री प्रेम प्रक धाम, मलकागंज में प्रतिवर्ष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम

हाराज का वर्सी उत्सव, जन्मोत्सव व अन्य मुख्य र्मिक उत्सव बड़े धूमधाम से मनाए जाने लगे।

स्वामी जी द्वारा भक्ति पुस्तकों की रचना

कुछ समय पश्चात पूज्य स्वामी जी के मन में चार आया कि हमारे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी हाराज की बहुत सी वाणी रचित है। और उस णी का श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ भी बन चुका है फिर सद्गुरु महाराज सत्संग में अपनी वाणी के तिरिक्त अन्य पूर्व महापुरुषों की वाणी को भी बहुत कहते थे, इसलिये पूज्य स्वामी जी ने मन में यह ानी कि सद्गुरु महाराज ने दिल्ली में जो कुछ मत्कार दिखाये हैं, उन चमत्कारों के साथ में उन हापुरुषों की कुछ वाणी भी लिखें। अंततः सन् 963–64 में पूज्य स्वामी जी ने ज्ञान सागर भाग–1, 2 की रचना की एवं इस पुस्तक को पूज्य सद्गुरु हाराज के चरणों में समर्पित किया। लेकिन स्वामी ी को चैन कहां ? सन् 1965 में ज्ञान सागर भाग–3 ी रचना कर डाली। इस पुस्तक में पूज्य स्वामी जी प्राणी मात्र के कल्याण के लिए मन में शान्ति रखने ी विधियों और युक्तियों तथा सद्गुरु महाराज के खार्विन्द से उच्चारण किये हुए श्लोक अंकित किए ये हैं। इसके अतिरिक्त पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों ो शिक्षा देने के लिए ऐसी सुन्दर गाथाऐं इस पुस्तक लिखी हैं, जिनका मनन, और निदिध्यासन करके म लोग सच्चे सुख को पाकर अपना जीवन कृतार्थ र सकते हैं।

पूज्य स्वामी जी ब्रह्मलीन

पूज्य स्वामी जयप्रकाश जी महाराज दिनांक 1 सम्बर 1975 सम्वत 2031 मार्गशीष कृष्ण त्रयोदशी दिन गुरुधाम अमरापुर स्थान जयपुर में अपने इस ञ्चभौतिक देह का त्याग करके आचार्य सद्गुरु ामी टेऊंराम जी महाराज के चरणार्विन्दों में लीन गये। हमारा पूज्य स्वामी जी के श्री चरणों में टि–कोटि प्रणाम।

–सन्त जयदेव, प्रेम प्रकाशी
प्रेम प्रकाश धाम, मलकागंज, दिल्ली

81 वें चैत्र मेले के अवसर पर सद्गुरु महाराज जी से संबंधित 20 वस्तुओं का विमोचन

मेले के अन्तर्गत "पूज्य महाराज श्री" से संबंधित इन सभी वस्तुओं का विमोचन हुआ। (ये सभी श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर उपलब्ध हैं।)

1. सोने के लॉकेट्	22 सौ रू.–28 सौ रू.
2. सतनाम साक्षी स्टीकर (रेडियम)	30 रू.
3. लाईट बोर्ड (गुरुमहाराज की तस्वीर वाले)	200 रू.–500 रू.
4. सत्नाम साक्षी धुनि यंत्र (24 घण्टे बजने वाला)	250 रू.
5. दैनिक कैलेण्डर (1 से 31 तारीख, अनमोल वचन)	20 रू
6. जन्म साखी (सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज)	3 रू.
7. प्रार्थना आरती (पुस्तक)	3 रू.
8. ब्रह्मदर्शनी (अग्रेंजी पुस्तक)	51रू.
9. सद्गुरु टेऊँराम चालीसा (छोटी पुस्तक)	1रू.
10. स्टीकर (चारों स्वामी जी के)	2 रू.
11. पेन	10, 12, 15 रू.
12. सतनाम साक्षी बनियान	30 रू.
13. पावन अमरापुर दर्शन (वीडियो कैसेट)	100 रू.
14. अमरापुर वाणी (3 भजन कैसेट)	50 रू
15. भजन सुमन (गुरु महाराज की महिमा भजन कैसेट)	20 रू.
16. सद्गुरु टेऊँराम जीवन कथा (कमला केसवानी के स्वर में दो कैसेट सेट)	40 रू.
17. भजन सुधा (स्वमी भगतप्रकाश जी महाराज)	20 रू
18. ए मन चल तू अमरापुर (वी.सी.डी.)	100 रू.
19. प्रेम प्रकाश संदेश (चैत्रमेला अंक)	50 रू वार्षिक
20. चैत्र मेला (वीडीओ कैसेट)	150 रू.

सूचना

आस्था चैनल द्वारा 16 जून को दोपहर 12:30 बजे एवं रात्रि 10:00 बजे जयपुर चैत्र मेले का प्रसारण किया जावेगा।

कहानी

चिकना घड़ा

(श्रीमती बलवीर 'बीर')

मेरे पति का एक विचित्र स्वभाव यह था कि यदि कोई उनसे अपनी दुःखभरी दर्दभरी बात सुनाकर सहायता के लिये कहता तो उनका हृदय एकदम द्रवित हो जाता और उसके दुःख निवारण के लिये वे इतने उतावले हो जाते कि जब तक उसका कोई हल ढूंढ न लें, तब तक उन्हें चैन नहीं पड़ती। ऐसा करने में कई बार उन्होंने रूपये–पैसों के अतिरिक्त तन के कपड़े तक उतारकर लोगों को दे दिये थे।

उनके ऐसे व्यवहार के कारण मैं कई बार उनसे उलझ पड़ती थी और कहा करती–'हम गृहस्थ हैं, त्यागी नहीं हैं। इस तरह करते रहने से हमारा घर उजड़ जायेगा, परंतु मालूम नहीं आपके अंदर यह कमजोरी क्यों घर कर चुकी है। इसका अन्त अच्छा नहीं होगा। इस तरह अपने–आप को लुटाते रहना बुद्धिमता नहीं है।'

बार–बार ऐसा समझाने पर भी उन पर कुछ असर नहीं होता था और मेरी फटकार को हंसी में उड़ाते हुए वे कह देते–'तुम पगली हो! सुनो! जब मैं पैदा हुआ था, तब अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं आया था और जब मैं बहुत छोटा ही था, तभी मेरे माँ–बाप की छाया मेरे सिर से उठ गयी थी और तब मैं अनाथ रह गया था। अब......अब.....कई दयालु सज्जनों की दया के कारण ही मैं इतना बड़ा हो गया हूँ.......भगवान् ने मुझे कितना बड़ा व्यापारी बना दिया है।.......ये सब वस्तुऐं मेरी नहीं हैं......भगवान की देन है। इसलिये भगवान के बंदों का इनमें थोड़ा–बहुत अधिकार होना ही चाहिए।

संसार में रहकर मुझे उनकी ऐसी साधुओं–सरीखी बातें बहुत बुरी लगा करती थीं। विशेषकर इसलिये कि मैं इसे उनकी मानसिक कमजोरी के सिवा और कुछ नहीं समझती थी। इसीलिए मैं उनके ऐसे विचारों से कभी भी सहमत नहीं होती थी और सदैव विरोध में कहती–'हमारे भी बाल–बच्चे हैं, हमें उनकी भी चिन्ता करनी है। आप हैं कि जो भी आता है, उसके लिये पागल हो उठते हैं। इस तरह का आदमी तो मैंने आजतक कोई नहीं देखा। यदि आप ऐसे ही करते रहे तो इसका बहुत बुरा परिण भोगना पड़ेगा। संसार में रहकर व्यावहारिकता व हाथ से नहीं खो देना चाहिये।'

मेरा ऐसा तर्क सुनकर वे तड़प उठते अ झल्लाकर कहते–'क्या तुम्हारा यह मतलब है ि बस मेरा संसार अपने घर के इर्द–गिर्द ही घूमते–घूम समाप्त हो जाना चाहिये ? यह तुम्हारी संकीर्ण–हृदय है। चूंकि मनुष्य अभी तक अपने घेरे से बाह निकलना सीख नहीं पाया है, यही कारण है ि दूसरे मनुष्यों का दुःख–दर्द जानने वाले संसार कम देखने में आते हैं। स्वार्थपरता का जोर बढ़ र है और मानव मानव को बचाने के बदले उसका ग काटता जा रहा है.....तुम्हें मेरे साथ रहना कु सीखना होगा।'

'सीखने–सिखाने की कोई भी सीमा होती है मैं जल–भुनकर कहती–'आपने कभी न यह देखा न सोचा है कि जो आपके पास आ रहा है, वह अस में अधकारी भी है या नहीं। लोगों को, आप दयालुता कहूं या कमजोरी–उसका ज्ञान हो चुका और वे उसका लाभ उठाते चले जाते हैं।

मैं सैकड़ों बार उन्हें इस तरह समझा–बुझाव थक सी गयी थी, परंतु वे ऐसे थे जैसे चुपड़ा हु घड़ा। प्रतिदिन अपनी आंखों से ऐसा होते देखव अन्ततः मैंने सोचा कि लड़ाई–झगड़ा करने से तो अपनी आदत बदलेंगे नहीं, इसलिये अब इन्हें अप शपथ दिलाऊँगी। मुझे पता था कि मेरी शपथ किसी हालत में भी ये उल्लंघन नहीं कर पायें क्योंकि इनकी जबान से प्रायः मैंने यह कहते सुना था–'यह सब तुम्हारा ही प्रताप है। तुम्ह कदम पड़ने पर ही लक्ष्मी मेरे ऊपर प्रसन्न हुई यदि तुम मुझे न मिलतीं तो मेरा जीवन मिट्टी मिल जाता। तुम्हारे लिये मैं सब कुछ करने को तैय हूँ, और मुझे अपने अन्तिम हथियार को आजमाने संयोग भी जल्दी ही मिल गया।

नवम्बर का महीना था। वे काम पर जाने अभी तैयारी कर ही रहे थे कि नीचे से किसी ने घं

बजायी। मैंने खिड़की से झांका। एक सांवले रंग का नौजवान खड़ा था। उसने पूछा–क्या बाबूजी घर पर हैं ?

एकाएक मेरे मन में एक शंका उत्पन्न हुई। सोचा, कुछ मांग लेकर आया होगा। मन में आया कह दूं कि वे घर पर नहीं हैं। मैं अभी ऐसा करने की बात सोच ही रही थी कि इन्होंने झट से नीचे ताका और जोर से पुकारा–'देवेन्द्र ! आ जाओ।'

वह कमरे में आकर बैठ गया। मैं कमरे से तो चली गयी, किंतु दीवाल के सहारे खड़ी होकर उनकी बातें सुनती रही।

देवेन्द्र कह रहा था–'बाबूजी। आपकी कृपाओं का मैं बहुत आभारी हूँ। आपकी कृपा से और आपकी सहायता से जो आप मेरी फीस के संबंध में करते रहे हैं, मैं आज बी.ए. की परीक्षा में पास हो गया हूँ।'

उन्होंने उसकी पीठ ठोंकी और उसे प्रोत्साहन देते हुए कहा–'अब तुम्हारा कष्ट का समय कट गया समझो। कहीं नौकरी लग जायेगी। चेष्टा करो।'

'बाबूजी !' देवेन्द्र ने नम्रतापूर्वक कहा–'आपकी बात तो ठीक है, परंतु नौकरी भी तो बिना सिफारिश के नहीं लगती।'

'चिन्ता मत करो। भगवान् करे तुम्हें नौकरी भी शीघ्र मिल जाये। मैं तुम्हारी किसी अच्छी जगह पर सिफारिश कर दूंगा......तुम मुझसे मिलते रहना।'

देवेन्द्र ने आंखों में कृतज्ञता लाते हुए कहा–'मैं आपका धन्यवाद किन शब्दों से करूं बाबूजी।'

'इसमें धन्यवाद करने की क्या बात है। तुम मेरे प्रिय हो, जहाँ तक मुझसे हो सकेगा, मैं तुम्हारी अवश्य सहायता करूंगा।'

'मैं आपको याद दिलाता रहूंगा। आपके बिना मेरा अमृतसर में और कोई भी तो नहीं है। सब रिश्तेदार अपने–आप में मस्त हैं। निस्संदेह वे सब खाते–पीते हैं, किंतु कभी किसी ने मेरी सहायता नहीं की। आपने जो मेरी सहायता आज तक की है, मैं जीवनभर भूल नहीं सकूंगा और सारी आयु आपका पानी......।'

इन्होंने उसकी बात काटते हुए कहा–'ऐसी बातें नहीं सोचनी चाहिये। मैं कौन हूँ जो किसी की सहायता कर सकूं। सब चक्र ऊपरवाला ही चलाता है।'

देवेन्द्र ने जाने से पहले कहा–'बाबूजी!एक.... अर्ज करूं।' 'हाँ, हाँ! झिझक किस बात की?'

देवेन्द्र ने रूकते–रूकते कहा–'मेरे पास जो रजाई है, वह चार–पांच साल हुए बनवायी थी.....और अब बिलकुल फट चुकी है.......उससे मैं आजकल इस सख्त सर्दी में अकड़ जाता हूँ.....एक रजाई यदि मिल जाये.....तो इस सर्दी से बच जाऊँगा......नहीं तो.....।'

एक क्षण कुछ सोचकर उन्होंने कहा–'कल दोपहर को दुकान पर आना, मैं तुम्हारे लिये रजाई का प्रबन्ध कर दूंगा।'

देवेन्द्र जब चला गया, तब मैंने इस विषय पर उनसे पर्याप्त नोक–झोंक की, किंतु वे हारने वाले कब थे। अन्ततः मैंने अन्तिम तीर चलाया। अपनी शपथ दिलायी। उन्होंने उत्तर में मुझे आश्वासन देते हुए कहा–'मैं तुम्हारी शपथ करता हूँ कि बाजार से रजाई खरीदकर नहीं दी जायेगी।'

मुझे उस दिन पहली बार अपनी विजय पर प्रसन्नता हुई थी, परंतु उन्होंने जो शपथ की थी, वह तो मुझे बाद में पता चला कि वह एक ऐसी शरारत थी जो वकील लोग बातें करते समय किया करते हैं। देवेन्द्र के आने के दूसरे दिन हमलोगों को दिल्ली उनके बड़े भाई की लड़की के विवाह में जाना था। मैं दोपहर को सब सामान तैयार करके बिस्तर आदि बांधकर अपने मैके जब मिलने गयी, तब रास्ते में इन्हें कहती गयी कि आप शाम को घर पर जल्दी आ जाना। मैंने देखा कि देवेन्द्र उस समय उनके पास बैठा था। उसे देखकर न मालूम मुझे उस पर क्यों क्रोध आ गया था।

दिल्ली पहुंचकर जब रात को बिस्तर लगाये गये तो इनकी रजाई का वहाँ कुछ पता न चला, बहुत से लोग आये हुए थे। मैनें सबकी रजाइयाँ एक–एक करके उलट–पुलट करके देखीं, किंतु इनकी रजाई सचमुच गुम थी। मैं बड़ी व्याकुल हो रही थी। मैंने स्वयं ही तो इनका बिस्तर तैयार किया था, फिर रजाई गुम कैसे हो गयी। रास्ते में हमने बिस्तर खोले ही न थे। जो कम्बल हमारे पास थे, उन्हीं से रास्ते में गुजारा हो गया था। मैं घबरायी कि इन्हें जब अपनी रजाई नहीं मिलेगी, तो ये मुझपर रूष्ट होंगे। एक शंका पैदा हुई–'सम्भवतः मैं

जल्दी–जल्दी में अमृतसर ही भूल आयी हूंगी।'

रात को जब इनके भाई के घर से नयी रजाई लेकर इनके बिस्तर पर रखी तो सोते समय इन्होंने मुझसे सरलतापूर्वक पूछा–'मेरी रजाई कहाँ है।'

मैंने डरते–डरते उत्तर दिया–'बिस्तर बांधते समय सम्भवतः मैं अमृतसर ही भूल आयी हूँ।'

'वाह! तुम भी बड़ी चतुर स्त्री हो।' उन्होंने भोले भाव से कहा–'मेरे साथ तर्क–वितर्क करने में तो कभी भूल नहीं करती हो और इतनी बड़ी रजाई वहाँ कैसे भूल गयीं ?'

मैं हारे हुए सिपाही के सदृश्य थी, क्या उत्तर देती। सहसा मेरे मुंह से निकल गया–'अवश्य इसमें आपकी शरारत होगी।'

'मेरी शरारत। इस तरह थोड़े ही जीता जा सकता है ?' उन्होंने मुस्कराते हुए कहा।

मैं अभी कुछ उत्तर दे ही नहीं पायी थी कि जेठजी आ गये और मैं चुपके से वहाँ से खिसक गयी।

विवाह की भीड़–भाड़ में रजाई की बात मेरे दिमाग से उतर सी गयी थी। विवाह के बाद बाहर से आये हुए लोग जा रहे थे। भीड़–भाड़ कम हो रही थी। एक दिन दोपहर को पोस्टमेन कुछ चिट्ठियां फेंक गया। उनमें से एक चिट्ठी इनके नाम की भी थी। मैंने उसे खोल लिया। जब मैंने उसे पढ़ा तो मेरे विस्मय की कोई सीमा न रही। पत्र देवेन्द्र का था। लिखा था–

'पूज्य पिताजी। मुझे विश्वास है कि आप सब प्रसन्नता पूर्वक दिल्ली पहुंच गये होंगे। बहुत दिनों के बाद मैं अब रात को आराम से सोया करता हूँ। आपकी दी हुई रजाई से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे मैं आपके साथ ही सोता हूँ और आप मुझे थपकियाँ दे–देकर सुलाते रहते हैं। इस समय भी मैं इस निष्प्राण रजाई के तार–तार में आपके दर्शन कर रहा हूँ। ऐसा हो भी क्यों न! आपकी मेरे प्रति प्रीति सदा ही मिलावट से दूर रही है। यह रजाई आपके हृदय की भीतरी भावनाओं का जीता–जागता चित्र है।

पत्र समाप्त करते–करते न मालूम क्यों और कैसे मेरे नेत्रों में अलौकिक आनन्द और शान्ति के अश्रु छलछला आये, जिन्होंने मेरे हृदय के अन्तरतम तारों को झकझोर कर जन्म लिया था। उनकी रजाई ने एक गरीब प्राणी को कितना बड़ा सुख पहुंचाया था, यह सोचते–सोचते मेरी आत्मा उनकी महानता के आगे झुक सी गयी।

जब वे घर आये, तो मैंने वह पत्र उन्हें दे दिया। पत्र पढ़कर उन्होंने मुझसे हंसते हुए कहा–'अब तो खोयी हुई रजाई मिल गयी है न ?'

मेरी आँखों में अपार प्रसन्नता थी, फिर भी मैं उन्हें उनके सामने उठा न सकी। केवल इतना ही कह पायी–'आज से मैंने निश्चय कर लिया है कि कभी आपका विरोध नहीं किया करूंगी।' अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे पति चिकने घड़े के सदृश हैं।

मेरा उत्तर सुनकर वे मुस्कराकर बोले–'जो काम मैं अभी तक कर नहीं पाया था, मुझे प्रसन्नता है कि देवेन्द्र के एक ही पत्र ने वह काम कर दिखाया।'

आवश्यक सूचना

समस्त प्रेमियों के सूचनार्थ निवेदन किया जाता है कि ग्वालियर आश्रम से प्रेम प्रकाश मण्डल की हिन्दी मासिक पत्रिका प्रेम प्रकाश संदेश का ही प्रकाशन किया जाता है। श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का शेष साहित्य श्री अमरापुर स्थान द्वारा प्रकाशन–विक्रय होता है। पिछले दिनों देश के विभिन्न भागों से प्रेमी इस संबंध में पत्र–व्यवहार व मनीऑर्डर–ड्राफ्ट ग्वालियर कार्यालय में भेजकर सत्साहित्य भेजने का आग्रह करते हैं। प्रेम प्रकाश मण्डल की पुस्तकों (सत्साहित्य), कैसिट्स, इत्यादि के लिये प्रेमी श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर फोन : 0141–372423, 372424 पर सन्त मोनूराम जी से सम्पर्क करके उपरोक्त सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

–व्यवस्थापक–प्रेम प्रकाश संदेश

प्रेम प्रकाश मण्डली टोंक द्वारा चालीसा प्रार्थना–शिक्षा स्मरण प्रतियोगिता

टोंक प्रेम प्रकाश मण्डली टोंक द्वारा समस्त आयु जातिवर्ग के भक्तों के लिये सद्गुरु टेऊंराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इसमें प्रतियोगियों को चालीसा के साथ–साथ गुरु प्रार्थनाष्टक, सोलह शिक्षायें भी याद करके 5 जुलाई 2002 तक प्रेम प्रकाश मण्डली टोंक में सुनाना है। विजयी प्रतियोगियों को प्रथम–द्वितीय तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार दिये जावेंगे।

जलका औषधोपचार–एक आश्चर्य

(श्री गोविन्दाराम वासुदेव जी राठी)

बहुत सी बीमारियाँ केवल सादा जल सही पद्धति से पीने से ठीक हो जाती है। आयुर्वेद में इसे 'जल–चिकित्सा' कहा गया है। हमें देखना है कि यह प्रयोग किस प्रकार करने से शीघ्र तथा पूर्ण राहत मिलेगी। चर्चा करने के पहले यह देखेंगे कि इस प्रयोग से कौन–कौन सी बीमारियाँ ठीक होती हैं। इनमें–सिरदर्द, रक्तचाप, पांडु, आमवात, अर्धांगवायु, चर्बी बढ़ना, संधिवात, नाक की हड्डी बढ़ने से जुखाम रहना, नाड़ी की धड़कन बढ़ना, दमा, खांसी, पुरानी खांसी, यकृतके रोग, गैस, अम्लपित्त, अल्सर, मलावरोध, अन्न–नलिका में अंदर से सूजन, गुदा बाहर आना, बवासीर, मधुमेह, आमातिसार, टी.बी., पेशाब की बीमारियाँ, कान की बीमारियाँ, आँखों की बीमारी, खून आना तथा सूजन, गले के विकार, गर्भाशय के विकार, अनियमित मासिक धर्म, श्वेत प्रदर, गर्भाशय का कैंसर, स्तन की गांठ का कैंसर, मेदज्वर तथा अन्य छोटी–मोटी बीमारियाँ हैं।

उपर्युक्त बीमारियों के लिये सादा जल ही लाभदायक है। प्राणी के शरीर को चलाने वाली मुख्य मशीन पेट ही है। जल को सही तरीके से पीने से पेट की अंतड़ियाँ साफ होकर कार्यरत रहती हैं। इसलिये निम्न पद्धति से जल नियमित रूप से पीने से अनेक बीमारियाँ स्वतः ठीक हो जाती हैं–

प्रातःकाल उठते ही प्रतिदिन बिना मंजन किये केवल कुल्ला करके सवा लीटर (लगभग चार गिलास) जल एक साथ पीना चाहिए। जल पीने के बाद मंजन आदि कर सकते हैं। इतना जल एक साथ न पिया जा सके तो पहले पेट भर पीकर 4–5 मिनट वहीं पर चलकर शेष जल पी लें। बीमार एवं नाजुक स्वास्थ्य वाले व्यक्ति यदि एक साथ चार गिलास पानी न पी सकें तो पहले एक या दो गिलास पानी से प्रयोग शुरू करें। धीरे–धीरे बढ़ाकर चार गिलास तक आ जाएँ। इसके बाद पूरा पानी नियमित रूप से पीना जारी रखें। एक साथ इतना जल पीने से शरीर पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता है। शुरूआत के तीन दिनों तक पानी पीने के बाद थोड़ी देर में दो–तीन बार पेशाब अवश्य आयेगा, परंतु तीन–चार दिनों के बाद वह नियमित हो जायेगा।

जल ग्रहण करने के बाद पैंतालीस मिनट तक कुछ भी सेवन न करें। यह जल वक्रीकृत, चिपकी तथा सुस्त आँतों को साफ कर सक्रिय करता है। जिससे आँतों में पड़े अन्न (खाया हुआ) का सत्व आँतों द्वारा शोधित होकर उनका खून में रूपान्तर हो जाता है तथा पुराने खून की सफाई भी होती है। यह शुद्ध तथा नया खून शरीर में संचारित होकर शरीर के घटकों को दुरुस्त कर बलवान बनाता है और शरीर रोगमुक्त होता है। भविष्य में भी शरीर निरोगी बना रहता है।

यह तो हुई प्रातःकालीन जल–सेवन की विधि। भोजन करते समय या भोजन के बाद कब, कैसे और कितना जल पीना चाहिये इसकी चर्चा भी आवश्यक है, आइये, अब इस पर भी कुछ विचार किया जाये–

भोजन के दो घंटे बाद जल पीना चाहिये। बीच में उसके पहले न पियें। भोजन के समय जल पीने की ज्यादा आवश्यकता पड़े तो 100 मि.ली. तक ही पीना चाहिये। भोजन के बाद दो घूंट अन्न–नलिका साफ करने के उद्देश्य से पीयें। भोजन के बाद दो घंटे तक न रूक सकते हों तो एक घंटे बाद 200 मि. ली. जल ग्रहण किया जा सकता है। दो घंटे बाद आप कितना भी पी सकते हैं।

खाये हुए पदार्थ का पेस्ट बनने में लगभग 2 घंटे का समय लगता है। भोजन के समय गैस्ट्राईट नामक गैस भोजन को पचाने हेतु पैदा होती है। वही गैस भोजन का पेस्ट में रूपान्तर करती है। वह जल में घुलनशील है। भोजन के तुरंत बाद जल पीने से गैस जल में घुलने से अन्न का पाचन होने में कठिनाई होती है। ऐसी हालात में कच्चा अन्न आंतों में जाकर सड़न पैदा करता है, जिससे अम्लपित्त होता है। अम्लपित्त ही रोगों की जड़ है। इसलिये भोजन के तुरंत बाद जल नहीं पीना चाहिए।

रात्रि के भोजन के बाद बिस्तर पर जाते समय जल के अलावा कुछ भी सेवन न करें। सोने के एक

घंटा पहले खाना–पीना हो जाना चाहिये। दोनों समय भोजन के एक घंटा पहले भरपूर जल पीने से अग्नि प्रदीप्ति होकर भूख बढ़िया लगती है। जल अशुद्ध हो तो उबले जल का ही प्रयोग करें। दिनभर में कम–से–कम 6 लीटर जल तो पीना ही है, ज्यादा भी पी सकते हैं। शुरू–शुरू में 4–5 दिन कठिनाई रहेगी, बाद में सामान्य हो जायेगी। रोगियों पर इस प्रकार जल का उपयोग करने पर अनुभव यह हुआ कि इस प्रयोग से दो साल से कोई बीमारी नहीं आयी, बल्कि 10 किलो वजन बढ़ गया,? चर्बीवाले की चर्बी कम होकर वह सामान्य हो गया। रोगी सर्दी, जुखाम, खांसी और अजीर्ण से भी पीड़ित नहीं हुए।

कफ प्रकृति वाले को ठंडा जल नहीं पीना चाहिये। वात के रोगी को यह प्रयोग प्रथम एक सप्ताह तक रोजाना तीन बार करना चाहिये–सुबह और दोनों भोजन के एक घंटा पहले। इसके बाद रोजाना एक ही बार प्रयोग करें। वैसे हरेक को यह प्रयोग करने से पूर्ण लाभ मिलता है। यह प्रयोग जीवनभर करना हितकर है। सशक्त व्यक्ति के करने से आगे रोगी बनने की उम्मीद नहीं रहती। मलावरोध, अम्लपित्त, अग्निमान्द्य एक सप्ताह में तथा ब्लडप्रेशर, मधुमेह रोग में एक मास में आराम हो जाता है। इस प्रयोग से मनुष्य प्रफुल्लित और उत्साही बनता है। यह प्रयोग अमृत–स्वरूप है। और एकदम सादा बिना खर्चे का तथा निर्दोष है। कमजोर व्यक्ति भी कर सकता है। **(साभार–कल्याण)**

पद स्मरण प्रतियोगिता के सफल प्रतियोगी पुरस्कृत

श्री अमरापुर स्थान जयपुर 28 अप्रैल 2002–प्रेम प्रकाशियों के परम पावन पाठ ब्रह्मदर्शनी के 250 पद याद करके सुनाने के लिये प्रेम प्रकाशियों के पावन गुरुधाम श्री अमरापुर स्थान द्वारा "पद स्मरण प्रतियोगिता" का आयोजन सभी शहरों के सभी आयु वर्ग के प्रेमियों के लिये किया गया था। जिसमें अनेक प्रतियोगियों ने भाग लिया। इसमें निम्नांकित भाग्यशाली विजेताओं को 81 वें चैत्र मेले में 28 अप्रैल 2002 को श्री अमरापुर स्थान के भव्य सत्संग सभागार में देश–विदेश के हजारों प्रेमियों की उपस्थिति में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के कर–कमलों से पुरस्कृत किया गया।

स्वर्ण पदक विजेता

1.	लता किशनचन्द हासानी, मानसरोवर, जयपुर	(बालवर्ग)	12 वर्ष
2.	चन्द्रकांता भगवानदास, मंगोड़ी की बगीची जयपुर	(युवावर्ग)	22 वर्ष
3.	श्रीमती माया देवी, गुरुनानक कॉलोनी, जयपुर	(प्रौढ़वर्ग)	45 वर्ष

रजत पदक विजेता

1.	आशी लीलाराम रामानी, मानसरोवर जयपुर	(बालवर्ग)	16 वर्ष
2.	मीना भागवानी, सिन्धी कॉलोनी, जयपुर	(युवावर्ग)	21 वर्ष
3.	श्रीमती ऊषा सतवानी, निर्माण नगर, जयपुर	(प्रौढ़वर्ग)	38 वर्ष

कांस्य पदक विजेता

1.	बीना भागवानी, सिन्धी कॉलोनी, जयपुर	(बालवर्ग)	20 वर्ष
2.	गीता टहलयानी, सिन्धी कॉलोनी, जयपुर	(युवावर्ग)	24 वर्ष

सांत्वना पुरस्कार

1. राजेश कुमार केसवानी, नन्दपुरी, पुराना रामगढ़ मोड़, जयपुर 2. पुष्पा रामानी, मानसरोवर, जयपुर
3. जानकी भागवानी, कृष्णा नगर, ब्रह्मपुरी, जयपुर 4. योगिता सावनानी, जी.पी.ओ. कॉलोनी, जयपुर
5. निर्मला भागवानी, सिन्धी कॉलोनी, जयपुर 6. माया गुरुनानी, प्रताप नगर, शास्त्री नगर, जयपुर
7. मीना कलवानी, रामगढ़ मोड़, जयपुर 8. हरीश चंचलानी, मालवीय नगर, जयपुर
9. वर्षा अलवानी, अग्रवाल फार्म, जयपुर 10. लक्ष्मी, गुरुनानक, कॉलोनी, जयपुर
11. लक्ष्मी रामानी, मानसरोवर, जयपुर 12. विशाल सतवानी, निर्माण नगर, जयपुर
13. पिंकी चन्दवानी, सिन्धी कॉलोनी, राजापार्क, जयपुर 14. भानुप्रिया, पाकिस्तान

चैत्र मेला हर्षोत्साह के साथ संपन्न

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज द्वारा लोक कल्याण की भावना से 80 वर्ष पूर्व स्थापित वार्षिकोत्सव चैत्र मेला जो कि निरन्तर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा मनाया जाता रहा है। इस वर्ष भी यह मेला श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य "गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज" कीअध्यक्षता में पूज्य सन्तमण्डल के पावन सानिध्य व हजारों प्रेमियों की उपस्थिति में उल्लासपूर्वक व श्रद्धापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। आईए सर्वप्रथम उस पावन स्थल जिसमें कि यह महान उत्सव संपन्न हुआ उस स्थली की अनुपम सुन्दरता का दर्शन इस लेखनी के माध्यम से करें।

"श्री अमरापुर स्थान" चैत्र मेले में बड़े ही आकर्षक ढंग से सजाया गया। रंग बिरंगी लाईटिंग से भव्य द्वार के दोनों और सजावट की गयी थी। इस मनोहरकारी दृश्य को देखकर अन्दर प्रविष्ट होते ही श्री दरबार की सजावट देखकर प्रेमी सहसा मुग्ध होकर खड़े ही रह गये। दरबार के चारों और रंगबिरंगी पताकाऐं व विविध पुष्पों से श्री दरबार का कोना--कोना महक रहा था। भीतर प्रवेश करते ही दोनों और बने बगीचों में एक तरफ प्रेमियों की सुविधार्थ "बुक स्टाल" लगाया गया जिसमें सद्गुरु महाराज कीकैसेट, किताब फोटो आदि लगाई गयी। दायीं और यात्रियों की सुविधा के लिये स्वागत कक्ष बनाया गया था जिसमें आगन्तुक यात्रियों को समुचित सत्कार देते हुए आवास आसन उपलब्ध कराया जा रहा था।

चैत्र मेले की झलकियाँ

- तपती दोपहरिया के पश्चात् की गर्माहट के बावजूद पसीने पसीने हो रहे प्रेमी फिर भी उनका उत्साह–श्रद्धा शोभायात्रा में देखते ही बन रही थी।
- वायुयान से पुष्पवर्षा ध्वजावन्दन व शोभायात्रा का विशेष आकर्षण रहा।
- "भोले की बारात" सजीव झांकी–क्या प्रेमी क्या नगर वासी और क्या पत्रकार सभी ने इसे सराहा, पत्रकारों ने तो कवरेज करके राजस्थान व जयपुर के लगभग सभी समाचार पत्रों ने स्थानीय समाचारों में इसे रंगीन चित्र के साथ बाक्स में प्रकाशित किया।
- नन्हीं–नन्हीं बालिकाओं प्रिया व प्रीतिशर्मा का गायन व दिव्या रायसिंघानी, नीलम सेवानी का भजन पर लोकनृत्य देखकर उपस्थित दर्शनार्थी भावविभोर होकर भूरि–भूरि प्रशंसा कर उठे।
- पूरे अमरापुर परिसर में सत्संग का सीधा प्रसारण 11 टेलीविजन सेटों व 3 बड़ी स्क्रीन के माध्यम से किया जा रहा था। जिसका लाभ विविध सेवाओं में लगे हुए सेवाधारियों ने भी सत्संग सेवा करते हुए लिया।
- राजस्थान में भास्कर चैनल द्वारा मेले की वीडियो रिकार्डिंग प्रतिदिन पूरे राजस्थान में दिखायी जा रही थी।
- प्रेम प्रकाश मण्डल की वेबसाईट के इन्टरनेट पर भी सीधा प्रसारण उपलब्ध था।

गुरुमुखद्वार कीचमचमाती संगमरमर की सीढ़ियों द्वारा ऊपर सत्संग परिसर में पहुंचते ही नेत्र प्रफुल्लित हो उठे। पीतवर्ण के शामियाने से ढका विशाल परिसर बड़ा ही सुहावना लग रहा है। सामने सत्संग मंच पर अस्थायी रूप से विस्तृत मंच निर्मित किया हुआ जिस में श्वेत वर्ण का चित्रकारी किया हुआ पर्दा जिसमें आचार्य सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज के चित्र को मध्य में व तीनों तरफ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के मनमोहक चित्र बने हुये थे। जिसमें चमकीले सितारों की कारीगरी

बड़ी ही मनमोहक लग रही थी। उसके नीचे 81 वाँ चैत्र मेला बड़े ही सुन्दर कलात्मक ढंग से लिखा गया था।

सत्संग भवन के मध्य में केन्द्रित उच्च आसन पर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की आशीर्वाद प्रदान करने वाली मनोहरकारी मूर्ति का दर्शन कर प्रेमीगण धन्य हो रहे थे। भगवान लक्ष्मी नारायण के नयनाभिराम दर्शन करके श्री मंदिर में ज्योंही प्रवेश किया तो नेत्र प्रफुल्लित हो उठे।

नूतन वस्त्राभूषणों से अलंकृत श्री सद्गुरु महाराज की प्रतिमा व पुष्प सजावट देखकर मन इस आनन्दमय दर्शन की नदी में हिलोरें मारने लगा। श्री समाधि साहब में श्वेत संगमरमर के बने गुम्बद व समाधि स्थल को भी विभिन्न प्रकार के पुष्पों से सुशोभित किया गया था देखा जाए तो श्री दरबार के सभी पूजनीय स्थलों की अपूर्व शोभा एवं सौंदर्यता को देखकर सभी प्रेमी मोहित हो उठे।

श्री दरबार की अनुपम सुन्दरता के दर्शन करने के पश्चात सत्संग वर्खा की प्राप्ति के लिये पांचों दिन व रात प्रेमीगण सत्संग की ज्ञानगंगा में आकर डुबकी लगाने लगे।

आईये हम भी इन पंच दिवसीय महान मेले में आकर डुबकी लगाऐं इस मेले की शुरूआत 25 अप्रैल यानि कि मेले से एक दिन पूर्व ही हो गयी थी। जिस दिन स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज का वर्सी उत्सव मनाया गया। स्वामी टेऊंराम जी महाराज के परम शिष्य स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज के वर्सी उत्सव के उपलक्ष में 21 अप्रैल को पाठ साहब रखे गये थे।

सर्वप्रथम 25 अप्रैल वृहस्पितवार को प्रार्थना के साथ सत्संग की शुरूआत हुई और ब्रह्म भोज का आयोजन भी इसी दिन किया गया जिसमें ब्राह्मणों को भोजन प्रसादी से तृप्त किया जाकर तत्पश्चात् आम भण्डारे में हजारों प्रेमियों ने सश्रद्धा प्रसाद ग्रहण किया।

इसी दिन चैत्र मेले के उपलक्ष में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में पाठ साहब रखे गये।

26 अप्रैल श्री पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर दरबार का प्रत्येक कोना "**धन बाबा टेऊंराम सारा जग तारिया**" की मधुर संकीर्तन से गुंजायमान होने लगा। ब्रह्मवेला श्री दरबार के शांत व सौम्य वातावरण में यह मधुर संकीर्तन प्रेमियों को आभास करवा रहा था कि आज से मेले का शुभारम्भ हो चुका है। प्रेम प्रकाश मण्डल की परम्परा के अनुसार हर मेले पर स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज द्वारा प्रभातफेरी का आयोजन किया जाता रहा है। उसी परम्परा को आज भी सन्त मुरलीधर जी व भक्त श्रीमुक्त जी द्वारा मेले के दिनों में प्रातः 4 से 5 बजे तक "प्रभात फेरी" का आयोजन होता है। गुरुमुख द्वार से यह मधुर धुनि गौशाला होती हुई श्रद्धालुओं के काफिले के साथ श्री महाराज के कक्ष से होती हुई पुनः गुरुमुख द्वार पर आकर समाप्त हुई इस प्रभात फेरी में अन्त तक श्रद्धालुओं का काफिला उत्तरोत्तर बढ़ता ही रहता था।

इस पवित्र दिवस के दिन सत्संग सभागार में सत्संग मंच पर शोभा पाते सन्तगण अपने दिव्य मुस्कान से श्रद्धालु भक्तों को अपनी और आकर्षित कर रहे थे।

प्रातः 7:00 बजे प्रातःकालीन प्रार्थना से इस दिव्य महोत्सव की शुरूआत हुई तत्पश्चात विभिन्न स्थानों से आये सन्तगणों के अमृत वचनों की वर्षा से श्रोता प्रेमीगण लाभान्वित हुए।

प्रातः 8:00 बजे जैसे ही हमारे प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सत्संग मंच पर आये प्रेमीगण मंत्र मुग्ध होकर उन्हें निहारने लगे व उनके अमृत वचनों को श्रवण करने के लिये लालायित हो उठे।

तत्पश्चात ठीक 8:30 बजे पूज्य स्वामी जी ने जैसे ही सत्संग की शुरूआत की पूरा सत्संग परिसर प्रेमियों से खचाखच भर गया। श्री दरबार का ऐसा कोई भी कोना न था जहाँ प्रेमीगण गुरु महाराज जी का सत्संग सुनने के लिये बैठे न हों, गुरुमहाराज जी ने अपने प्रवचन में बताया कि–

दोहा– कबीर सुता क्या करे, उठके न जपे मुरार।
इक दिन सोवन होयेगा, लम्बे पैर पसार।।

अपनी अमृतवाणी में महापुरुष बताते हैं कि मनुष्य का शरीर केवल तुम्हें सोने के लिये नहीं बल्कि ईश्वर का सुमरण करने के लिये मिला है। हमारे

आचार्य जी ने चैत्र मेले की स्थापना 80 वर्ष पहले की थी इसका उद्देश्य था

"मिलो मिलाओ, मिल रहो, मिलो तो मेला होय
अन्तर आत्म जो मिले, मेला कहिए, सोय"

कहते हैं कि मेले का अर्थ "अन्तर आत्मा" को जानना है दूसरों से तो हम बहुत मिलते हें अपने से मिलने के लिये, कि मैं कौन हूँ ? और मेरा उद्देश्य क्या है ?

इस मेले में आकर सन्त महात्मा के वचनों से अपने मन को समझाना चाहिए कि जिस उद्देश्य से हम मेले में आए हैं वह पूर्ण हो ज्यादा नहीं तो थोड़ा ही मन लग जाऐ।

"तेरी महिमा है न्यारी तुम भक्तन हितकारी
तेरी दिव्य कृपा दृष्टि अद्भुत मंगलकारी
दीनों का दुख हरे है पावन तेरा नाम
मेरे सत्गुरु टेऊंराम, तुम्हें बार–बार प्रणाम"

तो सद्गुरु टेऊंराम जिनकी छत्रछाया में हम बैठे हैं उनके पास अपार शक्ति का भण्डारा है। जैसे समुद्र में कुछ लोग जाते हैं तो कुछ बर्तन लेकर आते हैं तभी उनमें पानी भर सकता है तो ऐसी ही समुद्र है यहाँ जहाँ प्रेम, सद्बुद्धि, मिलती है जब तक हम अपने आप को पात्र नहीं बनायेंगे तब तक हमें कुछ नहीं मिलेगा।

"मैं मेरा गुरुचरण में दीजिये भेंट चढ़ाए"

स्वामी जी ने गुरु महाराज की जय जयकार के साथ सत्संग की समाप्ति की, आज स्वामी जी ने "सत्नाम साक्षी" मंत्र लिखित "टी–शर्ट" का लोकार्पण भी किया।

प्रातः आज ही ठीक 9 बजे श्री दरबार के दक्षिण पूर्व में बने विशाल हवन कुण्ड में सभी सन्तगण व प्रेमी एकत्रित हुए। यज्ञकुण्ड जो आज बड़े ही आकर्षक ढंग से पुष्पों से सुसज्जित किया गया था। यज्ञकुण्ड के चारों तरफ सन्तगण व प्रेमी बैठे हुए थे। गेरू व श्वेत वस्त्र धारण किये हुए सन्तगण यज्ञ की तैयारियों में व्यस्त हो गए ठीक 10 मिनट पश्चात मंत्रों व श्लोकों की प्रतिध्वनि के साथ सन्तों द्वारा आहूति दी गयी। लगभग एक घण्टे तक आहूति देने के पश्चात अन्तिम आहूति देकर इस यज्ञ की समाप्ति की गयी। तत्पश्चात आरती व शिवोऽम की धुनि लगाकर हवन कार्य संपन्न हुआ। हवन कार्यक्रम के बाद ध्वजा वन्दन करके ही चैत्र मेले का यथार्थ शुभारम्भ किया जाता है।

अब सभी सन्तगण दक्षिण पश्चिम भाग में स्थित ध्वजा स्तम्भ मंच पर पहुंचे। जहां पर पहले प्रेम प्रकाशी ध्वजा की पूजा अर्चना की गयी और ध्वजा को सन्त नन्दूप्रकाशजी को सौंपा गया, श्वेत वस्त्र धारण किये, कमर पर झोला लटकाए महाराज श्री के आशीर्वाद के साथ जैसे ही सन्त नन्दू जी 60 फुट ऊंचे सीधे खड़े स्तम्भ की सीढ़ियों पर चढ़ने लगे सभी प्रेमीगण एकटक नजर से उन्हें देखने लगे। प्रेमीगण की सुविधा के लिये परिसर के ढके हुए शामियाने को खोल दिया गया था। सद्गुरु भगवान की जयजयकार के साथ श्री दरबार का कोना कोना गुंजायमान होने लगा। श्रीदरबार का पूरा सत्संग परिसर व सभी छतें प्रेमियों से भर गयीं। श्रद्धालुओं की हजारों जोड़ी आंखें इस अविस्मरणीय दृश्य को हृदय में समाहित करने लगीं। कैमरामैन भी इन दुर्लभ दृश्य को कैद करने के लिये उत्साहित हो रहे थे। सचमुच वह दृश्य बड़ा ही अलौकिक था जिसका वर्णन कितना भी किया जाये कम ही होगा।

ठीक 10:10 मिनट पर ध्वजा को जैसे ही स्थापित किया गया, आकाश से पुष्पों की वर्षा होने लगी एक और ध्वजास्तम्भ पर नारियल तोड़कर टाफियों व गुलाब की पंखुड़ियों की वर्षा की गयी। वहीं ऊपर आकाश में **वायुयान द्वारा गुलाब की पंखुड़ियों की वर्षा की जा रही थी** तो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पूरा आकाश मण्डल गुलाबी हो गया हो धीरे–धीरे नीचे की और आती गुलाबी पंखुड़ियों का यह नजारा ऐसा लग रहा था कि मानों "देवी व देवतागण" भी इस मेले में पुष्पों की वर्षा कर रहे हों। प्रेमी तो यह दृश्य एकटक भाव से बस देखे ही जा रहे थे।

तालियों की गगनभेदी गड़गड़ाहट सत्गुरु भगवान की जयजयकार के साथ आकाश में गुंजायमान हो उठी। सन्तमण्डल सहित उपस्थित हजारों प्रेमी **"हम गीत सनातन गायेंगे, सांई टेऊंराम तुहिंजो झण्डो झूले"** भजन भावविभोर होकर गाने लगे। इसी के साथ बैण्ड वादकों ने भी बैण्ड बजाकर ध्वजा का अभिवादन किया। तत्पश्चात् जैसे ही सन्तों ने **"दण्डेवारो,**

खण्डूअवारो'' की धुनि लगाई सभी प्रेमी हाथों से करतल ध्वनि करते हुए नाचने लगे। अन्त में सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज की आरती कर ध्वजा वन्दन कार्यक्रम की समाप्ति की गयी। तत्पश्चात आम भण्डारा हुआ जिसमें असंख्य प्रेमियों ने प्रेमपूर्वक प्रसाद ग्रहण किया।

शोभायात्रा–चैत्र मेले का एक मुख्य कार्यक्रम होता है शोभायात्रा का। दोपहर 3 बजे आरंभ हुआ एक विशाल चल समारोह श्री अमरापुर दरबार से। शोभायात्रा की आगवानी करता हाथी व ऊंटों का बड़ा ही मनमोहक लवाजमा प्रेम प्रकाशी ध्वजा लेकर चल रहा था। आगे–आगे सुन्दर बैण्ड व तत्पश्चात हमारे प्रेम प्रकाश पन्थ के वर्तमान पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज पूज्य सन्त मण्डल के साथ पैदल चल रहे थे। गेरूए वस्त्र में सत्गुरु महाराज जी व उनके चारों तरफ श्वेत व गेरूए वस्त्र धारण किये सन्तमण्डल मानों ऐसा प्रतीत हो रहे थे जैसे कि बीच में सूर्यदेव जी व उनके चारों और किरणें निकल रही हैं। आह! कितना मनभावन, कितना प्यारा मनोहरकारी दृश्य था।

पूज्य स्वामी जी के साथ पुरुष माताऐं व बहनें प्रेमातुर होकर धुनि लगाती हुई चल रही थीं। अब दर्शन होता है चल समारोह की नयनाभिराम झांकियों का ''आगे आगे हमारे प्यारे इष्टदेव की झांकी, राधा कृष्ण की झांकी, प्रेम प्रकाशियों का वटवृक्ष जो स्वचालित घूम रहा था जिसमें हमारे प्यारे गुरुदेव की आदमकद प्रतिमा लगाई गयी थी नन्हे मुन्ने बालक बालिकाऐं, सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के आदमकद विशाल तैलीय चित्र अलग–अलग झांकियों में रंगबिरंगी पताकाओं एवं हरे हरे पत्तों व फूलों से सुसज्जित किये गये लगभग 25 झांकियों के विशाल समारोह में ब्यावर, दिल्ली स्पेन दल्ली राजहरा, सिवनी आदि शहरों की नयानाभिराम स्वचालित झांकिया थीं, चल समारोह में प्रमुख आकर्षण का केन्द्र ब्यावर से आई **''शिवजी की बारात''** थी। जिसमें आगे–आगे भगवान शंकर व उनके पीछे भूतों–प्रेतों का काफिला अद्भुत नृत्य करता हुआ नगरवासियों का कौतुहूल से मनमोह रहा था। अन्त में ''सन्त हरिओमलाल'' के नेतृत्व में हरिनाम संकीर्तन करते प्रेमीगण व उनके बीचों बीच सुसज्जित एक चौपहिया वाहन जिसमें सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज की 15 फुट की प्रतिमा को विराजमान किया गया था गुरु महाराज की प्रतिमा पर लगी पुष्पों की माला ऐसे लग रही थी जैसे ''भगवान शंकर'' के साथ ''गंगा जी'' सुशोभित होती हैं। बड़ी संख्या में प्रेमीगण तो इस कीर्तन में शामिल हो ही रहे थे बल्कि राह चलते राहगीर भी अनायास ही संकीर्तन की और आकर्षित होकर मूर्तिवत ठहर जा रहे थे। ''जय–जय राधा रमण हरि बोल, राधे–राधे'' व गुरु महाराज की जयकार की धुनियां लगाते हुए यह चल समारोह शहर के नियत मार्गों से धीरे–धीरे गुजरने लगा।

जैसे–जैसे शोभायात्रा आगे बढ़ रही थी श्रद्धालु जन प्रेमियों का उत्साह और भी ज्यादा बढ़ने लगा। इतनी सुखमय आनन्दमयी झांकी के आगे–आगे चलते गुरुमहाराज व उनके पीछे चलता अपार जनसमूह जैसे ही शहर के मुख्य बाजारों में आया तो वायुयान से ऊपर आकाश से पुष्पों की वर्षा देखकर सभी लोग कौतुहल वश आकाश की और देखने लगे। धीरे–धीरे सन्तों प्रेमियों व झांकियों का यह काफिला आगे बढ़ने लगा। शोभायात्रा के स्वागत के लिये बाजारों में भव्य द्वार बनाये गये थे व चौराहे–चौराहे पर प्रेमियों द्वारा ठण्डाई, शरबत व शीतल जल तथा छोले डोडा चटनी आदि प्रसाद का वितरण किया जा रहा था। शोभायात्रा का सभी जगह आत्मीय स्वागत किया गया तथा स्वामी जी व सन्तों का माल्यार्पण करके स्वागत किया गया।

लगभग 5 घण्टे की लम्बी दूरी पैदल तय करने के पश्चात स्वामी जी को देखकर थकान का अहसास हो ही नहीं रहा था प्रेमियों को। प्रेमियों को न समय का भान था न ही अपना भान वह तो गुरु महाराज जी के साथ चलने को उतावले हो रहे थे। मुख्य मुख्य बाजारों से होती हुई शोभायात्रा सूर्यास्त होने के पश्चात श्री अमरापुर स्थान में विसर्जित हुई। जहां पहले से ही असंख्य प्रेमी उपस्थित थे। यहाँ आतिशबाजी प्रदर्शन की तैयारियाँ की गयीं थीं।

श्री दरबार में आतिशबाजी का नजारा देखने लायक था। रंगबिरंगी आतिशबाजी जैसे ही आरंभ हुई भक्तवृन्द मंत्रमुग्ध इस दृश्य को देखने लगे। लगभग आधे घण्टे की आतिशबाजी प्रदर्शन में 81 वां चैत्र मेला अनेक तरह की कलात्मक आतिशबाजी में लिखा हुआ बड़ा ही सुन्दर प्रतीत हो रहा था। सारे संतगण व प्रेमी सत्संग हॉल में इकट्ठे हुए और स्वामी जी ने पल्लव पाकर मेले का विधिवत शुभारम्भ किया।

27 अप्रैल–आज का दिन प्रेमियों के लिये दुहरा लाभदायक था। एक तो चैत्रमेले का दिवस दूसरा आचार्य स्वामी टेऊंराम जी महाराज के पावन अवतरण का दिवस शनिवार था। इस दिन की शुरूआत प्रातःकालीन प्रार्थना से हुई। प्रातः 7 से 9 बजे तक सत्संग व गुरु प्रार्थनाष्टक का पाठ जो कि अमरापुर दरबार का नियम है कि गुरुवार व शनिवार के दिन प्रार्थनाष्टक का पाठ होता है तत्पश्चात गुरुमहाराज ने अपने अमृत वचनों की वर्षा से प्रेमियों को सरोबार किया। पूज्य महाराज श्री ने इस दिन **"प्रेम प्रकाश संदेश"** के चैत्र मेले विशेषांक का विमोचन करके सत्संग की समाप्ति की।

इसी प्रकार दोपहर 2:30 बजे से 6:00 बजे तक विभिन्न स्थानों से आई भक्तमण्डिलयों ने अपने ज्ञान की वर्खा की तत्पश्चात् जयपुर की एक बालिका दिव्या रायसिंघानी ने **"सांई टेऊंराम"** का स्वांग रचकर **"अमां मूखे मोकल दे"** व एक बालिका नीलम सेवानी ने **"सन्त कंवरराम"** बनकर **"नाले अलख जे"** नामक भजन में नृत्य करके प्रेमियों को भावविभोर कर दिया।

तत्पश्चात मुरैना से आई दो नन्हीं बालिकाओं प्रिया व प्रीति शर्मा ने **"बिगड़ी मेरी बना दो जयपुर के रहने वाले"** भजन गाकर प्रेमियों को अचम्भित कर दिया। स्वामी जी ने अपने कर कमलों से उन बालिकाओं को आशीर्वाद प्रदान किया और कहा कि इन बालिकाओं के सिन्धी न होकर भी सिन्धी भाषा का गौरव बढ़ाया ये साधुवाद की पात्र हैं।

इसके पश्चात स्वामी जी ने अपने मुख से सत्संग की अमृत वर्खा की इसके बाद स्वामी जी ने सोने के लॉकेट व स्वामी जी के लैम्प स्वर्गीय भगवान दास स्वरित भजन सुमन व कमला केसवानी द्वारा स्वरित सदगुरु टेऊंराम जीवन कथा की ऑडियो कैसेट्स व "अमरापुर वाणी" नामक हिन्दी तीन कैसेट्स व सीडी और दैनिक कैलेण्डर जिसमें सर्वानन्द सन्देश का उल्लेख किया गया है का विमोचन करके आज के दिन के सत्संग की समाप्ति की।

28 अप्रैल–प्रातःकालीन सत्संग सभा की शुरूआत विद्यार्थी समूह द्वारा प्रातःकालीन प्रार्थना **"आशवन्दी गुरु तो दर आयी"** से हुई। तत्पश्चात हृदय को आनन्दित करने वाले भजनों एवं प्रवचनों का लाभ प्रेमीगण उठाने लगे।

11 बजे से 1 बजे के विश्रामकाल को छोड़कर रात्रि 8:30 बजे तक सत्संग प्रवचन की वर्षा चलती रही, तत्पश्चात 7:30 बजे से पुरस्कार वितरण समारोह हुआ जिसमें पूर्व में आयोजित ब्रह्मदर्शनी प्रतियोगिता के विजेताओं को स्वर्ण रजत व कांस्य पदक व सांत्वना पुरस्कार दिये गये व प्रतियोगियों को प्रमाण–पत्र भी दिये गये इसके साथ–साथ **"स्वामी टेऊंराम पोलो क्लीनिक चिकित्सालय"** मानसरोवर जयपुर के डॉक्टरों को स्वामी जी के कर कमलों से पाखर देकर सम्मानित किया गया।

स्वामी जी ने अपने कर कमलों से स्वामी टेऊंराम जन्म साखी व नित्य नियम प्रार्थना हिन्दी, अंग्रेजी व सिन्धी का विमोचन व पावन अमरापुर दर्शन वीडियो कैसेट्स को भी रिलीज किया।

29 अप्रैल–आज भी अन्य दिनों की तरह सत्संग की ज्ञान गंगा चलती रही जिसमें आकर प्रेमीगण ज्ञान की डुबकी लगा रहे थे। रोजाना नवीन ढंग से समाधि स्थल पर पुष्पों की सजावट देखकर प्रेमियों का मन गद्गद हो उठता था साथ ही नित्य नूतन सजावट से मन को मोह लेने वाली भगवान लक्ष्मी नारायण, श्रीमंदिर का श्रृंगार देखते ही बनता था नाना प्रकार की फूलमालाओं अशोक पत्र से सजे धजे श्री दरबार के दिग्दर्शन से नेत्रों को परमसुख की अनुभूति होती थी।

विश्रामकाल के पश्चात शाम को सत्संग अनवरत गति से चलता रहा इस दिन स्वामी जी ने **"ऐ मन चल तू अमरापुर में"** नामक सीडी का विमोचन किया जिसमे पावन अमरापुर का दर्शन व चैत्र मेले के प्रथम दिवस को दिखाया गया है। इसके साथ स्वामी जी ने सत्नाम साक्षी म्यूजिकल यंत्र का भी विमोचन किया।

30 अप्रैल–इस प्रकार प्रेमी सत्संग के सागर में डुबकी लगाकर कृतार्थ हो रहे थे। समय का भान न था पर समय तो अपनी गति से बढ़ता ही जा रहा था। और अन्तिम किन्तु महत्वपूर्ण दिन आ ही गया पल्लव का समय 6:00 बजे का था प्रातः ब्रह्मवेला में 4 बजे प्रार्थना की स्वर लहरियों के साथ इस महान दिवस की शुरूआत हुई। 4 बजे सत्संग आरम्भ हुआ सर्वप्रथम "सन्त बुधप्रकाश, सन्त हरिओमलाल, स्वामी देवप्रकाश जी व स्वामी स्वयं प्रकाश जी ने सत्संग की ज्ञानगंगा से प्रेमियों को अमृत पिलाया, सत्संग की शुरूआत के साथ दरबार के मंदिर व समाधि स्थल के दर्शन खुलने के पश्चात प्रेमीगण दर्शन करने के लिये आतुर हो उठे। तत्पश्चात सन्तगणों ने अमृत वेला में अमृत पिलाया देखते ही देखते प्रातः 5:00 बजे तक प्रेमियों की इतनी अधिक भीड़ आ गयी थी। कि दरबार का एक कोना भी खाली नजर नहीं आ रहा था। चारों और विस्तृत व विशाल सत्संग मण्डप चारों और से प्रेमियों से भर गया। तत्पश्चात् प्रेमियों की सुविधा के लिये सत्संग स्थल के चारों और बनी परिक्रमा स्थल पर बिठाया गया और वहाँ बड़े–बड़े स्क्रीन लगाकर प्रेमियों को सत्संग का सीधा प्रसारण दिखाया जा रहा था।

अब पल्लव का समय होने वाला था सत्संग मंच सन्तों महात्माओं से व सत्संग पण्डाल प्रेमियों से शोभा पा रहा था। स्वामी जी सभी सन्तों के बीच तारों में चन्द्र देव के समान प्रतीत हो रहे थे। जैसे ही घड़ी ने ठीक 6:00 बजाऐ चारों और शांति ही शांति हो गई केवल स्वामी जी के मुखारविन्दु से अमृत वचन गुंजायमान होने लगे स्वामी जी ने अपनी मृदुल वाणी में भगवत नाम रस घोलते हुए बताया कि–

दोहा–सुमति दान दीजिये, गुरु देवन के देव।
एक पलक बिछुड़ू नहीं, मांगु चरनन सेव।।

भजन–**मेहरबान कर मेहर ईहाई, मन में ना को भान रहे।**
सत्गुरु सन्तपाण वदनिखे निवड़ी सीस निवाया मां।।

सत्गुरु टेऊंराम महाराज अपनी अमृत वाणी में मांगना सिखाते हैं कि यदि हम किसी राजा के दरबार में जायें वहाँ हम सोना चांदी के ढेर को छोड़कर अगर अन्न मांगेगे तो राजा को भी थोड़ा दुख होगा लेकिन हमें समझ में नहीं आता कि क्या मांगे तो महाराज जी सिखाते हैं "**मांगना तो मांगन नीका**"

सांसारिक यह खजाना कुछ समय के लिये ही सुख देगी हमें इन सांसारिक विषय वासना में मन नहीं लगाना चाहिये। हमें नाम से मिलने वाले सुख की तरफ मन लगाना चाहिये जैसे कबीरदास जी ने कहा है कि–

"कबीरा मन तो एक है भावे जहाँ लगाय
चाहे हरि की भक्ति कर, चाहे विषय कमाय"

इसलिये हमें भगवान से सांसारिक पदार्थ नहीं मांगने चाहिए हमें भगवान व सत्गुरु से नामदान मांगना चाहिए। ताकि हमारा मांगना सफल हो जाए। ये मन में कामना रखके पल्लव पाऐं कि हमें नाम का दान मिल जावे।

गुरुदेव के अमृत वचनों की ज्ञान गंगा में प्रेमी एकाग्रचित होकर डुबकी लगा रहे थे। हजारों की संख्या में प्रेमीगण इस दिव्य घड़ी का एकाग्र चित्त से लाभ उठा रहे थे। स्वामी जी ने "**आशवन्दी गुरु तो दर आई**" पल्लव पाकर मेले की समाप्ति की और सभी को सुखपूर्वक व निर्विघ्न मेले की समाप्ति की बधाई दी। शहनाई वादन शुरू हुआ और सन्तों द्वारा यह धुनि लगाई गयी।–

सन्तगण	प्रेमीगण
जहिंजो नालो टेऊंराम आ	**खण्डूअवारो**
जहिंजो पिता चेलाराम आ	**खण्डूअवारो**
जहिंजो गुरु आसूराम आ	**खण्डूअवारो**
जहिंजो अमरापुर धाम आ	**खण्डूअवारो**

आह। कितना सुखमय व आनन्दमय दृश्य है मंच पर उपस्थित सन्तगणों के अतिरिक्त प्रेमीगण भी करतल ध्वनि के साथ नृत्य करने में विभोर हो उठे।

इस दुर्लभ व अदभुत छटा का वर्णन इस लेखनी से बाहर की बात है। परम्परानुसार सद्गुरु महाराज के चित्र के साथ अमरापुर मंदिर की तीन बार परिक्रमा संकीर्तन करते हुए की गयी, कुछ क्षणों के पश्चात इस दिव्य महान संकीर्तन की समाप्ति हो गयी और प्रत्येक प्रेमी इस दिव्य आनन्द को पुनः प्राप्त करने के लिये लालायित हो उठे।

इस महान उत्सव में प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, स्वामी

देवप्रकाश जी महाराज उल्हासनगर, स्वामी मनोहरलाल जी कोटा, स्वामी जयदेव जी दिल्ली, सन्त हरिओमप्रकाश जी ग्वालियर, स्वामी नामदेव जी हांगकांग, सन्त अनन्तप्रकाश जी पूना, स्वामी दयाप्रकाश जी जयपुर, संत हीरानन्द जी जयपुर, संत रामप्रकाश बड़ौदा, संत रामदास जयपुर, संत श्यामलाल कोटा, संत शम्भूलाल इंदौर, संत मुरलीधर खैरथल, संत झामनदास सिवनी, संत स्वरूपप्रकाश अहमदाबाद, संत हंसप्रकाश अहमदाबाद, संत घनश्यामदास कानपुर, संत नरेशकुमार इंदौर, संत झामनदास भीलवाड़ा, संत जेठानन्द जयपुर, संत नंदलाल जी हरिद्वार, संत संजय बड़ौदा, संत भगतप्रकाश आगरा, संत रमेशलाल कटनी, संत शंकरलाल धुलिया, संत बुधरप्रकाश उल्हासगर, संत प्रतापराय मुरैना, संत लालूराम दिल्ली, संत रमेशलाल हरिद्वार, स्वामी चरणदास इंदौर, संत आत्मप्रकाश अजमेर, संत काशीराम जी इंदौर, संत मगराज जी हरिद्वार, पण्डित सीताराम उज्जैन, संत रामपूजन जी इलाहाबाद, संत रामसेवक इलाहाबाद, संत धर्मदास बड़ौदा, संत कृष्णकांत शास्त्री, बरसाना, संत हरचन्द्र अजमेर, संत नानकराम जी अहमदाबाद, संत गोपालजी आगरा, संत वासुदेव जी जयपुर, संत गोविन्दराम जी ब्यावर, भगत किशनचन्द, भगत प्रताप भगत श्रीमुक्त, भगत कल्लूराम, भगत लख्मीचन्द, शंकर नारवानी, रमेश नानकराम लखनऊ, भगत हासानन्द, सोनू, वीरभान, भोजराज सम्मिलित थे।

—गुड़िया जयपुर से

कैसेट समीक्षा **स्वर कमला केसवानी**

सद्गुरु टेऊंराम जीवन कथा (सिन्धी–संगीतमय)

"आचार्य श्री" का सम्पूर्ण जीवन चरितामृत तो सागर सम विशालतम है। उसका थाव मापना असंभव है। फिर भी अपनो मति अनुसार गुरु की महिमा जितनी गाएं उतनी ही कम है।

सुप्रसिद्ध गायिका कमला केसवानी जी ने अपनी मति अनुसार बड़े ही सुन्दर संगीतमय ढंग से आचार्य श्री जी की जीवनकथा (सद्गुरु टेऊंराम जीवनकथा कैसेट में) गायी है। कैसेट में छोटे प्रसंग, कथा, व भजन प्रस्तुत किये गये हैं।

इस कैसेट को सुनने से आचार्य श्री का संक्षिप्त जीवन कथा का ज्ञान प्राप्त होता है।

इसे दो कैसेट में प्रस्तुत किया गया है। इन दो कैसेटों का मूल्य 40 रूपये रखा गया है।

कैसेट समीक्षा **प्रस्तुति अमरापुर स्थान**

पावन अमरापुर दर्शन (वीडीओ कैसेट)

"आचार्य श्री" द्वारा स्थापित तपोस्थली पावन श्री अमरापुर स्थान, जिसके दर्शन मात्र से संतप्त हृदय को आत्म सुख व शान्ति की प्राप्ति होती है।

इस पावन भूमि पर अनेक संत महापुरुष ने श्रीचरण पग धरे हैं। उनकी पावन रज के प्रताप से चहुं और भक्तिमय आभा प्रकाशित हो रही है।

ऐसे ही दिव्य आलोकित आभा की तीर्थस्थली श्री अमरापुर स्थान।

इसी पुण्य स्थल की वीडियो कैसेट तैयार की गयी है। कैसेट में मुख्य द्वार से लेकर सभी स्थलों को दर्शाया गया है। आप घर बैठे ही कैसेट के माध्यम से इस पुण्य स्थल के दर्शन कर सकते हैं।

कैसेट में बड़े ही सुन्दर ढंग से शूटिंग की गयी हैं इसे लिये बॉक्स से सज्जा कर 1 घण्टे की कैसेट तैयार की गयी है। इसका मूल्य 100 रूपये रखा गया है।

पुस्तक समीक्षा

सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (सम्पूर्ण चारों भाग, 2 पुस्तक)

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जीवन चरितामृत (सम्पूर्ण चारों भाग दो पुस्तकों में) छपकर तैयार है। पूर्व में प्रथम द्वितीय भाग प्रकाशित थे। तृतीय व अन्तिम भाग को सिन्धी लिपि से अब हिन्दी भाषा में किया है। सम्पूर्ण चारों भाग हिन्दी में छपकर तैयार हैं। पूरे सेट (चारों भाग) का मूल्य मात्र 125 रूपये रखा गया है।

समीक्षा

दैनिक कैलेण्डर (अनमोल वचन)

दैनिक जीवन में मनुष्य को किस–किस प्रकार के कर्म–धर्म, आचरण, व्यवहार करने चाहिए। उन्हीं आचरणों को जीवन में उतारने के लिये नित्यप्रति सन्तों–महात्माओं के सन्त उपदेश (अनमोल वचन) पढ़ने चाहिये। जिससे व्यक्ति जीवन जीने की कला सीखता है। उन महापुरुषों ने उपदेशों पर चलकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाता है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर श्री अमरापुर स्थान द्वारा दैनिक कलेण्डर बनाया गया है। इसमें 1 से 31 तारीख तक अनमोल वचन व महाराज श्री की सुन्दर तस्वीरें दर्शायी गयी हैं।

प्रातःकाल अनमोल वचन, दर्शन कर मन प्रफुल्लित हो उठता है। इसी के साथ दैनिक जीवन में वह वचन अत्यधिक लाभप्रद होता है।

आप इस दैनिक कलेण्डर (अनमोल वचन) को अपने घर, ऑफिस, दुकान, प्रतिष्ठान आदि स्थानों पर रख सकते हैं। इसका मूल्य 20 रूपये मात्र रखा गया है।

सभी के लिये प्राप्ति स्थल :

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर के अतिरिक्त सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है।

ज्ञान–सत्संग–चर्चा

यात्रा दर्शन

पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का देशाटन

वाराणसी में सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्मोत्सव

रतलाम में प्रेम प्रकाश आश्रम का भूमिपूजन

मंदसौर में दिव्य सत्संग सभा

दिनांक 3 मई–पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित रेलमार्ग द्वारा मंदसौर पहुंचे। यहाँ पहुंचने पर श्री ठाकुरदास जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों द्वारा मंदसौर रेल्वे स्टेशन पर पुष्प वर्षा कर पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं सन्त मण्डली का हार्दिक स्वागत किया गया। यहां पर ठहरने की व्यवस्था श्री ठाकुरदास जी के निवास स्थान पर की गयी थी।यहां पर दो दिवसीय सत्संग का आयोजन किया गया। सभी सन्त महात्माओं ने जिज्ञासुओं को अनन्त शिक्षायें दीं। पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने दो दिवसीय प्रवचनों में बताया कि परमात्मा के नाम में कई अद्भुत शक्तियों का समावेश है। लेकिन ये शक्तियाँ तब प्रकट होती हैं जब हमारा मन राम में लग जाय, जिसका परमात्मा के नाम में विश्वास अटल होता है उसे संसार की कोई शक्ति विचलित नहीं कर पाती। उसका मन सदैव निश्चल रहता है। प्रहलाद को अपने पिता हिरण्याकश्यप द्वारा कई कष्ट दिये गये, परन्तु भक्त प्रहलाद को उन कष्टों में भी आनन्द की प्राप्ति हो रही थी, क्योंकि उसका अहित दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं कर सकती। अपने मंदसौर प्रवास के द्वारा पूज्य स्वामी जी सन्तमण्डली सहित प्रेमियों के आग्रह पर उनके निवास स्थानों पर भी गये।

रतलाम में निर्माणाधीन प्रेमप्रकाश आश्रम के लिये भूमिपूजन

दिनांक 6 मई को पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित अजमेर होते हुए इन्दौर पहुंचे। वह 11 मई को अपनी इन्दौर यात्रा को विराम देते हुए सड़क मार्ग द्वारा 12 बजे रतलाम पहुंचे। यहां पर श्री मनोहरलाल जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों द्वारा पूज्य स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। रहने की व्यवस्था श्री मनोहरलाल के निवास स्थान पर की गयी थी। थोड़ी देर पश्चात् ही प्रेम प्रकाश आश्रम के निर्माण हेतु प्रस्तावित भूमि का पूजन किया गया। भूमि पूजन के पश्चात् निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सांय सत्संग का कार्यक्रम हुआ। इस सतसंग रूपी महायज्ञ में कई लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इलाहाबाद में त्रिवेणी स्नान

दिनांक 9 मई पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज मण्डली सहित रेल मार्ग द्वारा दिल्ली होते हुए इलाहाबाद पहुंचे। यहां पर श्री राजकुमार, श्री अनिलकुमार, श्रीमती आशादेवी एवं सिन्धी समाज के कई गणमान्य प्रेमियों द्वारा रेल्वे स्टेशन पर पूज्य स्वामी जी का स्वागत किया गया। श्री राजकुमार जी के निवास स्थान पर सभी सन्तों को ठहरने हेतु स्थान दिया गया। सांय प्रवचनों का कार्यक्रम सिंधी धर्मशाला में रखा गया था। 19, 20, 21 मई इलाहाबाद यात्रा के दौरान पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली व कई प्रेमियों सहित त्रिवेणी संगम हेतु स्नान करने गये। यहां पर पूज्य स्वामी जी ने सभी प्रेमियों को पल्लव पाकर आशीर्वाद दिया। अपने दो दिवसीय प्रवचनों में बतलाया कि परमात्मा ने हमें स्वासों रूपी अमूल्य धन दिया है। इन स्वांसों को हरिनाम स्मरण करके सफल बनाना चाहिए, क्योंकि गयी हुई वस्तु वापस लौट कर नहीं आती है। इसी प्रकार अगर हम इन अमूल्य स्वांसो को वृथा बातों में गंवाते हैं तो अन्त में हमें पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं लगता। महापुरुषों ने अपनी अमृतवाणी में लिखा है–

दोहा–

स्वास–स्वास सुमरन करो वृथा स्वास मत खोय।
न जाने फिर इस स्वास का आना होय न होय।

इसलिए हर जीव का कर्तव्य है कि परमात्मा का सुमरन कर अपना कल्याण स्वंय करे।

प्रेम प्रकाश धाम दिल्ली वार्षिकोत्सव व स्वामी जयप्रकाश जी महाराज का जन्मशती समापन समारोह

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली, और दिल्ली क्षेत्र का सुप्रसिद्ध क्षेत्र घण्टाघर उसी के समीप मलिकागंज में स्थित श्री प्रेम प्रकाश धाम का वार्षिकोत्सव व स्वामी जयप्रकाश जी महाराज का जन्मशताब्दी समापन समारोह 12 से 17 मई तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डल के पावन सानिध्य में हजारों प्रेमियों की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

12 मई को पूज्य स्वामी जी के दिल्ली पहुंचने पर सन्त जयदेव जी महाराज के नेतृत्व में प्रेमियों द्वारा स्वामी जी व सन्त मण्डली का भव्य स्वागत अभिनंदन किया गया। आज ही सांयकाल को 4 बजे आश्रम से भगवान के विविध लीलावतारों व सद्गुरु महाराज की झांकियों के साथ एक विशाल चल समारोह निकाला गया। चल समारोह में हाथी घोड़े, बैण्ड, रथ भी सम्मिलित थे। पूज्य स्वामी जी को एक सुसज्जित रथ पर विराजमान किया गया था जिसे दो सफेद अश्व खीच रहे थे। शोभायात्रा मलिकागंज, पुरानी सब्जी मण्डी, झूलेलाल मंदिर से होती हुई घण्टाघर रोड से होती हुई वापिस आश्रम पर विसर्जित हुई मार्ग में अनेक स्थानों पर धार्मिक व्यापारिक सामाजिक संगठनों द्वारा चल समारोह का स्वागत किया जाकर प्रसाद, शरबत ठण्डाई वितरित किया जा रहा था। आश्रम पहुंचने के बाद पूज्य स्वामी जी ने पल्लव पाकर मेले का विधिवत शुभारम्भ किया। 13 मई को प्रातः हवन ध्वजावन्दन कार्यक्रम में दिल्ली व बाहर से आये हुए अपार प्रेमियों की उपस्थिति श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजा के प्रति प्रेमियों की अपार श्रद्धा का परिचायक थी।

14 मई 2002 को सांय 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक सत्संग सभा में पूज्य स्वामी जयप्रकाश जी महाराज का जन्मशती समारोह मनाया जाकर जन्म शताब्दी वर्ष का समापन पल्लव पाकर किया गया।

15–16–17 मई को सांय 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक सत्संग ज्ञान गंगा में दिल्लीवासियों ने जमकर आनंद उठाया। 17 मई को लगभग रात्रि 9 बजे पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपने अमृतमयी प्रवचनों के पश्चात् सर्वजन हितार्थ प्रार्थना (पल्लव) कर मेले का समापन किया।

मेले में पांचों दिन ही रात्रि को भण्डारे के अटूट लंगर में प्रेमियों ने सद्गुरु महाराज का पावन प्रसाद प्रेम पूर्वक व श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया।

–सन्त लालूप्रकाश, दिल्ली से

वाराणसी में सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का पावन जन्मोत्सव व आश्रम की रजत जयन्ती उत्सव

दिनांक 21 मई पूज्य स्वामी जी अपने मण्डली सहित रात्रि 8 बजे शिवनगरी काशी पहुंचे। यहां पहुंचने पर श्री महादेवमल, श्री शंकरलाल, श्री अशोकलाल, श्री सुन्दरदास जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों ने पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का भव्य स्वागत किया। दिनांक 22 मई प्रातः सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के 72 वें जन्मोत्सव व प्रेम प्रकाश आश्रम (बनारस) के रजत जयन्ती 25 साल पूरे होने की खुशी में धूमधाम से मेला आरम्भ हुआ। सबसे पहले प्रातः 7 बजे सन्तों द्वारा प्रार्थना की गयी। तत्पश्चात् सत्संग का कार्यक्रम हुआ। सत्संग पश्चात् प्रेमप्रकाश ग्रन्थ के पाठों को आरम्भ किया गया। तत्पश्चात् पूज्य स्वामी जी ने पल्लव पाकर इस शुभ महोत्सव का शुभारम्भ किया। सांयकालीन सत्संग आश्रम के ही बाहर भव्य पण्डाल में किया गया। इस पण्डाल को बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया था।

आज बड़ी संख्या में प्रेमियों ने सत्संग में भाग लिया। अपने पंच दिवसीय यात्रा के दौरान पूज्य स्वामी जी गंगा स्नान हेतु गंगाघाट पर गये, सभी प्रेमियों ने नौकाविहार द्वारा चौरासी घाटों के दर्शन किये साथ में सन्तमण्डली व गंगास्नान के पश्चात् पूज्य स्वामी जी व प्रेमियों ने काशी विश्वनाथ भगवान के दर्शन किये। इसी यात्रा के अन्तर्गत पूज्य स्वामी जी प्रेमियों सहित मन्दिरों के दर्शन हेतु सारनाथ भी गये। यहां पर बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाये गये प्राचीन मन्दिरों के दर्शन कर सभी का चित्त प्रसन्न हो उठा। पूज्य गुरुदेव स्वामी भगत प्रकाश जी

महाराज ने अपने पंच दिवसीय सत्संग कार्यक्रम में बतलाया कि

महापुरुषों का अवतार लोक कल्याण हेतु होता है। वे इस धरातल पर अवतार लेकर सभी जीवों को परमात्मा से मिलाने का प्रयास करते हैं, इसी कड़ी में आज से 72 वर्ष पूर्व संद्गुरु हरिदासराम जी महाराज का जन्म घुंडण गांव में सन्तसेवी हीरानन्द माता मोत्तलबाई के घर हुआ था। गुरु महाराज छोटी अवस्था से ही सन्त सेवी थे, बचपन से ही उनका मन संसार की बातों में नहीं लगता था।

वे छोटी सी आयु में ही सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की शरण में आ गये व तन मन से उनकी सेवा कर परम पद को पाया। सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने श्रद्धा प्रेम और विश्वास के साथ गुरु भक्ति की थी। ऐसे महापुरुषों के जन्मोत्सव मेले जिज्ञासुओं को जगाने के लिए आते हैं। अगर हम ऐसे महापुरुषों के वचनों पर चले तो हमारा भी लोक परलोक संवर सकता है।

दिनांक 26 मई प्रातः सत्संग पश्चात् ध्वजा रोहण का कार्यक्रम हुआ। पूज्य स्वामी जी के कर कमलों द्वारा प्रेम प्रकाशी ध्वजा की पूजा अर्चना के पश्चात ध्वजा को स्तम्भ में स्थापित किया गया। तत्पश्चात् श्रीमद्भगवत गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का भोग पारायण हुआ। सांयकालीन प्रवचनों पश्चात् सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के 72 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में पूज्य स्वामी जी के कर–कमलों द्वारा केक काटा गया व 72 दीप प्रज्जवलित किये गये। तत्पश्चात् सभी नगरवासी स्वामी जी के जन्म दिवस की खुशी में संगीतबद्ध होकर झूमने लगे। पूज्य सद्गुरु महाराज ने पल्लव पाकर गुरु महाराज जी के जन्मोत्सव व रजत जयन्ती के उपलक्ष में सभी नगर वासियों को लाख–लाख बधाईयां देकर इस मेले का समापन किया।

फैजाबाद में सत्संग–ज्ञान–अयोध्या में सरयू स्नान व श्रीरामजन्मभूमि दर्शन

दिनांक 27 मई पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली सहित दोपहर 12 बजे सड़क मार्ग द्वारा फैजाबाद पहुंचे। यहां पहुंचने पर सन्त भावनदास जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामी व सन्तमण्डली का प्रेमप्रकाश आश्रम फैजाबाद आगमन पर भावपूर्ण स्वागत किया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सांयकालीन सत्संग का कार्यक्रम हुआ जिसमें कई नगर वासियोंने भाग लिया। सत्संग पश्चात् आम भण्डारे काआयोजन किया गया था जिसमें कई प्रेमियों ने प्रेम पूर्वक भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया।

दिनांक 28 मई प्रातः पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश ज़ी महाराज सन्त मण्डली व प्रेमियों सहित सरयू नदी स्नान हेतु अयोध्या गये। यहां सभी ने पावन सरयू नदी में तीर्थ स्नान किया। स्नान पश्चात् पूज्य स्वामी जी सन्तों व प्रेमियों सहित भगवान श्रीराम कीजन्मभूमि व राम्लला के दर्शन हेतु गये। यहां पर सभी ने रामलला के दर्शन किये। दर्शन पश्चात् सभी प्रेमी व सन्तगण अपने स्थान पर लौट आये। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार श्री प्रेम प्रकाश आश्रम में सबसे पहले वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा हवन यज्ञ का कार्यक्रम हुआ। तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश ध्वजा की पूजा अर्चना कर ध्वजा को स्तम्भ पर स्थापित किया गया। ध्वजा रोहण पश्चात् सत्संग का कार्यक्रम हुआ। सत्संग पश्चात झूलेलाल मंदिर में पूज्य स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के कर–कमलों द्वारा भगवान शिव व माता पार्वती की मूर्तियों को वैदिक मंत्रोच्चार द्वारा स्थापित किया गया। तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश आश्रम में आम भण्डारे का आयोज़न हुआ। सांयकालीन सत्संग में सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 72 वां जन्मोत्सव भी दीप प्रज्वलन करके मनाया गया, साथ ही पूज्य स्वामी जी के कर कमलों से केक काटा जाकर सन्तों व संगत का मुंह मीठा कराया गया। तत्पश्चात् सद्गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर इस उत्सव का समापन किया।

लखनऊ में सत्संग सरिता

दिनांक 29 मई पूज्य स्वामी जी अपने मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा फैजाबाद होते हुए लखनऊ पहुंचे। यहां पहुंचने पर कई प्रेम प्रकाशी प्रेमियों ने पूज्य महाराज श्री एवं सभी सन्तों का माल्यार्पण कर

स्वागत किया। अपने दो दिवसीय प्रवचनों में (29, 30 मई) पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने बतलाया कि–

जिस परमात्मा को हम बाहर खोज रहे हें वो हमारे भीतर ही हैं। गुरु महाराज जी ने अपनी अमृतवाणी में लिखा है। कि–

भजन–

रे मन मेरा भटकत काही जो सुख चाहत सो तुझ माहीं।

1. मृग की नाभि है कस्तूरी, अपने से वह जानत दूरी।

ढूंढत बन बन मिलत न काही......

पूज्य स्वामी जी ने दृष्टांत देते हुए समझाया कि एक बम्बई का सेठ व्यापार के काम से कलकत्ते गया। कलकत्ते पहुंच कर अपने व्यापार के कामों से निवृत होकर वह सेठ एक जौहरी की दुकान पर गया। वहां पर उसने एक लाख रूपये मूल्य का एक हीरा खरीद लिया। सेठ ने जौहरी को एक लाख रूपये देकर कहा दो दिन बाद जब मैं बाम्बे वापस जाऊंगा तब मैं आपसे यह ले जाऊंगा। एक चोर जिसके मन में पाप था वो सारी बातें छुप–छुप कर सुन रहा था। जब दो दिनों बाद सेठ ने जौहरी से हीरा लिया वह रेल्वे स्टेशन की तरफ जाने लगा। तब चोर ने भी सुन्दर कपड़े पहनकर पीछा करना आरम्भ किया। सेठ जैसे ही ट्रेन में बैठा तो चोर भी उसके समीप आकर बैठ गया। चोर सेठ जी से अच्छी–अच्छी बातें कर हिल मिल गया। रात्रि जब सेठ जी सो गये तो चोर ने बेहोशी की दवा सुंघाकर सेठ जी को बेहोश कर दिया व चोर सेठ जी का सामान जांच करने लगा। बहुत देखने पर चोर को वो अमूल्य हीरा हाथ न लगा। जब सुबह हुई तो चोर सेठ जी से पूछने लगा। आपने हीरा तो सम्भाल कर रखा है न। आप हीरा सम्भाल कर रखना। क्योंकि किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है। तब सेठ जी ने जेब से हीरा निकालकर दिखाया और कहा हीरा मैंने सम्भाल कर रखा है। चोर मन ही मन पछताने लगा और मन में सोचने लगा कि शायद सेठ जी के सामान को अच्छी तरह से नहीं देखा था। लेकिन आज रात को किसी भी तरह से इस हीरे को चुरा लूंगा। रात हुई फिर सो गये। नींद आ गयी तो चोर ने फिर से बेहोशी की दवाई सुंघाकर सेठजी को बेहोश कर दिया। उसने फिर से सेठजी के सामान को और जेबों को अच्छी तरह से देख लिया। लेकिन उसे हीरा प्राप्त नहीं हुआ। जब सुबह हुई ट्रेन रेल्वे स्टेशन पर पहुंची तब चोर ने सेठजी से कहा एक बात पूछूं आप बुरा तो नहीं मानेंगे। सेठजी ने कहा पूछो। चोर ने कहा कि मैं चोर हूँ। मैं आपके हीरे के पीछे यहां तक आया हूं। मैंने सोचा था हीरा चोरी करके मैं लखपति बन जाऊंगा। लेकिन मैंने दोनों रातों को आपके सामान की अच्छी तरह से जांच की। हीरा आपके सामान में कहीं पर भी नहीं मिला। आखिर वो हीरा आप रखते कहां थे। तब सेठजी ने कहा जब तुम मुझे पहली बार मिले थे तभी मैं तुम्हें पहचान गया था कि तुम चोर हो। मैं रात को सोने से पहले व जब तुम कहीं पर जाते थे तो तुम्हारे तकिये के नीचे हीरा रख देता था और जब तुम सुबह चाय पीने जाते थे तो हीरे को तकिये के नीचे से उठाकर अपनी जेब में रख दिया करता था। इस तरह से वो हीरा तुम्हारे पास ही था, लेकिन तुम ढूंढ मेरे सामान में रहे थे। इसलिए वो हीरा तुम्हें प्राप्त नहीं हुआ। स्वामी जी ने बतलाया कि इस दृष्टांत का सिद्धान्त यह है कि उस हीरे की तरह परमात्मा हर किसी के हृदय में विराजमान है और हम परमात्मा को ढूंढ बाहर रहे हैं। इसी को अज्ञानता कहते हैं। परमात्मा के हृदय के अन्दर दर्शन तभी सम्भव है जब हमारे ऊपर गुरु की कृपा होगी और वह गुरु कृपा गुरुभक्ति द्वारा ही सम्भव है।

दिनांक 30 मई स्वामी जी सन्तमण्डली के साथ लखनऊ के प्रेमियों से विदाई लेते हुए कानपुर प्रस्थान कर गये। इस यात्रा में स्वामी मनोहरप्रकाश (कोटा), स्वामी जयदेव (दिल्ली), संत हरिओमलाल (ग्वालियर), भगत मूलचन्द (जयपुर), भगत श्रीमुक्त(जयपुर), नरेश प्रेमप्रकाशी (जयपुर), परसराम प्रेम प्रकाशी (जयपुर), हरीश प्रेमप्रकाशी (जयपुर), महेन्द्र प्रेम प्रकाशी (जयपुर), गुरुमुखदास (जयपुर), श्यामलाल (हॉगकॉग) भी स्वामी जी के साथ सन्तमण्डली में सम्मिलित थे।

नरेश प्रेम प्रकाशी, जयपुर से

इन्दौर में सम्पन्न वर्सी–उत्सव

इन्दौर–काट्जू कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज की असीम कृपा से परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के तत्वावधान में इन्दौर में स्वामी मुरलीधर महाराज, स्वामी गंगाराम महाराज, स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज की वार्षिक वर्सी मनाई गयी।

6 मई प्रथम दिन दिनांक 6 मई को रेल्वे स्टेशन पर स्वामी जी के आगमन का दृश्य देखते ही बनता था प्रेमियों की भीड़ के बीच स्वामी जी तारों के बीच चन्द्रमा की भांति सुशोभित थे।

तपती इन्दौर नगरी एवं सूर्यनारायण का प्रचण्ड वेग भी मानों स्वामी जी के आगमन के कारण शीतलता और आनंद की लहर बरसा रहा था।

स्वामी जी के आगमन पर आश्रम में समस्त प्रेमियों ने पुष्प–वर्षा एवं करतल ध्वनि से अत्यंत हर्षित होकर भाव विभोरता से हार्दिक स्वागत किया। इसके पश्चात यज्ञ (हवन) प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी कराया गया जो कि स्वयं स्वामी जी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

हवन के पश्चात झंडावंदन की बात भी न्यारी थी सभी प्रसन्नचित्त होकर **"हम गीत सनातन गायेंगे नित झंडा धर्म झुलायेंगे"** के गगनभेदी नाद से गूंज उठी प्रेमी नाच गान कर रहे थे कुछ और कुछ प्रेमी नारियल मिश्री का प्रसाद चढ़ा रहे थे। स्वामी टेऊंराम जी महाराज की जयघोष से गुंजायमान था। तथा शहनाई वादन ने शहनाई छेड़ी तो प्रेमियों के पांव नाचने–थिरकने लगे।

परम पूज्य स्वामी जी से आशीर्वाद लेकर संत शंभूलाल ने ध्वजा स्थापित किया। सांयकाल 4 बजे से 7 बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रखा गया प्रथम महिलाओं ने स्वामी जी के स्वागत के भजन गाए तत्पश्चात अन्य संतों ने सत्संग किया फिर स्वामी जी ने अपने प्रवचन में "मनुष्य जन्म की दुर्लभता ओर नाम जप की महत्वता का वर्णन किया एवं बतलाया कि असार संसार में प्रभु भक्ति ही सार है"

7 मई 2002 को प्रातःकाल 8 बजे से 10 बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। पहले अन्य आए हुये सन्तों ने प्रवचन किये। फिर स्वामी जी ने अपने प्रवचन में बतलाया कि **"पूरब पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार कहे टेऊं तिहं सफल कर सुमरो सृजणहार"** भगवान ने आप पर कृपा की मनुष्य की देह मिली पहले तू जानवर या पशुपक्षी की योनियों में था अब भगवान ने तुझको आजाद कर दिया साथ–साथ तुझे उस माया को भी दिया है परन्तु उस माया से दूर रहना संसार रूपी सागर से पार होना है।

इसके उपरान्त स्वामी जी ने 10 बजे से 12 बजे तक द्वारिकापुरी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्संग किया।

इन्दौर प्रेम प्रकाश आश्रम, द्वारिकापुरी

7 मई मंगलवार, सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज मंडली सहित द्वारिकापुरी प्रेम प्रकाश आश्रम पर पधारे। यहां के व्यवस्थापक सन्त नरेशलाल प्रेम प्रकाशी के नेतृत्व में स्वामी टेऊंराम नवयुवक मण्डल व स्वामी टेऊंराम महिला मंडली द्वारा पूज्य स्वामी जी व सन्तमण्डली का प्रेम पूर्वक भव्य स्वागत किया गया। सत्गुरु महाराज ने अपने सारगर्भित प्रवचनों में **"तुहिंजीं दरबार दिठम देह सजे खां न्यारी"** भजन से संगत को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रेम प्रकाशी झंडा वन्दन पश्चात् प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहिब के भोग साहिब व आमभण्डारा कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सत्गुरु महाराज जी ने इस अवसर पर अपने कर कमलों से स्वामी टेऊंराम नवयुवक मण्डल व स्वामी टेऊंराम महिला मण्डली के सदस्यों को उनके योगदान के लिए ट्राफियां (शील्ड) वितरित की। आश्रम परिवार द्वारा हर महीने अनाथाश्रम, पागलखाने, गूंगे बहरे नेत्रहीन आदि संस्थाओं में जाकर अपने हाथों से भोजन बनाकर, अपने हाथों से खिलाकर आते हैं। अन्त में सभी सन्तों ने प्रेमपूर्वक भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया।

पुनः क्रम से शाम को 4 से 7 बजे तक सत्संग रखा गया पहले महिलाओं द्वारा भजन गाए गए तथा आगन्तुक संतों ने सत्संग किया तत्पश्चात स्वामी जी ने अपनी अमृतवाणी में बतलाया कि

"सदगुरु की कृपा बिना भवसिन्धु तरे न कोई
कहे टेऊं गुरुशरण ले जे भव तरना होई।

सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज वचन वरखा में कहते हैं कि सद्गुरु के सिवाए कोई मनुष्य इस संसार से पार नहीं उतर सकता संसार से पार जाने के लिये काबिल सद्गुरु की नितान्त आवश्यकता है। बड़े से बड़ा डर है माता के गर्भ से बार–बार जन्म लेना वह भय दूर होगा प्रार्थना से एवं पुरुषार्थ से दोनों साधनों से। दिनांक 8 मई 2002 को प्रातःकाल 5 बजे प्रभातफेरी निकाली गयी एवं 8 से 10 बजे सत्संग अनवरत चलता रहा। प्रातःकाल के सत्संग में स्वामी जी ने बताया कि जो कुछ दिख रहा है सपना है स्वप्न की निशानी है कि थोड़ी देर के लिये भासित हो भगवान कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं कि मेरे और तुम्हारे एक जन्म नहीं कई जन्म हो चुके हैं आगे भी कई होंगे यह सब स्वप्न में हो रहा है।

तत्पश्चात अखंडधाम वालों सन्तों का भजन भंडारा हुआ उसके बाद 4 बजे से 7 बजे तक पुनः शाम को सत्संग सुमन स्वामी जी एवं अन्य संतों ने बरसाए। शाम के सत्संग में स्वामी जी के मुखारबिन्दु से निम्न वचन थे कि परमात्मा उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं बंधन तो बहुत आते हें उनं विघ्नों को काटना ही हमारा काम है। सुख के साधन बहुत मिले पर सुख नहीं मिला। मन कहता है कि संसार से सुख चाहिए पर सुख संसार से मिलने वाला नहीं है सुख है संतों की संगति में जिसे सुख की चाह है वह संतों के संग से अपने लक्ष्य प्रभु परमात्मा की ओर कदम बढ़ाए।

9 मई 2002 को प्रातःकाल 7 बजे मूर्तियों (श्री विग्रह) का पूजन स्वामी जी ने अपने कर कमलों, द्वारा किया प्रथम स्वामी जी ने भगवान श्री लक्ष्मीनारायण के श्रीविग्रहों को वस्त्रालंकार से सुशोभित कर इत्र का छिड़काव किया। प्रसाद–भोग लगाया। संत शम्भूलाल, संत हरिओमलाल जी मंत्रोच्चारण कर रहे थे तत्पश्चात् सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज के श्री विग्रह को वस्त्रालंकार एवं इत्र–छिड़काव एवं भोग–प्रसाद लगाया गया। फिर क्रम से स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज, स्वामी हरिदासराम जी महाराज एवं स्वामी गंगाराम जी, स्वामी मुरलीधर जी, स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज के श्रीविग्रहों को माल्यार्पण वस्त्रालंकार एवं इत्र एवं भोग प्रसाद लगाया गया मंत्र उच्चारण सहित।

तत्पश्चात सुबह 8 बजे से 10 बजे तक सुबह का सत्संग रखा गया सुबह के सत्संग में स्वामी जी ने बताया कि

मात गर्भ में तुम किया हरि से जो इकरार।
कहे टेऊं तिंह याद कर सुमरे सृजनहार।।

ईश्वर को पहचानने की शक्ति इंसान के पास है पशुपक्षियों के पास नहीं, आहार निद्रा भोग, विषय ये चारों बातें पशु पक्षी और इन्सान सभी में होती है।

परन्तु परमात्मा को प्राप्त करने की शक्ति सिर्फ मनुष्य के पास है। तत्पश्चात इन्दौर के सिन्धी साधु भेखमण्डल के संतों का भोजन हुआ। शाम को सत्संग 4 बजे से 7 बजे तक रखा गया। पहले महिलाऐं फिर आगन्तुक संत फिर स्वामी जी ने वचनों की अमृत वर्खा में बतलाया कि–**"कहे टेऊँ संसार में बात यही है सार, भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार"** स्वामी जी ने कहा कि ऐसा धन इकट्ठा करें जो कि लोक परलोक दोनों में काम आवे नाम रूपी धन को इकट्ठा करें।

10 मई 2002 को सत्संग प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक जारी रहा। श्रीमद्भगवतगीता एवं प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का भोग फिर आम भंडारा विशाल रूप से रहा सभी ने अमृत भोजन ग्रहण किया। तत्पश्चात शाम का सत्संग 4 से 7 बजे तक पल्लव के साथ वर्सी–उत्सव की पूर्णाहुति के साथ संपन्न हुआ। शहनाई वादक ने जब शहनाई छेड़ी तो सत्संग प्रांगण ब्रजभूमि बन गया गोप–गोपांगनाए मानों भगवान कृष्ण के समक्ष नृत्य करती प्रतीत हो रही थी। संत शंभूलाल संत हरिओमलाल सहित सभी प्रेम प्रकाशी सेवक सेविकाऐं नृत्य के आनंद में निमग्न हो गए। दिनांक 11 मई 2002 को प्रातः 6 बजे स्वामी जी ने सन्त मंडली सहित रतलाम को प्रस्थान किया। इस पूरे महोत्सव में संत शंभूलाल के निर्देशन में प्रेम प्रकाश नवयुवक मंडल एवं प्रेम प्रकाश मंडली का सराहनीय योगदान रहा।

–निर्मल प्रेम प्रकाशी, इंदौर से

इन्दौर में सम्पन्न वर्सी–उत्सव

इन्दौर–काट्जू कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज की असीम कृपा से परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के तत्वावधान में इन्दौर में स्वामी मुरलीधर महाराज, स्वामी गंगाराम महाराज, स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज की वार्षिक वर्सी मनाई गयी।

6 मई प्रथम दिन दिनांक 6 मई को रेल्वे स्टेशन पर स्वामी जी के आगमन का दृश्य देखते ही बनता था प्रेमियों की भीड़ के बीच स्वामी जी तारों के बीच चन्द्रमा की भांति सुशोभित थे।

तपती इन्दौर नगरी एवं सूर्यनारायण का प्रचण्ड वेग भी मानों स्वामी जी के आगमन के कारण शीतलता और आनंद की लहर बरसा रहा था।

स्वामी जी के आगमन पर आश्रम में समस्त प्रेमियों ने पुष्प–वर्षा एवं करतल ध्वनि से अत्यंत हर्षित होकर भाव विभोरता से हार्दिक स्वागत किया। इसके पश्चात यज्ञ (हवन) प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी कराया गया जो कि स्वयं स्वामी जी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

हवन के पश्चात झंडावंदन की बात भी न्यारी थी सभी प्रसन्नचित्त होकर **"हम गीत सनातन गायेंगे नित झंडा धर्म झुलायेंगे"** के गगनभेदी नाद से गूंज उठी प्रेमी नाच गान कर रहे थे कुछ और कुछ प्रेमी नारियल मिश्री का प्रसाद चढ़ा रहे थे। स्वामी टेऊंराम जी महाराज की जयघोष से गुंजायमान था। तथा शहनाई वादन ने शहनाई छेड़ी तो प्रेमियों के पांव नाचने–थिरकने लगे।

परम पूज्य स्वामी जी से आशीर्वाद लेकर संत शंभूलाल ने ध्वजा स्थापित किया। सांयकाल 4 बजे से 7 बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रखा गया प्रथम महिलाओं ने स्वामी जी के स्वागत के भजन गाए तत्पश्चात अन्य संतों ने सत्संग किया फिर स्वामी जी ने अपने प्रवचन में "मनुष्य जन्म की दुर्लभता ओर नाम जप की महत्वता का वर्णन किया एवं बतलाया कि असार संसार में प्रभु भक्ति ही सार है"

7 मई 2002 को प्रातःकाल 8 बजे से 10 बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। पहले अन्य आए हुये सन्तों ने प्रवचन किये। फिर स्वामी जी ने अपने प्रवचन में बतलाया कि **"पूरब पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार कहे टेऊं तिहं सफल कर सुमरो सृजणहार"** भगवान ने आप पर कृपा की मनुष्य की देह मिली पहले तू जानवर या पशुपक्षी की योनियों में था अब भगवान ने तुझको आजाद कर दिया साथ–साथ तुझे उस माया को भी दिया है परन्तु उस माया से दूर रहना संसार रूपी सागर से पार होना है।

इसके उपरान्त स्वामी जी ने 10 बजे से 12 बजे तक द्वारिकापुरी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्संग किया।

इन्दौर प्रेम प्रकाश आश्रम, द्वारिकापुरी

7 मई मंगलवार, सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज मंडली सहित द्वारिकापुरी प्रेम प्रकाश आश्रम पर पधारे। यहां के व्यवस्थापक सन्त नरेशलाल प्रेम प्रकाशी के नेतृत्व में स्वामी टेऊंराम नवयुवक मण्डल व स्वामी टेऊंराम महिला मंडली द्वारा पूज्य स्वामी जी व सन्तमण्डली का प्रेम पूर्वक भव्य स्वागत किया गया। सत्गुरु महाराज ने अपने सारगर्भित प्रवचनों में **"तुहिंजीं दरबार ॾिठम ॾेह सॼे खां न्यारी"** भजन से संगत को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रेम प्रकाशी झंडा वन्दन पश्चात् प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहिब के भोग साहिब व आमभण्डारा कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सत्गुरु महाराज जी ने इस अवसर पर अपने कर कमलों से स्वामी टेऊंराम नवयुवक मण्डल व स्वामी टेऊंराम महिला मण्डली के सदस्यों को उनके योगदान के लिए ट्राफियां (शील्ड) वितरित की। आश्रम परिवार द्वारा हर महीने अनाथाश्रम, पागलखाने, गूंगे बहरे, नेत्रहीन आदि संस्थाओं में जाकर अपने हाथों से भोजन बनाकर, अपने हाथों से खिलाकर आते हैं। अन्त में सभी सन्तों ने प्रेमपूर्वक भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया।

पुनः क्रम से शाम को 4 से 7 बजे तक सत्संग रखा गया पहले महिलाओं द्वारा भजन गाए गए तथा आगन्तुक संतों ने सत्संग किया तत्पश्चात स्वामी जी ने अपनी अमृतवाणी में बतलाया कि

"सदगुरु की कृपा बिना भवसिन्धु तरे न कोई
कहे टेऊं गुरुशरण ले जे भव तरना होई।

सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज वचन वरखा में कहते हैं कि सद्गुरु के सिवाए कोई मनुष्य इस संसार से पार नहीं उतर सकता संसार से पार जाने के लिये काबिल सद्गुरु की नितान्त आवश्यकता है। बड़े से बड़ा डर है माता के गर्भ से बार–बार जन्म लेना वह भय दूर होगा प्रार्थना से एवं पुरुषार्थ से दोनों साधनों से। दिनांक 8 मई 2002 को प्रातःकाल 5 बजे प्रभातफेरी निकाली गयी एवं 8 से 10 बजे सत्संग अनवरत चलता रहा। प्रातःकाल के सत्संग में स्वामी जी ने बताया कि जो कुछ दिख रहा है सपना है स्वप्न की निशानी है कि थोड़ी देर के लिये भासित हो भगवान कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं कि मेरे और तुम्हारे एक जन्म नहीं कई जन्म हो चुके हैं आगे भी कई होंगे यह सब स्वप्न में हो रहा है।

तत्पश्चात अखंडधाम वालों सन्तों का भजन भंडारा हुआ उसके बाद 4 बजे से 7 बजे तक पुनः शाम को सत्संग सुमन स्वामी जी एवं अन्य संतों ने बरसाए। शाम के सत्संग में स्वामी जी के मुखारबिन्दु से निम्न वचन थे कि परमात्मा उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं बंधन तो बहुत आते हैं उन विघ्नों को काटना ही हमारा काम है। सुख के साधन बहुत मिले पर सुख नहीं मिला। मन कहता है कि संसार से सुख चाहिए पर सुख संसार से मिलने वाला नहीं है सुख है संतों की संगति में जिसे सुख की चाह है वह संतों के संग से अपने लक्ष्य प्रभु परमात्मा की ओर कदम बढ़ाए।

9 मई 2002 को प्रातःकाल 7 बजे मूर्तियों (श्री विग्रह) का पूजन स्वामी जी ने अपने कर कमलों, द्वारा किया प्रथम स्वामी जी ने भगवान श्री लक्ष्मीनारायण के श्रीविग्रहों को वस्त्रालंकार से सुशोभित कर इत्र का छिड़काव किया। प्रसाद–भोग लगाया। संत शम्भूलाल, संत हरिओमलाल जी मंत्रोच्चारण कर रहे थे तत्पश्चात् सद्गुरु टेऊंराम जी महाराज के श्री विग्रह को वस्त्रालंकार एवं इत्र–छिड़काव एवं भोग–प्रसाद लगाया गया। फिर क्रम से स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज, स्वामी हरिदासराम जी महाराज एवं स्वामी गंगाराम जी, स्वामी मुरलीधर जी, स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज के श्रीविग्रहों को माल्यार्पण वस्त्रालंकार एवं इत्र एवं भोग प्रसाद लगाया गया मंत्र उच्चारण सहित।

तत्पश्चात सुबह 8 बजे से 10 बजे तक सुबह का सत्संग रखा गया सुबह के सत्संग में स्वामी जी ने बताया कि

मात गर्भ में तुम किया हरि से जो इकरार।
कहे टेऊं तिंह याद कर सुमरे सृजनहार।।

ईश्वर को पहचानने की शक्ति इंसान के पास है पशुपक्षियों के पास नहीं, आहार निद्रा भोग, विषय ये चारों बातें पशु पक्षी और इन्सान सभी में होती है।

परन्तु परमात्मा को प्राप्त करने की शक्ति सिर्फ मनुष्य के पास है। तत्पश्चात इन्दौर के सिन्धी साधु भेखमण्डल के संतों का भोजन हुआ। शाम को सत्संग 4 बजे से 7 बजे तक रखा गया। पहले महिलाऐं फिर आगन्तुक संत फिर स्वामी जी ने वचनों की अमृत वर्खा में बतलाया कि–**"कहे टेऊँ संसार में बात यही है सार, भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार"** स्वामी जी ने कहा कि ऐसा धन इकट्ठा करें जो कि लोक परलोक दोनों में काम आवे नाम रूपी धन को इकट्ठा करें।

10 मई 2002 को सत्संग प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक जारी रहा। श्रीमद्भगवतगीता एवं प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का भोग फिर आम भंडारा विशाल रूप से रहा सभी ने अमृत भोजन ग्रहण किया। तत्पश्चात शाम का सत्संग 4 से 7 बजे तक पल्लव के साथ वर्सी–उत्सव की पूर्णाहुति के साथ संपन्न हुआ। शहनाई वादक ने जब शहनाई छेड़ी तो सत्संग प्रांगण ब्रजभूमि बन गया गोप–गोपांगनाए मानों भगवान कृष्ण के समक्ष नृत्य करती प्रतीत हो रही थी। संत शंभूलाल संत हरिओमलाल सहित सभी प्रेम प्रकाशी सेवक सेविकाऐं नृत्य के आनंद में निमग्न हो गए। दिनांक 11 मई 2002 को प्रातः 6 बजे स्वामी जी ने सन्त मंडली सहित रतलाम को प्रस्थान किया। इस पूरे महोत्सव में संत शंभूलाल के निर्देशन में प्रेम प्रकाश नवयुवक मंडल एवं प्रेम प्रकाश मंडली का सराहनीय योगदान रहा।

–निर्मल प्रेम प्रकाशी, इंदौर से

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के शिष्य

स्वामी जीवन मुक्त जी महाराज का

२३ वाँ वर्सी-उत्सव व प्रेम प्रकाश आश्रम का

वार्षिकोत्सव

खैरथल में

22 व 23 जून 2002

कार्यक्रम

22 जून, शनिवार 2002

सत्संग प्रातः 7 से 9 हवन प्रातः 9 बजे
ध्वजावंदन प्रातः 10 बजे
भण्डारा दोपहर 11 बजे
शोभायात्रा सांय 4 बजे
सत्संग सांय 7 से 10 बजे तक

23 जून, रविवार 2002

सत्संग प्रातः 7 से 10 बजे तक
भण्डारा दोपहर 11 बजे
सत्संग सांय 4 से 7 बजे
सत्संग रात्रि 9 से प्रातः 6 बजे तक

उत्सव समापन

24 जून सोमवार प्रातः 7 बजे पल्लव व प्रसाद वितरण

शोभायात्रा का मार्ग

प्रेम प्रकाश आश्रम से अनाज मण्डी, रेल्वे फाटक, चालीस फुटा रोड, सिन्धी कॉलोनी, लाल मन्दिर, सब्जी मण्डी से पुनः प्रेम प्रकाश आश्रम पर समापन

सेवा में :
संत मुरलीधर प्रेम प्रकाशी
एवं पूज्य पंचायत खैरथल

स्थान
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम (डिब) टीले के ऊपर, खैरथल (अलवर) फोन : 01460–22737

अहमदनगर में

5–6–7 जुलाई 2002

कार्यक्रम

5 जुलाई 2002 शुक्रवार

हवन सुबह 8 बजे से
ध्वजारोहण सुबह 11 बजे
सत्संग शाम 5 से 9 बजे तक

6 जुलाई 2002 शनिवार

सुबह 9 से 11 व
शाम 5 से 9 बजे सत्संग
सभी संतों की उपस्थिति में

रविवार 7 जुलाई 2002 सुबह 10 बजे

श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब का भोग साहब तथा सत्संग और दोपहर 1 बजे आम भंडारा (महाप्रसाद) शाम 5 से 8 बजे सत्संग प्रवचन व पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति

शुभ स्थल

श्री स्वामी टेऊँराम मंदिर
प्रेम प्रकाश आश्रम, मालीवाड़ा,
अहमदनगर फोन : 0241–323397

सेवा में :
दास मुरलीप्रकाश जी व स्वामी टेऊँराम मंदिर ट्रस्ट अहमदनगर

प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर (महिला मंडली) में वार्षिकोत्सव

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी शान्ती प्रकाश एवं स्वामी हरिदासराम जी के सानिध्य में स्थापित प्रेम प्रकाश आश्रम (महिला मंडली) दादी सती की दरबार के 5 दिवसीय वार्षिकोत्सव पर दिनांक 3–4–2002 को अमरापुर जयपुर से पधारे संत मोनू प्रेम प्रकाशी संत मुरलीधर प्रेम प्रकाशी, संत नरेशकुमार (इंदौर), शंकर–महेन्द्र प्रेम प्रकाशी एवं भगत मूलचन्द का दादी सती एवं ब्यावर शहर के प्रेम प्रकाश आश्रम के ट्रस्टी दादा सुन्दरदास, ऊधवदास नानकराम एवं अनेक प्रेमियों ने स्वागत किया। इस अवसर पर संत मोनूराम प्रेम प्रकाशी ने सद्‌गुरु महाराज स्वामी टेऊंराम जी के गुणों एवं उनके द्वारा बतलाये गये सत्संग अमृतवाणी को प्रेमियों को बतलाते हुए अपनी अमृतवाणी में बतलाया कि–

दोहा–संतराम में भेद नहीं संत राम स्वरूप
कहे टेऊं रट राम को भये राम के रूप

सत्यमार्गी संत राम में भेद नहीं करते हैं। संत सदा ही परमात्मा का सुमरन करते हुए परमात्मा के स्वरूप में विलीन होकर परमात्मा के स्वरूप हो जाते हैं। उन संतों में परोपकारी, आत्मज्ञान की भावना जागृत हो जाती है और उसी सत्मार्ग पर हमें चलने का उपदेश देते हैं।

भजन–

1. **चरण कमल तेरे धोये धोये पीयां सद्‌गुरु दीनदयाला..**
2. **सद्‌गुरु मुझ को दान दे प्रेम भक्ति विश्वास**
   कहे टेऊं नित सुमति दे संतन मांहि निवास

संत मोनूराम ने आगे सद्‌गुरु महाराज के गुणों का वर्णन कर बतलाया कि सद्‌गुरु हमारा मन चंचल है इसे हमें परमात्मा का नाम सुमरन कर नियन्त्रित करना चाहिये। मन का उल्टा नम है अर्थात हमें अपना मन नियन्त्रित कर उसे नम्र बनाकर परमात्मा का नाम जपकर परमात्मा में ही लगाना चाहिये। ऐसा सद्‌गुरु महाराज के बतलाये गये दिव्यज्ञान द्वारा ही सम्भव है। अतः हमें अपने सद्‌गुरु महाराज के चरणों की शरण में जाकर प्रभु परमात्मा के दर्शन करने चाहिये। सद्‌गुरु महाराज से हमेशा नामदान लेकर उसमें विश्वास श्रद्धा रखकर भक्ति एवं आत्मज्ञान की प्राप्ति करना चाहिये। अतः जो संतों के पाठ श्रद्धा रखकर उनकी शरण में आते हैं संत महात्मा अपने ज्ञान से उन्हें प्रभु परमात्मा तक पहुंचाने की राह दिखाते है। सद्‌गुरु महाराज के गुणों एवं महिमा का गुणगान करते हुए संत मोनूराम प्रेम प्रकाशी एवं संत मंडली प्रेमियों ने पाठ साहब का भोग लगाकर पल्लव पाकर वार्षिकोत्सव को सम्पन्न किया। इस सत्संग का लाभ ब्यावर शहर एवं आसपास के शहरों से आये प्रेमियों ने लिया एवं संतों के दर्शन पाकर अपने को लाभान्वित किया।

–मोहन शिवनानी,(अजमेर) ब्यावर से

चीन में भी सत्संग सरिता

इसी वर्ष के शुभारम्भ मास जनवरी 2002 में विश्व के सर्वाधिक आबादी वाले देश चीन में भी प्रेम प्रकाश मण्डल का दिव्य सत्संग समारोह धीरज–सीमा के निवास स्थान **गुअंगजाओ** नामक शहर में सन्त नामदेव जी महाराज (प्रेम प्रकाश मंदिर–कॉवलान–हाँगकांग) के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें 100 से अधिक प्रेमी सम्मिलित हुए। 20 जनवरी रविवार को चीन के समयानुसार रात्रि 8 से 9 बजे तक आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज के वटवृक्ष की शाखायें चीन तक भी जा पहुंचीं।

भीलवाड़ा क्षेत्र के लिये नया प्रतिनिधि नियुक्त

श्री सुरेन्द्र कुमार पुत्र श्री सुन्दरदास मोरवानी, रामा फुटवियर, सेशन कोर्ट रोड, भीलवाड़ा फोन : 21624, 40620 को भीलवाड़ा क्षेत्र के लिये प्रेम प्रकाश संदेश का सेवाधारी नियुक्त किया गया है।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

12 मई से 17 मई	2002	तक	दिल्ली	011-3969774, 2942126
20 जून से 23 जून	2002	तक	खैरथल	01460-22737
24 जून से 28 जून	2002	तक	दिल्ली-हरिद्वार	011-3969774,0133-460144
28 जून मध्यरात्रि	2002	को	इंदिरागांधी अंतर्राष्ट्रीय विमानतल से अमेरिका रवाना	
29 जून से 30 जून	2002	तक	न्यूयार्क	001718-9877393
	न्यूयार्क में 30जून को प्रातः निर्माणाधीन प्रेमप्रकाश मंदिर का भूमिपूजन			
01 से 04 जुलाई	2002	तक	लॉस एंजिल्स	001818-3663380
05 से 07 जुलाई	2002	तक	फ्रीमोन्ट	0015105-731100
08 से 12 जुलाई	2002	तक	बेलजी	00150161-52743
13 से 16 जुलाई	2002	तक	पलामा	0015076-460772
17 से 21 जुलाई	2002	तक	जमैका	0018769-533152
22 से 23 जुलाई	2002	तक	टैम्पा	0018139-268946
24 से 28 जुलाई	2002	तक	न्यूयार्क	0017189-877393
28 जुलाई से 03 अगस्त	2002	तक	न्यूजर्सी	0016092-752844
04 अगस्त	2002	तक	मलागा (स्पेन)	
05 से 07 अगस्त	2002	तक	स्यूटा	003495-6517722
08 से 10 अगस्त	2002	तक	मलागा	
11 से 23 अगस्त	2002	तक	लासपालमास साउथ	0034928-469771
24 से 25 अगस्त	2002	तक	फुरतेविन्तुरा	0034928-531898
26 से 27 अगस्त	2002	तक	लैजोर्ट	
28 अगस्त से 4 सितम्बर	2002	तक	तनरीफ	0034922-246002, 241089
05 से 06 सितम्बर	2002	तक	लॉसपालमास	0034928-469771
07 से 09 सितम्बर	2002	तक	मैड्रिड	003491-4047510
10 सितम्बर	2002	तक	दिल्ली	011-3969774

तीज-त्यौहार

20	जून	2002	गुरुवार	श्री गंगा दशहरा
21	जून	2002	शुक्रवार	श्री निर्जला एकादशी व्रत
24	जून	2002	सोमवार	श्री सत्यनारायण व्रत
28	जून	2002	शुक्रवार	श्री गणेश चौथ व्रत
06	जुलाई	2002	शनिवार	श्री योगिनी एकादशी व्रत
10	जुलाई	2002	बुधवार	अमावस्या
11	जुलाई	2002	गुरुवार	चन्द्र दर्शन, मंगलमूर्ति आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊंराम जन्मोत्सव शुरू (सभी स्थानों पर)
12	जुलाई	2002	शुक्रवार	भगवान जगन्नाथ रथयात्रा (पुरी)
15	जुलाई	2002	सोमवार	चौथ, आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊंराम अवतरण दिवस, जन्मोत्सव संपन्न (समस्त स्थानों पर)
16	जुलाई	2002	मंगलवार	संक्रान्ति
20	जुलाई	2002	शनिवार	देवशयनी एकादशी व्रत
24	जुलाई	2002	बुधवार	श्री सत्यनारायण व्रत, श्री गुरुपूर्णिमा, गुरुपूजा दिवस, (प्रमुख कार्यक्रम, अमरापुर धाम, जयपुर में)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आयोजित

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सभी शहरों के भक्तजनों के लिये प्रतियोगिता

सद्गुरू टेऊँराम जीवन दर्शन

निबन्ध प्रतियोगिता

सभी शहरो के भक्तजनों के लिये "सद्गुरू टेऊँराम जीवन दर्शन निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी है। इस प्रतियोगिता में आपको पूज्य आचार्य श्री "सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज" का जीवन चरितामृत (सम्पूर्ण चारों भाग, दो पुस्तक) पढ़कर उसे संक्षिप्त रूप (१००० शब्दों) में उत्कर्ष भाषा, निबन्धात्मक शैली व सुन्दर लिखावट में २५ जून २००२ तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर में अपने नाम, आयु, पूर्ण पते के साथ व्यक्तिगत, डाक अथवा कोरियर द्वारा लिखकर भेजना है।

नियम

- इस प्रतियोगिता में किसी भी शहर, जातिवर्ग अथवा आयुवर्ग के भक्तजन भाग ले सकते हैं।
- निबन्ध में कम से कम १००० शब्दों (रजिस्टर के ११ पन्ने) का होना अनिवार्य है।
- निबन्धात्मक भाषा शैली व सुन्दर लिखावट का विशेष ध्यान दें।
- सभी निबन्ध हमें २५ जून २००२ से पूर्व तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर में व्यक्तिगत, डाक अथवा कोरियर द्वारा लिखकर भिजवा देवें।
- **निबन्ध १०० नम्बर का होगा। कम से कम ६० प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को ही पुरस्कार दिया जायेगा।**
- प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय–तृतीय व १०१ सात्वंना पुरस्कार दिये जायेगें।

नोट : आचार्य श्री का जीवन चरितामृत (संपूर्ण चारों भाग, २ पुस्तकों में) १२५/– रूपये में श्री अमरापुर स्थान जयपुर के बुक स्टाल अथवा सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों से प्राप्त किया जा सकता है।

卐 卐

निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि
25 जून, 2002

प्रतियोगिता परिणाम
12 जुलाई, 2002

सभी पुरस्कृत प्रतियोगियो के नाम प्रेम प्रकाश संदेश के अगस्त 2002 अंक में प्रकाशित किये जायेगें।

पुरस्कार वितरण
15 जुलाई, 2002

सद्गुरू टेऊँराम जन्मोत्सव

11 से 15 जुलाई 2002

: निबन्ध भेजने का पता :

सद्गुरू टेऊँराम जीवन दर्शन-निबन्ध प्रतियोगिता श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड़, जयपुर-१ राज.
फोन : ३७२४२३, ३७२४२४

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161 (R.M.S. Posting date

भा.शा.रजि.–29/18/81-II

अमरापुर स्थान, जयपुर द्वारा आयोजित

सभी बच्चों के लिये

चालीसा स्मरण प्रतियोगिता

(सद्गुरू टेऊँराम चालीसा पुस्तक)

1. इस प्रतियोगिता में 15 वर्ष तक के बच्चे भाग ले सकते है।
2. प्रतियोगिता में "सद्गुरू टेऊँराम चालीसा" याद करके 25 जून, 2002 तक अमरापुर स्थान पर सुनानी हैं।
3. प्रतियोगिता में भाग लेने वालों को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार एंव सभी को सांत्वना पुरस्कार दिये जायेंगें।
4. याद करने के लिये "सद्गुरू टेऊँराम चालीसा" की पुस्तक 1/–रूपये में अमरापुर स्थान, जयपुर के बुक स्टाल से प्राप्त

चालीसा को आस-पास के क्षेत्र व पड़ौस में 21 बच्चों को याद करवाने वाले पुरुषार्थी, भक्तजनों को भी "विशेष पुरस्कार" से सम्मानित किया ज

सुनाने की अन्तिम तिथि	प्रतियोगिता परिणाम	पुरस्कार वितरण
25 जून 2002	12 जुलाई 2002	15 जुलाई 2

सद्गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव

11 से 15 जुलाई 2002

सम्पादक शंकरलाल सबनानी, फोन : 327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 454183,
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी कम्प्यूटर लाला का बाजार, फोन : 427502 से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया।

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए। – व्यवस्थापक

RH_4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

श्रीमान, सदस्यता क्रं.

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी